● वर्ष-3
● अंक-66
रायपुर, गुरुवार
26 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

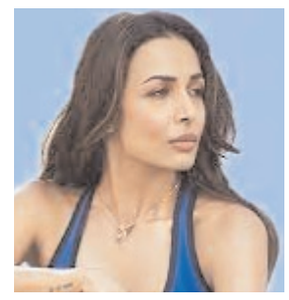

पेज-6›› बिना फिल्म किए करोड़ों कमाती...

एनसीईआरटी की किताबों में इंडिया बना भारत

किताब में हिंदू योद्धाओं की कहानियों के सुझाव पर सियासत

नईदिल्ली। एनसीईआरटी की किताबों में अब इंडिया की जगह भारत का जिक्र होने का दावा किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि एनसीईआरटी की एक कमेटी ने न सिर्फ इंडिया की जगह भारत लिखने की सिफारिश की है, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने की अनुशंसा की है। अब एनसीईआरटी की किताबों में इंडिया की जगह भारत होगा या नहीं इसे लेकर सियासत जरूर होने लगी है। कांग्रेस पार्टी ने जहां इसे भारतीय जनता पार्टी की ओर से शिक्षा में सियासत करने का आरोप लगाया है। वहीं कई शिक्षाविदों का कहना है कि अगर शिक्षा प्रणाली को और बेहतर करने के साथ-साथ अगर नाम में भी बदलाव होता है, तो उनको कोई आपत्ति नहीं है। क्योंकि इंडिया और भारत आखिर दोनों एक ही है।

एनसीईआरटी की किताबों में इंडिया की जगह भारत का नाम किए जाने को लेकर सियासत अभी से शुरू हो गई है। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अखिलेश सिंह कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी सिर्फ सियासत के मकसद से इस तरीके की अफवाहों और कुतर्कों के माध्यम से अपनी बात को आगे रखने की सियासत कर रही है। अखिलेश सिंह कहते हैं कि केंद्र सरकार को अगर इंडिया के नाम से इतनी ही आपत्ति है, तो हर

जगह इंडिया बदल दिया जाना चाहिए। केंद्र सरकार के इशारे पर चलने वाले सरकारी महकमे भी उन्हीं की भाषा में बात कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अखिलेश सिंह कहते हैं कि सिर्फ विवादों को जन्म देना ही भारतीय जनता पार्टी की आदत है, उसी को आगे करने की तैयारी में है।

इंडिया की जगह पर भारत का नाम किए जाने को लेकर अलग-अलग शिक्षाविदों के भी अपने तर्क हैं। नेशनल स्किल एंड एजुकेशन ट्रस्ट की सुनंदा मालवीय कहती हैं कि अगर नाम बदलने के साथ-साथ बच्चों की पढ़ाई की गुणवत्ता को भी और बेहतर तरीके से निखारा जा सकता है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। उनका कहना है कि इंडिया और भारत तो दोनों एक ही हैं। ऐसे में चाहे किताबों में इंडिया पढ़ाया जाए या भारत, कोई विशेष फर्क नहीं पड़ने वाला। हालांकि सुनंदा का कहना है कि अगर एनसीईआरटी की किसी कमेटी को एजुकेशन की इस दिशा में रिफॉर्म करने की जरूरत है, तो वह सबसे ज्यादा स्कूली बच्चों के बैग के बोझ को कम करने की है। उनका कहना है कि आप किसी भी प्रणाली से बच्चों की पढ़ाई कराएं, लेकिन बच्चों के स्कूलों के बैग का वजन कम करने की कोई नीति और प्रणाली ही नहीं बन रही है।

इसी तरह इंडिया एजुकेशन सिस्टम एंड रिफॉर्म्स (आईईएसआर) के संयोजक ऋषि तनेजा कहते हैं कि अगर एनसीईआरटी की किताबों से इंडिया की जगह पर भारत का नाम लिखे जाने के प्रस्ताव की मंजूरी मिलती है, तो निश्चित तौर पर यह एक बड़ा प्रभावी कदम हो सकता है। वह कहते हैं कि स्कूलों में शुरुआती दौर से अगर बच्चों को इंडिया की जगह पर भारत शब्द का इस्तेमाल करना सिखाएंगे तो धीरे-धीरे वह भारत ही संबोधन में लाना शुरू कर देंगे। हालांकि उनका कहना है कि इसको सियासी नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए। वह सुझाव देते हैं कि जहां-जहां पर सिर्फ इंडिया का जिक्र है, वहां पर भारत का भी इस्तेमाल होना चाहिए। चूंकि संवैधानिक रूप से भारत और इंडिया दोनों एक ही हैं, इसलिए किसी एक नाम को रिप्लेसमेंट के तौर पर इसको नहीं देखा जाना चाहिए।

क्या बोले कर्नाटक के डिप्टी सीएम?

कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, %हम रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस और इंडियन फॉरेन सर्विसेज क्यों कह रहे हैं? हमारे पासपोर्ट में रिपब्लिक ऑफ इंडिया है... मुझे लगता है कि इस सरकार के साथ कुछ गलत हुआ है वे भारतीयों के दिमाग को भ्रमित क्यों कर रहे हैं? उन्होंने जो भी रुख अपनाया है वह पूरी तरह से जनविरोधी है, इंडिया विरोधी, भारत विरोधी है. मैं आपको बता रहा हूं कि उन्हें (एनसीईआरटी) एनडीए सरकार द्वारा मजबूर किया गया है। ये बिल्कुल गलत है। आप इंडिया का इतिहास नहीं बदल सकते। कर्नाटक में जो पहले था वही जारी रहेगा।

गठबंधन अगर अपना नाम भारत कर ले तो वे क्या करेंगे?

स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में इंडिया की जगह भारत करने की एनसीईआरटी पैनल की सिफारिश पर राजद सांसद मनोज झा ने भी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, %इंडिया गठबंधन के जन्म के बाद से, बीजेपी नेताओं की ओर से कई प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। वे समझ नहीं पा रहे हैं कि भारत गठबंधन पर कैसे हमला किया जाए। मेरा मानना है कि यह एक उन्मादी प्रतिक्रिया है। अब एनसीईआरटी यह कर रहा है। आप अनुच्छेद 1 के साथ क्या करेंगे जो कहता है कि इंडिया दैट इज भारत। मैं समझ नहीं पा रहा हूं इनमें से किसी का भी अर्थ। अगर इंडिया गठबंधन अपना नाम बदलकर भारत कर लेता है, तो वे क्या करेंगे?

केसी वेणुगोपाल ने कही ये बात

इस मुद्दे पर कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि वे बहुत सी चीजें सुझा रहे हैं। आप देख सकते हैं कि वे पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम के माध्यम से भारत के इतिहास को कैसे विकृत कर रहे हैं। मुझे इंडिया-भारत वाली बात नहीं पता थी। हमारे लिए इंडिया और भारत बराबर हैं।

डीएमके नेता टीकेएस एलंगोवन ने मोदी सरकार पर लगाए आरोप

वहीं, डीएमके नेता टीकेएस एलंगोवन का कहना है, सरकार केवल इसलिए नाम बदल रही है क्योंकि विपक्षी गठबंधन ने अपने गठबंधन का नाम इंडिया रखा था। यह भारत भी नहीं है। मोदी सरकार के दिमाग में घटिया और अतार्किक बातें हैं।यह डर के कारण है। एनसीईआरटी संविधान में संशोधन किए बिना ऐसा कैसे कर सकता है?

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को

लखनऊ। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की तारीख तय हो गई है। 22 जनवरी को रामलला नये बने राम मंदिर के गर्भगृह में विराजमान हो जाएंगे। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मौजूद रहेंगे। इसकी जानकारी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने दी।महासचिव चंपत राय ने बुधवार को राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा, ट्रस्ट के अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में आने के लिए आमंत्रित किया। जिस पर प्रधानमंत्री मोदी ने सहमति दे दी है। इसके साथ ही प्राण प्रतिष्ठा की तारीख तय हो गई है।प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिए अयोध्या में लगातार तैयारियां की जा रही हैं। बताया जा रहा है कि कार्यक्रम में देश-विदेश से करीब पांच लाख लोग शामिल हो सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इसकी जानकारी सोशल मीडिया साइट एक्स पर देते लिए लिखा कि जय सियाराम!

आज का दिन बहुत भावनाओं से भरा हुआ है। अभी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारी मुझसे मेरे निवास स्थान पर मिलने आए थे। उन्होंने मुझे श्रीराम मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर अयोध्या आने के लिए निमंत्रित किया है। मैं खुद को बहुत धन्य महसूस कर रहा हूं। ये मेरा सौभाग्य है कि अपने जीवनकाल में, मैं इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनूंगा।

मणिपुर पुलिस ने सुरक्षा बलों के साथ 24 अक्टूबर को थौबल, काकचिंग, कांगपोकपी, बिष्णुपुर और चुराचांदपुर जैसे इलाकों को निशाना बनाते हुए अपने तलाशी अभियान में भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया।

तमिलनाडु के राज्यपाल के घर फेंका गया पेट्रोल बम

नईदिल्ली। तमिलनाडु राज्य के राज्यपाल आरएन रवि का आधिकारिक निवास राजभवनके गेट पर पेट्रोल बम फेंकने के आरोप में बुधवार को एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। घटना दोपहर करीब 2:45 बजे हुई, जब कारुका विनोथ नाम के व्यक्ति ने राजभवन के मुख्य द्वार पर पेट्रोल से भरे दो कंटेनर फेंके। पुलिस के अनुसार, विनोथ ने सैदापेट कोर्ट के परिसर में खड़ी मोटरसाइकिलों से पेट्रोल चुराया था, जिसके बाद वह राजभवन की ओर चला गया जहां उसने दो बोतलों में पेट्रोल डाला, उनमें आग लगा दी और मुख्य द्वार पर फेंक दिया। बीजेपी की तरफ से डीएमके सरकार पर सवाल उठाए गए। बता दें कि डीएमके और राज्यपाल के बीच इन दिनों जुबानी जंग जारी है।

देश में एक साथ चुनाव कराने के रोडमैप पर चर्चा

नई दिल्ली । पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक राष्ट्र, एक चुनाव समिति की बैठक संपन्न हुई। इस दौरान केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी (डीपीएपी) के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद भी मौजूद थे। बैठक दिल्ली के जोधपुर हॉस्टल में हुई।जानकारी के मुताबिक, विधि आयोग की अध्यक्ष न्यायमूर्ति रितु राज अवस्थी ने कुछ सदस्यों के साथ देश में एक साथ चुनाव कराने के रोडमैप पर चर्चा के लिए उच्चस्तरीय समिति से मुलाकात की। पैनल ने देश में एक साथ चुनाव कैसे कराए जा सकते हैं? इस पर विचार के लिए विधि

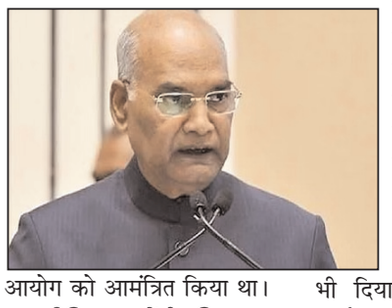

आयोग को आमंत्रित किया था।

राजनीतिक दलों के विचार जानने के लिए प्रक्रिया शुरू

समिति ने हाल ही में अपनी पहली बैठक में राजनीतिक दलों के विचार जानने का फैसला किया था। अब उन्हें देश में एक साथ चुनाव कराने पर उनके विचार जानने के लिए पत्र लिखा गया है। सूत्रों के मुताबिक, पार्टियों से परस्पर सहमत तिथि पर बातचीत करने को कहा गया है। पार्टियों को अगले तीन महीनों में अपने विचार लिखित रूप में भेजने का विकल्प भी दिया गया है।विधि आयोग कार्यकाल को बढ़ाकर या घटाकर सभी विधानसभा चुनावों को एक साथ कराने के फॉर्मूले पर काम कर रहा है, ताकि ये चुनाव 2029 के लोकसभा चुनावों के साथ ही कराए जा सकें।आयोग लोकसभा, विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के लिए एक आम मतदाता सूची सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र भी तैयार कर रहा है, ताकि लागत और जनशक्ति के उपयोग को कम किया जा सके।2029 से राज्य और लोकसभा दोनों चुनाव एक साथ कराने को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न विधानसभा चुनावों को एकसाथ कराने के लिए आयोग विधानसभाओं के कार्यकाल को कम करने या बढ़ाने का सुझाव दे सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र तैयार किया जा रहा है कि एक बार लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ हो जाएं, तो मतदाता दोनों चुनावों के लिए मतदान करने के लिए केवल एक बार मतदान केंद्र पर जाएं।

प्रमुख समाचार

गिरफ्तारी के खिलाफ चंद्रबाबू नायडू की पत्नी दौरे पर निकलीं

नई दिल्ली । आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ जगन मोहन रेड्डी सरकार के एक मंत्री ने एपी कौशल विकास निगम घोटाले के सिलसिले में अपने पति चंद्रबाबू नायडू की अवैध गिरफ्तारी के खिलाफ नारा भुवनेश्वरी की

निजाम गेलावली यात्रा पर हमला किया। युवजन श्रमिका रायथू कांग्रेस पार्टी की मंत्री रोजा सेल्वामणि ने कहा कि अगर सच्चाई सामने आई तो चंद्रबाबू नायडू और उनके परिवार को आजीवन कारावास की सजा हो सकती है।उन्होंने कहा कि हम भी चाहते हैं कि सत्य की जीत हो. अगर सत्य की जीत हुई तो चंद्रबाबू जीवन भर जेल में रहेंगे। संभावना है कि उनके साथ भुवनेश्वरी और लोकेश भी जेल जायेंगे। यात्रा के हिस्से के रूप में नारा भुवनेश्वरी राज्य भर में पूर्व सीएम नायडू की गिरफ्तारी के बारे में सुनकर सदमे से मरने वाले लोगों के परिवारों से मुलाकात करेंगी और उन्हें सांत्वना देंगी। पिता और टीडीपी संस्थापक एनटी रामाराव की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए, भुवनेश्वरी ने अपने दौरे की शुरुआत की। बाद में उन्होंने चंद्रगिरि में ए प्रवीण रेड्डी के परिवार से मुलाकात की, जिनकी 17 अक्टूबर को टीडीपी सुप्रीमो की कथित अन्यायपूर्ण कैद के कारण पीड़ा के कारण मृत्यु हो गई थी।

प्रियंका गांधी के खिलाफ चुनाव आयोग में की शिकायत

नई दिल्ली ।भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने आज चुनाव आयोग से मुलाकात की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कथित मंदिर दान पर उनके बयान के लिए कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के खिलाफ शिकायत दर्ज

कराई। मीडिया से बात करते हुए केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने उनके बयानों को झूठा और असत्यापित बताया और कहा कि इन्हें माफ नहीं किया जा सकता। उन्होंने उन पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया। भाजपा ने एक बयान में कहा कि मोदी ने घोषणाओं से आठ महीने से अधिक समय पहले भीलवाड़ा जिले में एक मंदिर का दौरा किया था और अपनी भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में व्यक्तिगत प्रसाद चढ़ाया था। पार्टी ने कहा कि उनके चढ़ावे की मात्रा सार्वजनिक बहस का विषय नहीं है और इसका चुनाव से कोई लेना-देना नहीं है। केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि आज हम चुनाव आयोग के सामने हैं, 20 अक्टूबर को कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भाषण के दौरान एक बयान दिया और आचार संहिता का उल्लंघन किया। उन्होंने कहा कि हमने श्वष्टद्ब को अभ्यावेदन दिया है, क्या प्रियंका गांधी आचार संहिता से ऊपर हैं।

जजों को करना अनुशासन का पालन होगा : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने न्यायधीशों को सख्त हिदायत दी है। शीर्ष कोर्ट ने कहा है कि न्यायाधीशों को अनुशासन का पालन करना चाहिए। साथ ही किसी भी मामले को तब तक

नहीं लेना चाहिए जब तक कि यह मुख्य न्यायाधीश द्वारा विशेष रूप से न सौंपा गया हो। शीर्ष कोर्ट की न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने राजस्थान हाई कोर्ट द्वारा पारित एक आदेश को चुनौती देने वाली अपील पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। मामले की सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश द्वारा विशेष रूप से नहीं सौंपे गए मामले को उठाने को शीर्ष कोर्ट ने घोर अनुचितता का कार्य बताया। शीर्ष अदालत ने आश्चर्य जताते हुए कि प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) को एक साथ जोड़ने के लिए एक सिविल रिट याचिका पर कैसे विचार किया जा सकता है। दरअसल, राजस्थान हाई कोर्ट ने मई में अपने एक आदेश में निर्देश दिया था कि आठ प्राथमिकियों के संबंध में तीन व्यक्तियों के खिलाफ कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाया जाएगा। इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की गई थी।

चीन तवांग के पास कंबाइंड आर्म्स ब्रिगेड कर रहा तैनात

नई दिल्ली । रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र तवांग का दौरा किया, जहां उन्होंने दशहरा के अवसर पर सैनिकों के साथ शस्त्र पूजा की, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। दशहरे पर सिंह की सीमा क्षेत्र की यात्रा का महत्व महत्वपूर्ण है। पिछले साल दिसंबर में भारतीय बलों ने तवांग सेक्टर के यांग्त्से क्षेत्र में एक चीनी घुसपैठ को सफलतापूर्वक खदेड़ दिया था। इसका श्रेय भारतीय सैनिकों की बेहतर सामरिक तैनाती जैसे कि रिजलाइन पर कब्ज़ा, बेहतर तैयारी, प्रभावी खुफिया जानकारी और क्षेत्र में मौजूदा चौकियों पर हर मौसम में तैनाती को दिया गया। हालाँकि, हालिया वाणिज्यिक उपग्रह इमेजरी से संकेत मिलता है कि चीन ने संभवत: घटना के कुछ महीनों के भीतर त्सोना द्ज़ोंग के लैंपुग में टकराव स्थल के निकट तैनात अपने संयुक्त हथियार ब्रिगेड को ल्होंत्से द्ज़ोंग के रितांग में स्थानांतरित कर दिया था। राजनाथ सिंह के साथ थल सेनाध्यक्ष जनरल मनोज पांडे, जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ पूर्वी कमान लेफ्टिनेंट जनरल आरपी कलिता,जीओसी, 4 कोर लेफ्टिनेंट जनरल मनीष एरी भी थे। क्षा मंत्री को बुम ला से सीमा पार देखी गई पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की कुछ चौकियां भी दिखाई गईं।

खैरागढ़ पुलिस ने की क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर से पूछताछ

रायपुर. राज्य में आचार संहिता लागू है. सीमाओं पर पुलिस की चौकसी तेज हो गई है. आने-जाने वाली सभी गाड़ियों पर पुलिस की पैनी नजर होती है. अंतरराज्यीय सीमा हो या फिर अंतर जिला सीमा पुलिस ने सभी जगहों पर चेकपोस्ट बना रखा है. यही वजह है कि सचिन तेंदुलकर भी इस पूछताछ की जद में आ गए. बताते हैं कि सचिन तेंदुलकर कान्हा किसली जा रहे थे, जाहिर था चौकसी पैनी थी.

खैरागढ़ पुलिस ने उनकी गाड़ी भी रोक दी. सचिन की गाड़ी तीन अलग-अलग चेकपोस्ट पर रोकी गई. पहली बार मोहगांव चेक पोस्ट पर पूछताछ के लिए गाड़ी रोकी गई. इसके बाद साल्हेवारा और आखिरी में खादी चेकपोस्ट पर सचिन की गाड़ी रोकी गई. सचिन तेंदुलकर ने चेकपोस्ट में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को उनकी जांच में पूरा सहयोग किया. जहां-जहां गाड़ी रोकी गई, सचिन बाकायदा पुलिसकर्मियों को सहयोग करते दिखे. अपने चहेते क्रिकेटर को इतने करीब पाकर कुछ पुलिसकर्मी भी खुश नजर आए. सचिन ने कई पुलिसकर्मियों के साथ बाकायदा सेल्फी भी ली.

क्या जाति की राजनीति से कांग्रेस को फायदा होगा

राहुल वर्मा

कांग्रेस को तलाश है एक ऐसे मुद्दे की, जिससे वह बीजेपी की राजनीति को फेल कर सके। उसे लगता है कि सत्ता वापसी के लिए उसे जिस किक की जरूरत है, वह छिपी है ओबीसी वोट बैंक में। तभी तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी, 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी' का राग अलाप रहे हैं। इस सवाल का जवाब तलाशें तो इतिहास के पन्ने कई पहलुओं की ओर इशारा करते हैं। देश के कई हिस्सों में अन्य पिछड़ा वर्ग यानी ओबीसी की संख्या काफी बड़ी है। कहीं-कहीं तो आबादी के आधे से लेकर दो-तिहाई के बीच। ऐसे में चुनावी दल इन्हें लुभाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ने वाले। पिछड़ी जाति की सियासत की पहली और दूसरी लहर के बाद से काफी कुछ बदल गया है। 1960 और 1970 के दशक में लोहियावादी राजनीति की पहली लहर ने ओबीसी आबादी के एक बड़े हिस्से को एकजुट किया। इससे कई क्षेत्रीय पार्टियों का जन्म हुआ।

दूसरी लहर आई साल 1989 में, जब मंडल आयोग की सिफारिशों को मान लिया गया। यहां से नए दलों के उदय के साथ ही पिछड़े वर्ग के गुटों में भी टूट देखी गई। दरअसल, इन दलों ने उन लोगों को एकजुट किया, जो ओबीसी जातियों में गैर-प्रमुख थे। जातीय समीकरण समझने के लिए बीजेपी की साल 2014 के बाद से लगातार जीत की वजहों पर गौर करना

चाहिए। बीजेपी की सिलसिलेवार जीत की वजह सिर्फ उच्च जातियों का एकजुट होना नहीं है। इसमें निचली जातियों, विशेषकर ओबीसी के बीच गहरी पैठ भी एक कारण है। लोकनीति-सीएसडीएस की ओर से आयोजित किए गए नैशनल इलेक्शन स्टडीज (एनईएस) के आंकड़ों के मुताबिक, 2009 और 2019 के बीच बीजेपी का ओबीसी वोट शेयर दोगुना हो गया। 2009 के आम चुनावों में उसे लगभग 20 प्रतिशत ओबीसी वोट मिले थे, जो 2019 में बढ़कर 44 प्रतिशत हो गए। बीजेपी की इस बढ़त का खामियाजा कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय पार्टियों को भुगतना पड़ा।

एनईएस के आंकड़ों में बीजेपी के ओबीसी वोट पैटर्न में जो बदलाव दिखा, वह भी काफी दिलचस्प रहा। साल 2009 से 2014 के बीच बीजेपी को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल निचली जातियों के वोट अधिक मिले, जबकि 2014 से 2019 के बीच ओबीसी की ऊंची जातियों ने बीजेपी को खूब वोट किया। जिन राज्यों में बीजेपी-कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर थी, वहां साल 2009 के बाद से दोनों दलों के बीच ओबीसी वोट का अंतर काफी बढ़ गया। 2004 और 2009 के चुनावों में बीजेपी को लगभग आधे ओबीसी वोट मिले। वहीं, कांग्रेस की झोली में सिर्फ 40 प्रतिशत ओबीसी वोट आए। साल 2014 और 2019 के चुनावों में बीजेपी के लिए ओबीसी वोट बढ़कर लगभग दो-तिहाई हो गया, जबकि कांग्रेस के लिए घटकर रह गया लगभग एक-चौथाई।

शायद इसी घटते ओबीसी समर्थन के चलते कांग्रेस ने जाति जनगणना के मुद्दे पर आक्रामक रुख अपनाने की ठानी है। लेकिन, सवाल यह है कि क्या ऐसा करके कांग्रेस को फायदा होगा? कांग्रेस आजादी के बाद से ओबीसी राजनीति में हाशिये पर रही है। और, ऐसे चुनावी नारों से वह अपने हालात नहीं बदल सकती। इस दिशा में उसे ठोस प्रयास करने होंगे। जो लोग ओबीसी राजनीति का इतिहास जानते हैं, उन्हें याद होगा कि कांग्रेस ने कभी काका कालेलकर आयोग या मंडल आयोग की सिफारिशों पर काम नहीं किया। उस दौर में अधिकांश राज्यों में कांग्रेस के सामाजिक गठबंधन में उच्च जातियां, दलित और मुस्लिम शामिल थे। इस दौरान 1960 के दशक की समाजवादी पार्टियों और बाद में भी समाजवादी विचारधारा की लाइन पर आगे आए दलों ने पिछड़ी जातियों को एकजुट किया।

हालांकि, साल 2006 में कांग्रेस ने पिछड़ी जातियों को लुभाने के लिए एक कोशिश और की थी। तब केंद्र की कांग्रेस सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्री रहे अर्जुन सिंह ने उच्च शैक्षणिक संस्थानों में ओबीसी के लिए आरक्षण बढ़ाकर 27 प्रतिशत कर दिया, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब जब कांग्रेस फिर से ओबीसी वोटरों को लुभाने में जुटी है, तो ऐसा लगता है कि पार्टी कर्नाटक विधानसभा चुनावों में अपनी हालिया सफलता से एक राष्ट्रीय मॉडल तैयार कर रही है। कर्नाटक में भी उसने काफी हद तक पिछड़ी जातियों और गरीबों को लुभाया था। कांग्रेस जातीय राजनीति के आधार पर वापसी की सोच रही है, वहीं बीजेपी के लिए यह चुनौती भरा है। ऐसे में जानना जरूरी हो जाता है।

भरतपुर सोनहत विधायक गुलाब कमरो की 5 साल में बढ़ गई 36 गुना संपत्ति

मनेंद्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। भरतपुर सोनहत विधायक गुलाब कमरो की संपत्ति विधायक बनने के बाद पिछले 5 सालों में 36 गुना बढ़ गई है। 2018 में उनकी संपत्ति 5 लाख 12 हजार रुपये थी। लेकिन अब उनकी संपत्ति करोड़ों में हैं।

इस बात का खुलासा तब हुआ जब गुलाब कमरो ने भरतपुर सोनहत विधानसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन भरा। कमरो ने शपथ पत्र में संपत्ति का ब्योरा दिया। इन पांच सालों में विधायक गुलाब कमरो और परिवार के सदस्यों के नाम पर बैंकों में जमा रकम भी बढ़ी है और उन्होंने जमीनों के साथ जेवर भी खरीदे हैं। शपथ पत्र में उन्होंने करोड़ों की संपत्ति घोषित की है। विधायक गुलाब कमरो ने खुद, पत्नी और बच्चों के नाम पर 1 करोड़ 85 लाख 60 हजार रुपए की संपत्ति घोषित की है। इन 5 सालों में उनकी पत्नी भी पति की विधायकी में गृहिणी से व्यवसायी बन गई हैं। हालांकि विधायक और उनकी पत्नी पर 35.88 लाख रुपये का बैंक लोन भी है। शपथ पत्र के अनुसार गुलाब कमरो के खुद के पास कैश 1.87 लाख रुपए, बैंकों में जमा रकम 38 लाख 10 हजार 924 रुपये है। विधायक ने 7 लाख 50 हजार रुपये बीमा और डाकघर में जमा किया है। पत्नी लीलावती के नाम 10 लाख 10 हजार रुपये बैंकों में जमा है और कैश एक लाख 73 हजार 481 रुपये होना बताया है। उनके नाम मेसर्स पूजा एग्री एंड एलाइड व्यवसाय में 16 लाख 39 हजार रुपये का निवेश बताया गया है। विधायक की बेटी

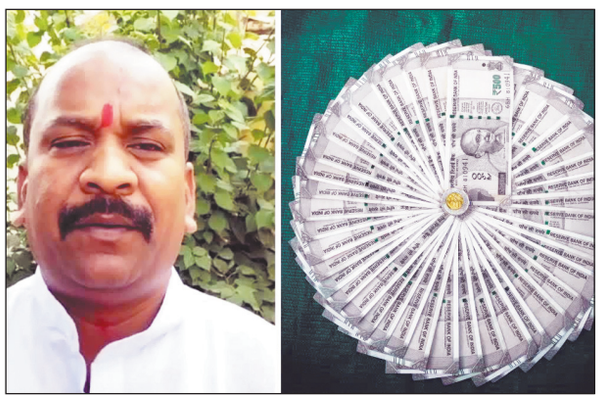

अंजली के नाम बैंक खाते में 5 हजार 900 रुपये और कैश 32,543 रुपये होना बताया गया है। नाबालिग बेटी निशा सिंह के पास कैश 2,458 रुपये और बैंक खाते में सुकन्या योजना के तहत 8,633 रुपए जमा हैं।

विधायक ने एक इनोवा कार खरीदी है, जिसकी कीमत 12 लाख रुपये बताया गया है। विधायक के नाम 65 ग्राम सोना है। पत्नी के नाम पर महिंद्रा ट्रैक्टर और स्कूटी खरीदी गई है। विधायक की पत्नी लीलावती के नाम पर 120 ग्राम सोना है। विधायक के पास कुल चल संपत्ति 63 लाख 70 हजार 255 रुपये, पत्नी की 42 लाख 16 हजार 536 रुपये बताई गई है। गुलाब कमरो ने 2022 में 2 ।938 एकड़ भूमि खरीदी थी, जिसका वर्तमान बाजार मूल्य 9 लाख 62 हजार रुपये बताया गया है। गृह निर्माण मंडल के प्लॉट की बुकिंग के लिए उन्होंने 2 लाख रुपये एडवांस जमा किए हैं। साल 2021 में विधायक ने रायपुर में पक्का मकान लिया है, जिसका वर्तमान बाजार मूल्य उन्होंने 65 लाख रुपए बताया है।इस अवधि में विधायक ने बैंकों से कर्ज भी लिया है, जिसकी अदायगी 35 लाख 1905 रुपए और पत्नी द्वारा 84,426 रुपये बकाया है।

विधायक की पत्नी का बीपीएल कार्ड 15 दिन पहले चर्चा में आ गया था। इसके बाद विधायक ने खुद खाद्य विभाग से बीपीएल राशन कार्ड निरस्त कराया था। उन्होंने कहा कि पहले हम गरीब थे। लेकिन अब हम उस कैटेगिरी से बाहर है।

विधायक गुलाब कमरो 2018 में भी कांग्रेस के प्रत्याशी थे। तब उन्होंने स्वयं और पत्नी लीलावती के नाम से कुल 5.12 लाख रुपए की संपत्ति घोषित की थी। इसमें कैश के साथ पुश्तैनी जमीन का भी मूल्य शामिल था।

भरतपुर सोनहत से सिटिंग एमएलए गुलाब कमरो को कांग्रेस ने टिकट दिया है। भाजपा ने केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह को मैदान में उतारा है। रेणुका सिंह अपने प्रचार के दौरान विवादित बयानों से सुर्खियों में बनी हुई हैं। दूसरे चरण में 17 नवंबर को यहां चुनाव होना है। 3 दिसंबर को मतगणना होगी।

कर्जमाफी की घोषणा से बौखला गई है भाजपा : शैलजा

झूठ फैलाने की कर रही राजनीति

जगदलपुर। विधानसभा चुनाव के पहले चरण में बस्तर संभाग की 12 विधानसभा सीटों के साथ ही प्रदेश के कुल 20 सीटों पर मतदान होने हैं। जिसे लेकर मंगलवार से बस्तर में चुनावी प्रचार प्रसार की शुरुआत हो गई है। कांग्रेस पार्टी भी बस्तर पर विशेष फोकस कर रही है। प्रदेश प्रभारी कुमारी शैलजा चुनावी प्रचार प्रसार की तैयारियों का जायजा लेने बस्तर दौरे में पहुंची।

22 सिटिंग विधायकों की टिकट काटे जाने को लेकर शैलजा कुमारी ने कहा कि आम लोगों की धारणाओं और सर्वे के आधार पर ही टिकट वितरण किया गया है।इस दौरान कुमारी शैलजा ने कांग्रेस सरकार की तारीफ करते हुए बीजेपी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा भारतीय जनता पार्टी झूठ की राजनीति करती है। 15 वर्षों के शासन में छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने कुछ भी नहीं किया। कांग्रेस की घोषणाओं से भाजपा बौखलाई हुई है। बीजेपी की स्थिति दयनीय हो चुकी है। बीजेपी के पास कोई भी चेहरा नहीं है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कर्ज माफी के ऐलान को लेकर कुमारी शैलजा ने कहा कि हमारी सरकार किसान और मजदूरों के हित में फैसला लेती है। हमारे फैसलों से छत्तीसगढ़ प्रदेश के किसान मजदूरों को फायदा होगा। चुनावी प्रचार प्रसार को लेकर कांग्रेस तैयार है और पहले भी कई स्तर पर चुनावी बैठकें हो चुकी है। कांग्रेस का फोकस है कि बूथ स्तर तक पंहुचा जाए और इसके लिए कार्य योजना बनाकर काम किया जा रहा है।

आपको बता दें कि टिकट नहीं मिलने से नाराज कांग्रेसियों ने निर्दलीय फॉर्म भरे हैं। बस्तर संभाग में अंतागढ़ विधानसभा से अनूप नाग ने चुनाव के लिए नामांकन भरा है। ऐसे में कुमारी शैलजा ने कहा कि ऐसी स्थितियां बनने पर रूठों को मनाने का काम होता है। कुछ को मनाया जा रहा है और कुछ मान भी गए हैं।

छत्तीसगढ़ चुनाव में बस्तर विजय से मिलेगी सत्ता की चाबी, आदिवासी वोट बैंक यहां भाग्य विधाता

बस्तर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में सियासी संग्राम छिड़ चुका है। सूबे की सत्ता को हासिल करने के लिए बस्तर संभाग में जीत दर्ज करना जरूरी है। इस बात को राजनीतिक दल भी समझते है। इस संभाग में सबसे ज्यादा निर्णाय भूमिका आदिवासियों की होती है। बिना उनके समर्थन और आशीर्वाद के छत्तीसगढ़ की सत्ता मिलनी मुश्किल है। यही वजह है कि छत्तीसगढ़ चुनाव के पहले फेज में सभी राजनीतिक दल बस्तर को जीतने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं।

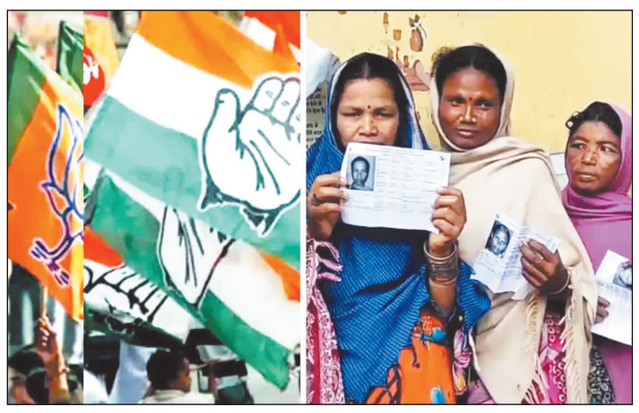

बस्तर संभाग में कुल 12 सीटों में से 11 सीटें एसटी वर्ग के लिए आरक्षित हैं। इन सीटों पर जिस पार्टी को विजय मिलती है। वह चुनावी जंग में बढ़त की ओर होता है। छत्तीसगढ़ के चुनाव में यह ट्रेंड हमेशा कायम रहा है। सिर्फ साल 2013 को छोड़कर हर बार के विधानसभा चुनाव में जिस पार्टी को बस्तर में अच्छी सीटें मिली वह चुनाव में जीत दर्ज कर सका।

बस्तर संभाग के चुनावी इतिहास पर नजर डालें तो यह बात साबित होती है कि जिस पार्टी को ज्यादा सीटें मिली वह सरकार बना पाया। साल 2003 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को 12 सीटों में 9 सीटों पर जीत मिली थी। जबकि कांग्रेस को तीन सीटें मिली थी। इस चुनाव के बाद बीजेपी की सरकार छत्तीसगढ़ में बनी। उसी तरह साल 2008 में बीजेपी को 12 सीटों में 10 सीटों पर विजय मिली। कांग्रेस के खाते में एक सीट आई। इस तरह इस बार भी बीजेपी की सरकार सूबे में बनी। साल 2023 के विधानसभा चुनाव में बस्तर संभाग में कांग्रेस को 8 सीटें मिली। जबकि बीजेपी को चार सीटें मिली। लेकिन कांग्रेस सरकार नहीं बना पाई। यह साल सिर्फ अपवाद माना जा सकता है। साल 2018 के चुनाव में बस्तर रीजन में कांग्रेस को 12 में से 11 सीटें मिली। बीजेपी को सिर्फ 1 सीटें मिली। इस तरह कांग्रेस सत्ता में काबिज हो सकी। बस्तर में सिर्फ जगदलपुर सीट सामान्य सीट है। उसके अलावा 12 में से 11 सीटें एसटी सीटें हैं।

बस्तर में पहले चरण के तहत मतदान सात नवंबर को है। इस दिन कुल 20 सीटों पर मतदान होने हैं। जिसमें बस्तर की 12 सीटें शामिल हैं। अभी कांग्रेस के खाते में कुल 12 की 12 सीटें हैं। एक सीट दंतेवाड़ा थी। जिस पर बीजेपी ने साल 2018 में जीत दर्ज की थी। लेकिन साल 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान नक्सली हिंसा में बीजेपी विधायक भीमा मंडावी की मौत हो गई। उसके बाद हुए उपचुनाव में कांग्रेस ने यह सीट जीत ली। जिससे बस्तर संभाग पर पूरी तरह से पंजा का कब्जा हो गया।

प्रचार के दौरान रेणुका सिंह से चंपा देवी पावले ने बनाई दूरी, कही बड़ी बात

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। भारतीय जनता पार्टी ने भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र से केंद्रीय राज्य मंत्री रेणुका सिंह को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। टिकट मिलने के बाद से ही केंद्रीय राज्य मंत्री रेणुका सिंह पिछले 10 दिन से लगातार विधानसभा क्षेत्र में प्रचार कर रहीं हैं। लेकिन उनके प्रचार के दौरान पूर्व विधायक चंपा देवी पावले के शामिल नहीं होने से कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं।

बीजेपी प्रत्याशी और केंद्रीय राज्य मंत्री रेणुका सिंह पिछले 10 दिन से लगातार विधानसभा क्षेत्र में प्रचार कर रहीं हैं। सोनहत, भरतपुर और मनेन्द्रगढ़ ब्लॉक के कई गांवों में उनका दौरा जारी है। लेकिन उनके प्रचार में एक बार भी पूर्व विधायक चंपा देवी पावले नजर नहीं आ रहीं है। जो बीजेपी सरकार में संसदीय सचिव भी रहीं हैं। जिसकी चर्चा पूरे विधानसभा क्षेत्र में हो रही है।

इसे लेकर पूर्व विधायक चंपा देवी पावले का पहली बार बयान सामने आया है। उन्होंने रेणुका सिंह को भरतपुर सोनहत विधानसभा से प्रत्याशी बनाये जाने पर कहा, जनता की मांग थी कि प्रत्याशी यहां से हो। भरतपुर सोनहत से टिकट काटी गई है, पर संगठन का निर्णय

सर्वमान्य है। उनका कहना है कि रेणुका को योग्य प्रत्याशी माना गया होगा। क्षेत्र से कोई योग्य चेहरा सर्वे में नहीं पहुंच पाया होगा।

चंपा देवी पावले ने कहा अब फ्री महसूस कर रही हूं और परिवार को समय दे रही हूं। संगठन जहां कहेगा, वहां प्रचार करने जाऊंगी। मुझे दायित्व कहां मिलेगा, यह नहीं मालूम। अभी तक रेणुका सिंह से न मुलाकात हुई है, न कोई बात हुई है

प्रत्याशी घोषित होने के पहले जब रेणुका सिंह का नाम इस क्षेत्र के लिए चल रहा था, तब खुद चंपा देवी पावले ने कहा था कि कार्यकर्ताओं की भावना के अनुरूप टिकट क्षेत्र के लोगों को देना चाहिए। अब जब पार्टी ने सरगुजा सांसद रेणुका सिंह को यहां से टिकट दे दिया है। जिसके बाद से ही पूर्व विधायक चंपा देवी पावले अभी तक कहीं भी बीजेपी के प्रचार में रेणुका सिंह के साथ नजर नहीं आई हैं। माना जा रहा है कि बीजेपी से टिकट नहीं मिलने से पूर्व विधायक चंपा देवी पावले नाराज हैं।

कांग्रेस के सभी सिपाही मिलकर करेंगे काम

गौरेला पेंड्रा मरवाही। मरवाही विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेसी विधायक डॉ. केके ध्रुव ने खुद को दोबारा कांग्रेस से टिकट मिलने पर नाराज कांग्रेसियों के विरोध को तात्कालिक नाराजगी बताते हुए कहा कि सभी कांग्रेस के सिपाही हैं सभी मिलजुल कर कांग्रेस को जीताने के लिए काम करेंगे।

कांग्रेस में नाराजगी को लेकर पेंड्रा में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. केके ध्रुव ने कहा कि कुछ कांग्रेसी नेता जो संगठन में काम कर रहे थे वह टिकट नहीं मिलने से नाराज हैं इसलिए मेरा विरोध कर रहे हैं। टिकट नहीं मिलने से नाराजगी कोई नई बात नहीं है परंतु टिकट तो किसी एक को ही मिलता है कांग्रेस पार्टी के सर्वे के हिसाब से मुझे टिकट दिया गया है और मैं कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में मरवाही विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस का प्रत्याशी हूं।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

नक्सलियों ने ली बिरजू तारम की हत्या की पूर्ण जिम्मेदारी

मोहला-मानपुर। सरखेड़ा के भाजपा नेता बिरजू तारम की हत्या की नक्सलियों के आरकेबी डिवीजन ने पूर्ण जिम्मेदारी लेते कहा कि आरएसएस और भाजपा नेताओं को चुनावी गतिविधियों से दूर रहने की धमकी दी है। पर्चे फेंकर नक्सलियों ने स्पष्ट तौर पर लिख दिया गया है कि भाजपा-आरएसएस के नेताओं और कार्यकर्ताओं को वोट मांगने पर मौत की सजा दी जाएगी। मदनवाड़ा इलाके में नक्सलियों ने पर्चे फेंककर हत्या की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है, फिलहाल पुलिस यह जांच कर रही है कि फेंके पर्चे नक्सलियों के हैं अथवा नहीं, जांच के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। बताया जा रहा है कि पर्चे को देखकर पुलिस को कई तरह का संदेह है। आमतौर पर नक्सली लाल रंग की स्याही का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उक्त पर्चे में काले स्याही का उपयोग किया गया है। पर्चे में स्पष्ट तौर पर लिख दिया गया है कि भाजपा-आरएसएस के नेताओं और कार्यकर्ताओं को वोट मांगने पर मौत की सजा देने की चेतावनी दी है। लोगों से चुनाव बहिष्कार करने का भी पर्चे में उल्लेख है।

भाजपा ने अम्बिकापुर से राजेश पर जताया भरोसा

सरगुजा। छत्तीसगढ़ की हाईप्रोफाइल विधानसभा सीटों में अंबिकापुर विधानसभा सीट है। ये क्षेत्र टीएस सिंहदेव का गढ़ माना जाता है। इस सीट से सिंहदेव ने तीन बार जीत हासिल की है। यहां से कांग्रेस के बागी विधायक चिंतामणि को काफी उम्मीदें थी। इस सीट से वो प्रत्याशी बनना चाहते थे। हाल ही में बीजेपी नेताओं से मुलाकात के दौरान चिंतामणि ने बीजेपी से अंबिकापुर विधानसभा सीट से टिकट को लेकर शर्त भी रखी थी। हालांकि बुधवार को इस सीट पर बीजेपी प्रत्याशी की घोषणा हो चुकी है। बीजेपी ने चिंतामणि महाराज की उम्मीदों पर पानी फेरते हुए राजेश अग्रवाल को अंबिकापुर सीट से टिकट दिया है। राजेश अग्रवाल 2018 में कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल हुए थे। अंबिकापुर विधानसभा सीट पर उम्मीदवार के चयन में बीजेपी ने काफी वक्त लिया है। ये सीट पिछले तीन साल से टीएस सिंहदेव जीतते आ रहे हैं। हालांकि बुधवार को बीजेपी ने लखनपुर क्षेत्र के राजेश अग्रवाल को इस क्षेत्र से चुनावी मैदान में उतारा है।

पुलिस झंडा दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन

गौरेला पेंड्रा मरवाही। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में शहीदों की स्मृति में पुलिस झंडा दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 21 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक आयोजित होंगे पुलिस और पत्रकारों के बीच क्रिकेट प्रतियोगिता सहित कई कार्यक्रम हुए। 52 प्रतिभागियों ने चित्रकला प्रदर्शनी में भी हिस्सा लिया। जीपीएम जिला पुलिस के द्वारा शहीदों की स्मृति में पुलिस झंडा दिवस का आयोजन 21 अक्टूबर से लेकर 31 अक्टूबर के बीच विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन पुलिस अधीक्षक कार्यालय में किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की शुरूआत शहीद शिवनारायण सिंह बघेल की पुत्रवधु अंशु सिंह बघेल, जीपीएम पुलिस अधीक्षक योगेश कुमार पटेल के द्वारा ज्योति प्रज्वलित कर छत्तीसगढ़ महतारी और शहीद शिवनारायण बघेल के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न स्कूलों व प्रतिभागियों के द्वारा बनाए गए चित्रकला प्रदर्शनी का अवलोकन आए हुए अतिथियों के द्वारा किया गया।

सामान्य प्रेक्षक ने मतदान केन्द्रों का किया निरीक्षण

राजनांदगांव। विधानसभा क्षेत्र डोंगरगांव एवं खुज्जी के सामान्य निर्वाचन प्रेक्षक श्री मुकेश कुमार ने डोंगरगांव के स्ट्रांग रूम एवं डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। सामान्य निर्वाचन प्रेक्षक श्री मुकेश कुमार ने डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्र क्रमांक 186 आरी, 187 आरी, 189 डोंगरगांव, 190 डोंगरगांव, 192 डोंगरगांव, 195 डोंगरगांव, 212 मोहड़, 213 मोहड़, 214 डोंगरगांव, 215 डोंगरगांव, 216 मटिया, 217 मटिया के मतदान केन्द्र का निरीक्षण किया। उन्होंने मतदान केन्द्रों में पेयजल, विद्युत, रैम्प सहित अन्य आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। निर्वाचन प्रेक्षक श्री मुकेश कुमार ने खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्राज्यीय चेकपोस्ट कल्लूबंजारी का निरीक्षण किया। उन्होंने चेकपोस्ट पर तैनात स्थैतिक निगरानी दल एवं सभी टीम को सतर्कता से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्थैतिक निगरानी दल से कहा कि अंतर्राज्यीय सीमा से जुड़े होने के कारण यहां से अवैध शराब परिवहन, नगदी एवं अन्य अवैध सामग्री का परिवहन हो सकता है।

दन्तेवाड़ा के निर्वाचन के लिये अभ्यर्थियों को चिन्ह आबंटित

दन्तेवाड़ा। विधानसभा निर्वाचन 2023 के तहत् विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र 88-दन्तेवाड़ा के निर्वाचन के लिये अभ्यर्थियों की नाम वापसी नियत तिथि के पश्चात रिटर्निंग ऑफिसर श्री षिवनाथ बघेल द्वारा निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों को प्रतीक चिन्ह आबंटित किया गया है। जिसके तहत् मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य राजनैतिक दलों के अभ्यर्थियों में श्री केषव नेताम बहुजन समाज पार्टी को ''हाथी'', श्री चैतराम अटामी भारतीय जनता पार्टी को ''कमल'', श्री छविन्द्र कर्मा इंडियन नेषनल कांग्रेस को ''हाथ'', श्री बल्लू राम भवानी आम आदमी पार्टी को ''झाड़ू'', बेला तेलाम जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे.) को ''वर्ग में हल जोतता किसान'' प्रतीक चिन्ह आबंटित किया गया है। वहीं रजिस्ट्रीकृत राजनैतिक दलों के अभ्यर्थियों में श्री भीमसेन मण्डावी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को ''कांच का गिलास'' तथा श्री अमूलकर नाग निर्दलीय को ''माचीस की डिब्बी'' प्रतीक चिन्ह आबंटित किया गया है।

ऐतिहासिक बस्तर दशहरा में नहीं होता रावण दहन

जगदलपुर। विजयदशमी के दिन पूरे देश में रावण का पुतला दहन की परंपरा है। लेकिन 75 दिनों तक चलने वाले ऐतिहासिक बस्तर दशहरा में रावण दहन नहीं होता है। विजयदशमी के दिन बस्तर में दशहरा की प्रमुख रस्म भीतर रैनी निभाई जाती है। बस्तर में शक्ति की पूजा की जाती है। साथ ही बस्तर की आराध्या देवी दंतेश्वरी के छत्र को शहर भ्रमण कराया जाता है। मंगलवार देर रात तक इस महत्वपूर्ण रस्म को धूमधाम से मनाया गया। इसे देखने के लिए काफी संख्या में पर्यटक और श्रद्धालु पहुंचे। बस्तर के सैकड़ों देवी देवता भी इस रस्म में शामिल हुए।

मान्यताओं के अनुसार आदिकाल में बस्तर रावण की नगरी हुआ करती थी। यही वजह है कि शांति, अंहिसा और

सदभाव के प्रतीक बस्तर दशहरा पर्व में रावण का पुतला दहन नहीं किया जाता। इस दिन भीतर रैनी की रस्म निभाई जाती है। भीतर रैनी बस्तर दशहरा की एक महत्वपूर्ण रस्म है। बस्तर के जानकार हेमन्त कश्यप बताते हैं कि भीतर रैनी के दिन चलने वाले रथ को विजय रथ कहा जाता है। इस रथ में 8 पहिये होते हैं। इससे पहले 6 दिनों तक फूल रथ चलाया गया था। जो 4 पहिए का होता है।

हेमंत कश्यप ने कहा विजयदशमी के दिन 8 पहियों वाले रथ को चलाने के कारण इसे विजय रथ कहा जाता है। पहले विजय रथ में महाराजा चढ़ते थे। लेकिन राजशाही खत्म होने के बाद अब जिला प्रशासन के द्वारा व्यवस्था करके इसमें बस्तर की आराध्य देवी के छत्र को सवार किया जाता है।

विजयदशमी के दिन भीतर रैनी रस्म में 8 चक्के के विजय रथ परिक्रमा कराने के बाद आधी रात को इसे माडिया जाति के लोग चुरा लेते हैं। रथ चोरी करने के बाद इसे शहर से लगे कुम्हडाकोट ले जाते हैं। इसे भीतर रैनी की रस्म कहा जाता है।

अविनाश प्रसाद ने कहा मान्यता है कि राजशाही युग में राजा से असंतुष्ट लोगों ने रथ चुराकर एक जगह छिपा दिया था। रथ चुराने के बाद आदिवासियों ने राजा से नयाखानी साथ में खाने की मांग थी। इस बात की जानकारी लगते ही राजा अपने लाव लश्कर, गाजे बाजे के साथ, आतिशबाजी करते हुए दूसरे दिन कुम्हड़ाकोट पहुंचे और ग्रामीणों का मान मनौवल कर उनके साथ भोज किया। इसके बाद रथ को शाही अंदाज में वापस जगदलपुर के दंतेश्वरी मंदिर लेकर पहुंचे। इस रस्म को बाहर रैनी रस्म कहा जाता है।

बस्तर के राजा पुरषोत्तम देव अपने लाव लश्कर के साथ पदयात्रा करते हुए जगन्नाथ पुरी पहुंचे थे। जहां से उन्हें रथपति की उपाधि मिली। इसे ग्रहण करने के बाद राजा बस्तर पहुंचे और उस समय से बस्तर में दशहरे के अवसर पर रथ परिक्रमा की प्रथा शुरू की गई। जो की आज तक करीब 600 सालों से अनवरत चली आ रही है।विजयदशमी के दिन बस्तर में राजा महाराजाओं के जमाने की ऊंची व वजनी बंदूक (कालवान) की भी पूजा अर्चना की गई। खासबात यह है कि मंदिर के पुजारी और राजपरिवार के द्वारा इस बंदूक को साल में सिर्फ एक बार विजय दशमी के दिन बाहर निकाला जाता है। इस बंदूक का वजन रीब 10 किलो है। इसकी ऊंचाई 8-9 फिट है।

भाजपा ने रजनीश सिंह का काटा टिकट, बेलतरा से सुशांत शुक्ला को बनाया प्रत्याशी

बिलासपुर। बेलतरा विधानसभा सीट इस समय आम लोगों की चर्चा में बना हुआ है। यहां भाजपा से विधायक रजनीश सिंह 5 साल तक जनता की सेवा में रहे थे, लेकिन अब पार्टी ने इस सीट से विधायक रजनीश सिंह का टिकट काट दिया है। उनके जहग पर छात्र राजनीति से आए सुशांत शुक्ला को बेलतरा से बीजेपी ने प्रत्याशी घोषित किया है। बिलासपुर जिले की 6 विधानसभा सीटों में से 5 में भाजपा ने पहले प्रत्याशी घोषित कर दिया था, बेलतरा पर पार्टी ने टिकट होल्ड किया था जिसमे अब प्रत्याशी घोषित कर दिया गया है।

बेलतरा विधानसभा सीट वैसे तो राज्य निर्माण के समय से ही भाजपा के पास रही है। लेकिन परिसीमन के पहले यह सीट सीपत विधानसभा कहलाती थी और इस पर कभी कांग्रेस राज करती थी। अब यह बीजेपी का अभेद किला बनता जा रहा है। इस बार पार्टी ने सिटिंग एमएलए का टिकट काटकर नए प्रत्याशी को टिकट दिया है। यहां कांग्रेस के दिग्गज नेता विजय केशरवानी चुनाव लड़ रहे हैं। वही सुशांत को टिकट मिलने से नाराज भाजपा नेता निर्दलीय चुनाव भी लड़ सकते हैं। हालांकि सुशांत ने कहा है कि पार्टी के निर्णय को कोई भी ठुकरा नहीं सकता है। उन्हें भरोसा है कि सभी एकजुट होकर इस चुनाव में उनका सहयोग करेंगे। टिकट मिलने के बाद बेलतरा से बीजेपी प्रत्याशी सुशांत शुक्ला ने पार्टी और अपने नेताओं का धन्यवाद दिया।

संक्षिप्त समाचार

साव ने किया नामांकन दाखिल, बोले छग में बन रही हैं भाजपा की सरकार

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश

अध्यक्ष व लोरमी से भाजपा प्रत्याशी अरुण साव ने बुधवार को मुंगेली कलेक्टोरेट पहुंचकर अपना नामांकन दाखिल किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री पुन्नलाल मोहिले उपस्थित थे। पत्रकारों से चर्चा करते हुए साव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने बुधवार को सभी 90 विधानसभा सीटों के लिए प्रत्याशियों की घोषणा आज कर दी। भाजपा भारी बहुमत के साथ छत्तीसगढ़ में सरकार बनाएगी। तीन दिसंबर को जब मतगणना होगी कमल खिलेगा, और छत्तीसगढ़ खुशहाली और तरक्की की ओर आगे बढ़ेगा। भारतीय जनता पार्टी ने 45 से अधिक नये चेहरों को मौका दिया है जो पहली बार विधानसभा का चुनाव लड़ रहे है। वहीं अनुभवी और दिक्कत नेताओं को भी मैदान में उतारा गया है साथ ही बड़ी संख्या में महिलाओं को भी मौका दिया है, निश्चित रुप से एक मजबूत टीम चुनावी मैदान में उतरी है और उन्हें जनता का आशीर्वाद मिलेगा।

कोयला घोटोला मामले में 11 में से चौधरी ही हुए कोर्ट में पेश

रायपुर। कोयला घोटाले की चार्जशीट में शामिल 11 लोगो को अग्रिम जमानत के साथ रायपुर जिला एवं सत्र न्यायालय में पेश होना था लेकिन इनमें से एक ही राजेश चौधरी जो जमानत पर है वही पेश हुए। विशेष न्यायाधीश अजय सिंह राजपूत गैरहाजिर 10 लोगों को 6 दिसंबर को पुनः कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है। जमानत पर चल रहे राजेश चौधरी को छोड़कर कोई भी आरोपी उपस्थित नहीं हुआ है क्योंकि कुछ आरोपियों (रजनीकांत तिवारी, राम प्रताप सिंह) के नोटिस बिना तामील किए वापस कर दिए गए हैं और कुछ आरोपियों (अनुराग चौरसिया, कैलाश तिवारी, पीयूष साहू,) को नोटिस तामील करा दिया गया है। देवेन्द्र सिंह यादव, चन्द्रदेव प्रसाद राय, विनिद तिवारी, रोशन कुमार सिंह, मनीष उपाध्याय, नवनीत तिवारी, नरवन साहू) की प्रतीक्षा है। विशेष न्यायालय पीएमएलए रायपुर सीजी द्वारा नए सिरे से नोटिस जारी करने का आदेश दिया गया है। अगली सुनवाई 06 दिसंबर 202× को होगी। उल्लेखनीय हैं कि 550 करोड़ के कोल लेवी वसूली और मनी लॉन्ड्रिंग मामले की सुनवाई दिसंबर 2022 से विशेष न्यायाधीश अजय सिंह राजपूत की अदालत में चल रहा है।

छत्तीसगढ़ के 39 सीटों पर हमर राज पार्टी के प्रत्याशी तय

रायपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव का बिगुल बजते ही राजनीतिक दलों ने सभी विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतार दिये हैं। अरविंद नेताम की हमर राज पार्टी ने भी अपने प्रत्याशियों की लिस्ट जारी कर दी है। प्रदेश की सबसे वीआईपी सीट पाटन से हमर राज पार्टी ने बी एस रावटे को मैदान में उतारा है। वहीं वैशाली नगर सीट से हेमंत केशरिया और सीतापुर विधानसभा सीट से नन्कू राम सिंह को उम्मीदवार बनाया है। हमर राज पार्टी ने प्रदेश की 50 सीटों पर प्रत्याशी उतारने का फैसला किया है। जिसके तहत हमर राज पार्टी की पहली लिस्ट में 19 प्रत्याशियों पर मुहर लगाई थी। वहीं दूसरी लिस्ट में 20 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा की गई है। इस तरह हमर राज पार्टी ने अब तक 50 में से कुल 39 उम्मीदवारों की घोषणा की है और 11 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा अभी बाकी है। हमर राज पार्टी के नेता और संस्थापक अरविंद नेताम ने कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद हमर राज पार्टी का गठन किया। कांग्रेस में रहते हुए अरविंद नेताम कैबिनेट मंत्री भी रहे हैं। नेताम ने सत्तारूढ़ कांग्रेस और भाजपा पर आदिवासियों की उपेक्षा का आरोप लगाया था।

दुर्ग जिले के प्रत्याशी प्रियंका की उपस्थिति में दाखिल करेंगे नामांकन

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित दुर्ग जिले के सभी प्रत्याशी नामांकन के अंतिम, 30 अक्टूबर को प्रियंका गांधी वाड्रा की मौजूदगी में नामांकन दाखिल करेंगे। इस दौरान प्रियंका गांधी दुर्ग में एक जनसभा को संबोधित करेंगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पाटन से कांग्रेस के प्रत्याशी है और उनके खिलाफ भाजपा के सांसद विजय बघेल चुनावी मैदान में है।

मीडिया संस्थान होंगे राष्ट्रीय मीडिया सम्मान-2023 से सम्मानित

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग मतदाता जागरुकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले मीडिया संस्थानों का चयन कर प्रतिवर्ष राष्ट्रीय मीडिया सम्मान प्रदान करता है। राष्ट्रीय मीडिया सम्मान वर्ष 2023 के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने मीडिया संस्थानों से 10 दिसंबर 2023 तक आवेदन आमंत्रित किया है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में जारी पत्र में बताया गया है कि मीडिया संस्थान अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार हेतु आवेदन कर सकते हैं। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राष्ट्रीय मीडिया सम्मान-2023 हेतु मीडिया संस्थानों से चार श्रेणियों प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक (टेलीविजन) मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक (रेडियो) मीडिया और ऑनलाईन (इंटरनेट)/सोशल मीडिया में पुरस्कार हेतु नामांकन आमंत्रित किया गया है।

शराब बंदी पर फैसला अगली चुनी हुई सरकार लेगी : सुप्रिया

रायपुर। राजीव भवन में पत्रकारों से चर्चा करते हुए कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि छत्तीसगढ़ में हो रहा विधानसभा चुनाव रेवड़ी और रेहड़ी के बीच खड़ा है। मजदूर, गांव गरीब के लिए काम कांग्रेस की रेहड़ी है तो अडाणी के लिए थाली सजाकर देना भाजपा की रबड़ी है। शराबबंदी का फैसला अगली चुनी हुई सरकार लेगी। पत्रकारवार्ता में राधिका खेड़ा, पूजा भाटी, भूपेंद्र वर्मा के साथ ही कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि चुनावी माहौल गरमा रहा है और सारी बातें इस चुनाव में सुनने में आ रही है वह सोचने को मजबूर करता है कि सरकारें क्यों बनाई जा रही है। आज जब छत्तीसगढ़ के साथ चार राज्यों में विधानसभा के चुनाव मुहायने पर आकर खड़ा है तो जहां पर हमारी सरकारें है विशेषकर छत्तीसगढ़ में क्योंकि यहां पर 95 से 96 प्रतिशत तक काम करके और काम के दम पर रिपोर्ट कार्ड दिखाकर हम जनता

के बीच जा रहे है और उनसे वोट मांग रहे है। प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी लगातार जुमलों की बारिश कर रहे है और सबसे अग्रिम पंक्ति में हम नीरज चोपड़ा से ज्यादा इस देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके परम चेले अमित शाह है। जुबलों की बात नई नहीं है चुनाव आते है तो बड़े-बड़ जुमले सुनाई देते हैं। लेकिन असलियत यह है कि यह चुनाव रेवड़ी और रबड़ी के बीच में आकर खड़ा हो गया है और यह है यह रेवड़ी और रबड़ी का अंतर। दलितों, वंचितों, आदिवासियों, किसानों, मजदूरों के लिए लिए काम कीजिएगा तो उसको भारतीय जनता पार्टी के साथ प्रधानमंत्री रेवड़ी बुलाते है। लेकिन रबड़ी थाली में परोस-परोसकर अडाणी तक पहुंचती है उस पर कोई चर्चा नहीं होती है।

उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल की सरकार ने छत्तीसगढ़ में 40 लाख लोगों को गरीबी की सीमा से बाहर निकाला है और यह बहुत बड़ा कीर्तिमान है। यह कांग्रेस के आंकड़े नहीं है भारत सरकार के नीति आयोग की रिपोर्ट है। पांच साल की कांग्रेस सरकार ने 40 लाख लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में कामयाब हुई है। 44 लाख परिवारों को बिजली बिल हाफ योजना का लाभ दिलवाया और उनके 4 हजार करोड़ रुपये बचे। 85 हजार नौकरियां दी और 5 लाख रोजगार बढ़ाए। आज इस देश के किसी भी राज्य में वहां की सरकार शायद यह कह सकें कि उन्होंने 5 लाख रोजगार बढ़ाए है। शराब बंदी पर बोलते हुए कहा कि मुझे ऐसा लगाता है कि इसमें ज्यादा विचार-विमर्श करने का यह एक विषय है। हमारी सरकार का क्या मत है इस बार क्योंकि शराब से आने वाले न्यूसेन को सरकार झेल रही है और यह मत यह है कि न्यूसेन बंद होनी चाहिए। आगे इसका क्या प्रारुप होगा यह मुझे लगता है कि चुनी हुई सरकार को निर्णय लेना होगा।

छत्तीसगढ़ के लिए भाजपा ने जारी की उम्मीदवारों की अंतिम सूची

■ **टीएस सिंह देव को चुनौती देंगे राजेश अग्रवाल**

नई दिल्ली/रायपुर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बुधवार को छत्तीसगढ़ चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की चौथी और अंतिम सूची जारी की। इसके साथ ही बीजेपी ने छत्तीसगढ़ की सभी 90 विधानसभा सीटों के लिए अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। राजेश अग्रवाल अंबिकापुर से कांग्रेस नेता और छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंह देव को चुनौती देंगे। सुशांत शुक्ला बेलतरा से चुनाव लड़ेंगे। कसडोल विधानसभा क्षेत्र से धनीराम धीवर को मैदान में उतारा गया है। दीपेश साहू बेमेतरा से चुनाव लड़ रहे हैं।

पार्टी के एक नेता ने कहा कि इससे पहले, पार्टी ने 90 सदस्यीय विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की अपनी तीसरी सूची में कबीरधाम जिले की पंडरिया सीट के लिए उम्मीदवार की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि कबीरधाम जिला पंचायत की अध्यक्ष और भाजपा की राज्य महिला शाखा की सचिव भावना बोहरा को पंडरिया से मैदान में उतारा गया है। इसके साथ, भगवा पार्टी ने अब तक कुल 90 विधानसभा क्षेत्रों में से 86 सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। दूसरे चरण में होने वाले मतदान वाली शेष चार सीटों के लिए

उम्मीदवारों की घोषणा अभी बाकी है।

कांग्रेस ने 2018 के चुनावों में 90 सदस्यीय विधानसभा में 68 सीटें जीतकर शानदार जीत दर्ज की थी और आराम से सरकार बनाई थी। भाजपा 15 सीटों पर सिमट गई, जबकि जेसीसी (जे) और बसपा को क्रमशः 5 और 2 सीटें मिलीं। कांग्रेस की वर्तमान ताकत 71 है। कांग्रेस ने अब तक 30 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा की है। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव होने हैं और सरकार बनाने में आदिवासी मतदाताओं कीमहत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए राज्य के राजनीतिक दलों ने आदिवासी मतदाताओं को अपने पक्ष में करने की कोशिश शुरू कर दी है। छत्तीसगढ़ में माना जाता है कि लगभग 32 फीसदी जनसंख्या वाले आदिवासी समुदाय के आशीर्वाद के बगैर राज्य में सरकार बनाना मुश्किल है।

आचार संहिता के बाद पुलिस की कड़ी कार्रवाई

अब तक 30 करोड़ 52 लाख की नगदी और सामान जब्त

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आदर्श आचार संहिता लागू होने से लेकर अब तक की स्थिति में 30 करोड़ 52 लाख 32 हजार रुपए की अवैध धन राशि और वस्तुएं जब्त की गई हैं। इसमें 8 करोड़ 13 लाख 43 हजार रुपए की नगद राशि शामिल हैं।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार, प्रवर्तन एजेंसियों (इन्फोर्समेंट एजेंसीज) की ओर से निगरानी के दौरान 23 अक्टूबर तक 21 हजार 838 लीटर अवैध शराब जब्त की गई है। इसकी कीमत 66 लाख 43 हजार 444 रुपए है। साथ ही 2731 किलोग्राम कई प्रकार के नशीली सामान, जिसकी कीमत लगभग दो करोड़ 16 लाख 66 हजार 577 रुपए है। जांच अभियान के दौरान 14 करोड़ 25 लाख 14 हजार रुपए कीमत के 158 किलोग्राम से अधिक कीमती आभूषण और रत्न भी तलाशी के दौरान जब्त किया गया है। इसके अलावा कई सामग्रियां जिनकी कीमत पांच करोड़ 30 लाख 64 हजार 561 रूपए है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबा साहेब कंगाले ने विधानसभा चुनाव में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्रवाई किए जाने के संबंध में सभी जिलों के जिला निर्वाचन अधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए हैं। जारी निर्देशों के परिपालन में राज्य में विभिन्न प्रवर्तन ऐजेंसी के माध्यम से धन और वस्तुओं की अवैध परिवहन तथा संग्रहण पर कड़ी नजर रखी जा रही है। छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत प्रदेश में निगरानी दलों की सघन जांच की कार्रवाई लगातार जारी है।

छत्तीसगढ़ चुनाव में भाजपा का कास्ट मैनेजमेंट ओबीसी एसटी और एससी फॉर्मूले को साधा

रायपुर। छत्तीसगढ़ चुनाव में सभी पार्टियों की तरफ से उम्मीदवारों के ऐलान का सिलसिला अब समाप्ति की ओर है। बीजेपी और कांग्रेस ने 90 सीटों पर तस्वीरें साफ कर दी है। इस चुनाव में बीजेपी ने कास्ट मैनेजमेंट को भी ध्यान में रखा है। टिकट बंटवारे में ओबीसी, एसटी और एससी फॉर्मूले का विशेष ध्यान रखा गया है। छत्तीसगढ़ की जनसंख्या में जिस वर्ग का सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व है। उसके हिसाब से बीजेपी ने टिकट बंटवारे में सोशल इंजीनियरिंग का इस्तेमाल किया है।

बीजेपी ने टिकट बंटवारे में सोशल इंजीनियरिंग के साथ साथ कास्ट मैनेजमेंट का ख्याल रखा है। बीजेपी ने 90 सीटों पर जिन प्रत्याशियों का ऐलान किया है। उसमें सबसे ज्यादा ओबीसी वर्ग के प्रत्याशी हैं। बीजेपी ने ओबीसी वर्ग से कुल 33 उम्मीदवारों को टिकट दिया है। जबकि अनुसूचित जनजाति वर्ग से 30 कैंडिडेट को मैदान में उतारा है। बीजेपी के उम्मीदवारों के चयन में एससी वर्ग यानि की अनुसूचित जाति वर्ग को भी प्राथमिकता दी गई है। कुल 10 एससी उम्मीदवारों को टिकट दिया गया है।

बीजेपी की चौथी लिस्ट बुधवार को जारी

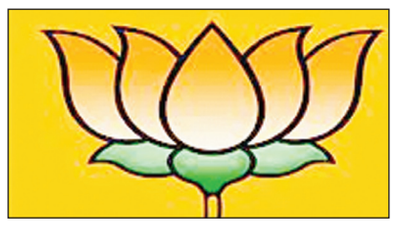

की गई है। इस सूची में भी बीजेपी ने कास्ट फैक्टर को ध्यान में रखा है। बेलतरा सीट से बीजेपी ने ब्राह्मण उम्मीदवार को मैदान में उतारा है। बेलतरा से 40 साल के सुशांत शुक्ला को टिकट दिया गया है। यहां से मौजूदा विधायक रजनीश सिंह का टिकट बीजेपी ने काट दिया है। सुशांत शुक्ला छत्तीसगढ़ युवा आयोग के पूर्व सदस्य रहे हैं। इसके अलावा वह बीजेपी की युवा शाखा के सह प्रभारी हैं। अंबिकापुर से बीजेपी ने वैश्य उम्मीदवार पर दांव खेला है। यहां से राजेश अग्रवाल को टिकट दिया गया है। जिससे व्यापारी वर्ग को साधा जा सके। व्यवसायी अग्रवाल 2018 विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। कसोडल सीट से मछुआरे समाज के धनीराम धीवर को बीजेपी ने टिकट दिया है। जबकि बेमेतरा विधानसभा सीट से साहू समाज के दीपेश साहू पर बीजेपी ने भरोसा जताया है। इस तरह एक सीट से ब्राह्मण, एक सीट से वैश्य, एक सीट से मछुआरा समाज और एक सीट से ओबीसी वर्ग को बीजेपी ने टिकट दिया है। बीजेपी ने इस बार छत्तीसगढ़ में दो मौजूदा विधायकों को टिकट काटे हैं। जिनमें बेलतरा से रजनीश सिंह शामिल हैं। रजनीश सिंह बेलतरा सीट से बीजेपी का चेहरा माने जाते थे। लेकिन पार्टी ने उनका टिकट काट दिया है। उनकी जगह पर ब्राह्मण चेहरे को बीजेपी ने मैदान में उतारा है। दूसरे विधायक जिनका टिकट बीजेपी ने काटा है। वह बिंद्रानवागढ़ के विधायक डमरूधर पुजारी हैं। इस तरह दो सिटिंग एमएलए का टिकट बीजेपी ने काट दिया है। कांग्रेस ने भी सभी 90 सीटों पर उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है। छत्तीसगढ़ में दो फेज में विधानसबा चुनाव हो रहा है। पहले फेज के तहत सात नवंबर को मतदान होगा। इसमें 20 सीटों पर वोटिंग है। जबकि दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा। इस दिन 70 सीटों पर वोटिंग होगी। इसके बाद तीन दिसंबर 2023 को मतगणना होगी। सूबे में चुनाव की तैयारियां पूरी कर ली गई है। चुनाव प्रचार में दोनों पार्टियों ने पूरी ताकत झोंक दी है। पहले चरण की 20 सीटों पर 223 उम्मीदवार मैदान में हैं।

शैलजा बताएं कांग्रेस के नेता जनता के बीच जाते है तो 22 विधायकों के टिकट कैसे काटे : लक्ष्मी

रायपुर। यूँ तो कांग्रेस के तमाम नेता अपने-अपने सर्वे करा रहे थे जिनका लब्बोलुआब यह था कि कांग्रेस के 50 विधायकों की टिकट काटी जानी थी, लेकिन चूँकि शेष विधायक कांग्रेस की भूपेश सरकार के भ्रष्टाचार में हर कदम पर साथ खड़े थे, इसलिए वे अपनी टिकट बचाने में कामयाब रहे। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी वर्मा ने एकात्म परिसर में पत्रकारों से चर्चा करते हुए कु. शैलजा से जवाब मांगा कि उत्तरप्रदेश में लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ का नारा उछालने वालीं कांग्रेस की महासचिव प्रियंका वाड्रा को यह पता है कि छत्तीसगढ़ में जिन 22 विधायकों की टिकट काटी गई है, उनमें 6 महिलाएँ हैं और उनमें भी 4 महिला विधायक ऐसी हैं जिन्होंने पिछले विधानसभा चुनाव में भारी अंतर के साथ जीत दर्ज की थी। इन महिलाओं की टिकट काटे जाने पर कु. शैलजा कुछ क्यों नहीं कहतीं? पत्रकारवार्ता में प्रदेश मीडिया

प्रभारी अमित चिमनानी भी मौजूद थे।

पत्रकरों से चर्चा करते हुए लक्ष्मी ने कांग्रेस की महिला विधायक छन्नी साहू, जिन पर कांग्रेस के शासनकाल में ही चाकू से हमला किया गया, उनकी टिकट क्या इसलिए काटी गई कि वह जनता के बीच में नहीं रहती थीं? झीरम घाटी के नरसंहार में शहीद कांग्रेस के टाइगर कहे जाने वाले शहीद महेंद्र कर्मा की पत्नी देवती कर्मा और शहीद योगेंद्र शर्मा की पत्नी अनिता शर्मा की टिकट काटकर कांग्रेस ने अपने नेताओं को श्रद्धांजलि दी है या फिर वह भी जनता के बीच नहीं रहती थीं इसलिए कांग्रेस ने उनकी टिकट काट दी? शहीदों के परिजनों को न्याय मिलता उल्टे, उन शहीदों की विधायक पत्नियों की टिकट ही काट दी। कु. शैलजा प्रदेश को बताएँ कि महिला विधायकों शकुंतला साहू, लक्ष्मी ध्रुव और ममता चंद्राकर के टिकट भी क्या इसीलिए काटे गए कि जनता के बीच उनकी मौजूदगी नहीं थी? आखिर 22 विधायकों की टिकट क्यों काटे गए?

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी वर्मा ने प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कु. शैलजा से सवाल किया कि छत्तीसगढ़ में सात हजार से अधिक मासूम बच्चियों से लेकर वृद्ध महिलाएँ बलात्कार व सामूहिक बलात्कार की शिकार हुई हैं। कितने कांग्रेस नेता उन पीड़िताओं से मिलने गए? छत्तीसगढ़ में 40 हजार नवजात शिशुओं की इलाज के अभाव में हुई मौत को लेकर कितने कांग्रेस नेताओं ने पीड़ित परिजनों से मिलकर संवेदना व्यक्त की?

कांग्रेस आने वाले 5 सालों में 15 लाख लोगों को रोजगार देगी : बैज

रायपुर। इस राज्य में एक बार फिर से कांग्रेस की सरकार बन रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि चुनाव में कांग्रेस सरकार के काम और जनकल्याणकारी योजनाएं कांग्रेस सरकार का ब्रह्मास्त्र होगी। भाजपा के पास कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए कोई मुद्दा नहीं है। भाजपा हवाहवाई और काल्पनिक मुद्दों पर प्रदेश में राजनीति करना चाह रही जिसके कारण वह जनता से और दूर होते जा रही है। 2018 के विधानसभा चुनाव में दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाने के बाद कांग्रेस के प्रति जनता का भरोसा और बढ़ते गया, 5 उपचुनाव, नगरीय निकाय चुनाव, पंचायत चुनावों में जनता ने भाजपा को नकार दिया है। भाजपा कार्यकर्ताओं में हताशा है, कांग्रेस कार्यकर्ताओं में उत्साह है। इस चुनाव में छत्तीसगढ़ के किसान, युवा, आम आदमी की और बेहतरी तथा पिछले पांच सालों में किये गये कामों को आगे बढ़ाना कांग्रेस का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनने पर हर वर्ग को सुविधा पहुंचाने योजनाओं का विस्तारीकरण किया जायेगा तथा लोगों की उन्नति के लिये योजनायें बनाई जायेगी तथा नई योजनाओं का विस्तारीकरण भी होगा। कांग्रेस हर किसान का एक बार फिर से कर्जा माफ करेगी। प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान की खरीदी की जायेगी। 17.5 लाख आवासहीनों के लिये कांग्रेस की सरकार मकान बनायेगी। 5 सालों में 15 लाख लोगों को रोजगार देने के लिये बनाये गये छत्तीसगढ़ रोजगार मिशन के लक्ष्य को प्राप्त किया जायेगा। जातिगत जनगणना करवा कर प्रदेश के वंचित वर्ग को उनका हक दिया जायेगा तथा उनके लिये विशेष योजनायें बनाई जायेगी। आबादी के अनुपात में बनाये गये छत्तीसगढ़ आरक्षण संशोधन विधेयक के 76 प्रतिशत आरक्षण को लागू किया जायेगा। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की संख्या बढ़ाकर अधिक से अधिक आबादी को लाभ पहुंचायेंगे।

देश को गुमराह ना करें पीएम मोदी और मोहन भागवत : बघेल

■ **मणिपुर मुद्दे पर भूपेश बघेल ने पीएम मोदी और मोहन भागवत को घेर**

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने मणिपुर मुद्दे पर केंद्र की भाजपा सरकार को घेरा है। सीएम भूपेश ने कहा कि मणिपुर मामले को लेकर भाजपा और आरएसएस दोनों अलग अलग बयान दे रहे हैं। भाजपा का कहना है कि देश की सीमाएं सुरक्षित हैं जबकि आरएसएस के बड़े नेता कहते हैं कि मणिपुर हिंसा के पीछे बाहरी ताकतें हैं।

सीएम भूपेश बघेल ने मणिपुर मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि हमारे विश्वगुरु कहते हैं हमारी सीमाए सुरक्षित हैं जबकि संघ प्रमुख मोहन भागवत जी कहते हैं इसके पीछे

बाहरी ताकतें हैं। दोनों तय कर ले कि कौन सच बोल रहा हैं। उनके बयान बिल्कुल विपरीत हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और संघ प्रमुख मोहन भागवत तय कर लें कि कौन सही कह रहा है। दोनों की ही बातों में विरोधाभास है। उन्हें देश को बताना होगा कि यदि देश की सीमाएं सुरक्षित है तो बाहरी ताकत देश में कैसे घुसी। मोहन भागवत जी कह रहे हैं तो गलत नहीं कह रहे हैं।

बता दें कि नागपुर दशहरा रैली में आरएसएस चीफ मोहन भागवत ने मणिपुर में हुई हिंसा के पीछे विदेशी ताकतों का हाथ होने की आशंका जताई। संघ प्रमुख ने कहा कि मैतेयी और कुकी समुदाय के लोग कई सालों से साथ रह रहे हैं ऐसे में अचानक उनके बीच हिंसा कैसे फैल गई। संघ प्रमुख ने आशंका जताई कि इस हिंसा में सीमा पार के लोगों का हाथ है। भागवत के इस बयान के बाद मणिपुर हिंसा पर कुछ दिनों से चुप बैठी कांग्रेस को एक बार फिर मौका मिल गया। छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने पीएम मोदी पर देश को गुमराह करने का आरोप लगाया।

राम के नाम पर वोट और नोट मांगती है बीजेपी, अपने बलबूते कुछ नहीं कर सकती : सीएम भूपेश बघेल

रायपुर। सीएम भूपेश बघेल ने एक बार फिर बीजेपी पर बड़ा हमला बोला है।सीएम भूपेश ने कहा कि बीजेपी सिर्फ राम के नाम पर वोट मांगती है। अपने बलबूते पर बीजेपी कुछ नहीं कर सकती।इसके अलावा आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनने का दावा भी सीएम भूपेश ने किया है।

इसके साथ ही मणिपुर हिंसा में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बाहरी ताकत के हाथ होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि भारत को विश्व गुरु कहते हैं। भारत सुरक्षित है और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत कहते हैं कि बाहरी ताकत आ रही है। दोनों ही बातों में विरोधाभास है। दोनों मिलकर गुमराह कर रहे हैं।श्री राम नाम से ध्रुवीकरण के मुद्दे पर सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ माता कौशल्या का स्थल है। इसका कभी बीजेपी ने संरक्षण और विकास नहीं किया। बीजेपी को कभी याद नहीं आई।

भूपेश बघेल ने कहा बीजेपी के लोग राम के नाम से नोट और वोट मांगते हैं। अपने बलबूते पर बीजेपी कुछ नहीं कर सकती। बीजेपी के लोगों को धन्यवाद अभी भी वह सवाल कर रहे हैं तो विपक्ष में बैठने के लिए मानसिक रूप से तैयार हैं। किसानों के लिए हमने काम किया है। इससे छत्तीसगढ़ मजबूत होगा इसलिए यह घोषणा की गई है। पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह के आवास देने की घोषणा पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि आवास हमने दे दिया है। केंद्र सरकार ने जो सर्वे किया था उसमें भी 47 हजार लोगों को आवास की राशि दे दी गई है। इसके बाद हमारे सर्वे के हिसाब से 10 लाख लोग पात्र हैं, उन्हें भी आवास दिया जाएगा। कुल मिलाकर 17 लाख 50 हजार लोगों को आवास दिया जाएगा।

सबसे ऊंचा तिरंगा अटारी बॉर्डर पर फहराने का महत्व

लोकेन्द्र सिंह राजपूत

भारत-पाकिस्तान सीमा 'अटारी बॉर्डर' (पूर्व में वाघा बॉर्डर) पर अब पाकिस्तान के झंडे से भी ऊंचा भारत का तिरंगा लहरा रहा है। विशेष सर्विलांस तकनीक से सुसज्जित यह ध्वज सरहद पर निगरानी में हमारे जवानों की सहायता करेगा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने 19 अक्टूबर को अटारी बॉर्डर पर 'स्वर्ण जयंती द्वार' के सामने देश का सबसे ऊंचा तिरंगा फहराया। पहले भी यहाँ 360 फीट ऊंचे ध्वज स्तम्भ पर विशाल तिरंगा फहराता था, जिसे वर्ष 2017 में स्थापित किया गया था। प्रत्येक युद्ध में पराजय का सामना करने वाले पाकिस्तान ने भारत को नीचा दिखाने के लिए 400 फीट ऊंचे पोल पर अपना झंडा फहरा दिया। ऐसा करके पाकिस्तान ने सोचा होगा कि अब भारत का झंडा सदैव पाकिस्तान के झंडे से नीचे रहेगा। परंतु पाकिस्तान भूल गया कि यह नया भारत है। पाकिस्तान को इस मनोवैज्ञानिक युद्ध में भी विजय नहीं मिलनी थी। भारत का ध्वज, पाकिस्तान के झंडे से नीचे लहराए, यह किसे बर्दाश्त होता। अंततः केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की पहल पर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने 3.5 करोड़ रुपए में अटारी बॉर्डर पर 418 फीट के नये ध्वज स्तंभ को स्थापित किया है। जिस पर फहरा रहा हमारा प्यारा तिरंगा अब बहुत दूर से ही, सबसे ऊपर, नीले गगन में शान से लहराता हुआ दिखायी देता है। उल्लेखनीय है कि अटारी पर फहरा रहा तिरंगा, अब देश में सबसे ऊंचा तिरंगा हो गया है। इससे पहले कर्नाटक के बेलगाम में देश का सबसे ऊंचा झंडा 360.8 फीट पर फहरा रहा था। पिछले दिनों (4 सितंबर, 2023) जब मैं अटारी पर गया तो वहां भारत का ध्वज नहीं पाकर थोड़ा अजीब लगा था। अटारी बॉर्डर की ओर बढ़ रहे थे तो बहुत दूर से पाकिस्तान का विशाल ध्वज तो फहराता हुआ दिख रहा था, लेकिन अपने तिरंगे के बिना आसमान सूना लग रहा था। अटारी पहुँचकर मैंने सबसे पहले सैनिक बंधुओं से पूछा कि यहां पाकिस्तान का इतना बड़ा झंडा फहरा रहा है, जो भारत में भी बहुत दूर तक दिख रहा है। जबकि हमारे ध्वज स्तंभ खाली पड़े हैं। तब उन्होंने पाकिस्तान की चालकी के बारे में बताया और कहा कि हम पाकिस्तान के झंडे से नीचे अपना राष्ट्रीय ध्वज कैसे फहरा सकते हैं। आप जब अगली बार आओगे तो यहां सबसे ऊंचा और बड़ा, भारत का ही झंडा फहरते हुए पाओगे, जो भारत में ही नहीं अपितु पाकिस्तान में भी दूर तक अपनी छाप छोड़ेगा। इस 418 फीट ऊंचे पोल पर जब भारत का झंडा आसमान से बातें करेगा तो आपकी छाती 56 इंच की हो जायेगी। शाम को जब अटारी-वाघा बॉर्डर पर दोनों देश अपनेङ्कअपने राष्ट्रीय ध्वज उतारते हैं, तब यहां का माहौल अलग ही होता है। देशभक्ति का गजब जोश रहता है। बॉर्डर पर बना स्टेडियम भारत माता के जयकारे से गूंजता रहता है। वन्देमातरम और हिंदुस्थान जिंदाबाद के जयघोष में पाकिस्तान की ओर से लगाए जाने वाले नारे कहीं खो जाते हैं। भारत की ओर बड़े स्टेडियम में दर्शकों के बैठने की क्षमता पाकिस्तान की दर्शक दीर्घा से कम से कम 6ङ्क7 गुना अधिक है। भारत की दर्शक दीर्घा पूरी तरह भरी रहती है जबकि पाकिस्तान की दर्शक दीर्घा सामान्यत: खाली ही रह जाती है। हां, विशेष अवसरों पर वहां के लोग भी अच्छी संख्या में अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने आते हैं। हो सके तो एक बार अवश्य ही अटारी बॉर्डर पर होकर आना चाहिए। एक तथ्य और जानना चाहिए कि अटारी बॉर्डर को पहले वाघा बॉर्डर कहा जाता था। इसलिए कई लोग आज भी इसे वाघा बॉर्डर ही कहते हैं। लेकिन बाद में पंजाब सरकार ने इसका नाम बदल दिया गया क्योंकि जिस गाँव वाघा के नाम पर इसे वाघा बॉर्डर कहा जाता था, वह पाकिस्तान की ओर है। भारत की सीमा पर अटारी गाँव है। इसलिए भारत की ओर के बॉर्डर को अब अधिकृत रूप से अटारी बॉर्डर कहा जाता है। इसे ही कई बार अटारी-वाघा बॉर्डर भी कह दिया जाता है। अटारी गाँव के साथ एक और गौरवपूर्ण तथ्य जुड़ा है। महाराजा रणजीत सिंह की सेना के एक सेनापति शाम सिंह अटारीवाला का जन्म स्थान 'अटारी गाँव' है। शाम सिंह अटारीवाला ने मुलतान, कशमीर और पेशावर की विजय में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके साहस, पराक्रम और युद्ध कौशल से महाराज रणजीत सिंह भी बहुत प्रभावित रहते थे। शाम सिंह अटारी की बेटी का विवाह महाराजा रणजीत सिंह के पौत्र कंवर नौनिहाल सिंह से हुआ था।

हिंदू अस्मिता भारत के अस्तित्व का मूल

अरुण आनंद

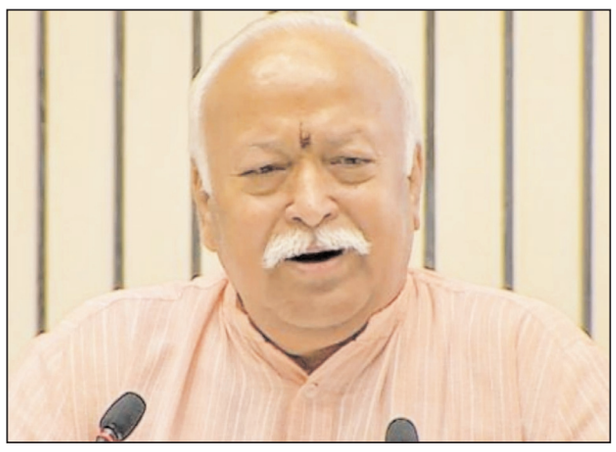

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने विजयदशमी पर अपने वार्षिक संबोधन में भारत के 'स्व' की पहचान पर बल देते हुए हिंदू अस्मिता की बात की। उन्होंने कहा, 'अपने स्व को, अपनी पहचान को सुरक्षित रखना मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा और सहज प्रयास है। भारत की पहचान को, हिंदू समाज की अस्मिता को बनाए रखने का विचार स्वाभाविक तो है ही। आज के विश्व की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए स्वयं के मूल्यों पर आधारित, काल सुसंगत, नया रूपरंग लेकर भारत खड़ा हो, यह विश्व की भी अपेक्षा है।' संघ का मानना है कि हिंदू अस्मिता भारत के अस्तित्व के मूल में है।

भागवत ने जो कहा, वह नया नहीं है। उनसे पहले के सरसंघचालक भी इस बात को स्पष्ट रूप से कहते रहे हैं कि भारत हिंदू राष्ट्र है। हिंदू राष्ट्र को लेकर संघ की संकल्पना को समझना हो तो उसके कुछ मूल तत्वों को समझना होगा। हिंदू राष्ट्र की अवधारणा का मूल आधार हिंदुत्व है। संघ का मानना है कि हिंदुत्व भारतीय जीवन शैली की अभिव्यक्ति है जो सनातन धर्म पर आधारित है। हिंदुइज्म अंग्रेजी का शब्द है और इसका अर्थ लगभग हिंदुत्व के समान है, लेकिन कोई भी 'इज्म' यानी कि 'वाद' एक खास वैचारिक खांचे का परिचायक है। मसलन- 'पूंजीवाद', 'समाजवाद' आदि। इसलिए भारतीय जीवन शैली को निरूपित करने के लिए, हिंदुइज्म के बजाए 'हिंदुत्व' शब्द अधिक उचित है। अंग्रेजी में हिंदुत्व का अनुवाद 'हिंदूनेस' होगा।

हिंदुत्व (हिंदूनेस) भारत के सनातन सभ्यतागत मूल्यों में निहित एक सांस्कृतिक प्रवाह है और इसका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। संघ के सह-सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य ने मई 2019 में प्रकाशित एक आलेख में लिखा था, 'ज हिंदू होना सभी भारतीयों की पहचान बन गया है। ऋस्स् के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार ने इस हिंदुत्व को सभी भारतीयों के बीच एकता की भावना को जगाने के लिए एक माध्यम बनाया, उन्हें उनकी जाति, क्षेत्र, धर्म और भाषा से उपर उठाकर एक-दूसरे से जोड़ा। उन्होंने पूरे समाज को हिंदुत्व के इस सूत्र से बांधकर संगठित करना शुरू कर दिया।'

'राष्ट्र' शब्द को अक्सर 'राष्ट्र-राज्य' या 'राज्य' शब्द का समानार्थक बनाकर उपयोग किया जाता है, जो गलत है। इससे भी काफी भ्रम फैला है। यूरोप में राष्ट्र-राज्य का विकास 18वीं शताब्दी की घटना है। यह यूरोप में चर्च द्वारा सत्ता के दुरुपयोग की प्रतिक्रिया थी। भारत में ऐसी स्थिति कभी नहीं थी। यहां राष्ट्र की अवधारणा वैदिक काल से अस्तित्व में है। भारत में रहने वाले सभी लोगों द्वारा जीवन के एक साझा दृष्टिकोण के आधार पर एक विशिष्ट संस्कृति का क्रमिक विकास हुआ है जिसे हिंदू संस्कृति कह सकते हैं।

राष्ट्र और राज्य में अंतर होता है। राज्य एक राजनीतिक संघ है जबकि राष्ट्र का अर्थ है लोगों का संघ। 'हिंदू', भारत के लोगों को जोड़कर बने राष्ट्र का एक विशेषण है और उन शाश्वत मूल्यों की अभिव्यक्ति है जो भारतीय जीवन शैली में प्राचीन काल से निहित हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पूजा पद्धति क्या है क्योंकि ये शाश्वत मूल्य सभी की साझा विरासत हैं। हमारे समाज में हिंदुत्व की अवधारणा प्रत्येक इंसान के भीतर देवत्व को पहचानने में निहित है, इसी में यह बिंदु भी निहित है कि एक विशिष्ट पंथ या मत का अनुयायी होना व्यक्तिगत मामला है।

धर्म और रिलीजन में अंतर है। रिलीजन अंग्रेजी का शब्द है। इसका आशय खास पूजा पद्धति से होता है। धर्म कहीं अधिक व्यापक है। धर्म का अर्थ है शाश्वत मूल्यों पर आधारित जीवन जीने का ऐसा तरीका जिससे हर मनुष्य अपने भीतर के देवत्व को प्राप्त कर सके और पूरा वैश्विक समाज परम वैभव पर पहुंच सके। भारत में इस्लाम, ईसाई, पारसी, यहूदी आदि कई रिलीजन हैं लेकिन धर्म केवल एक है- हिंदू। इसलिए आप भले ही मस्जिद जाते हों या चर्च या मंदिर, आपकी पूजा पद्धति कोई भी हो , यहां तक कि आप नास्तिक हों तब भी, हिंदू धर्म और हिंदुत्व का अभिन्न अंग हैं। व्यक्तिगत तौर पर अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी मत या संप्रदाय चुन सकता है, इससे उसकी हिंदू पहचान पर कोई असर नहीं पड़ता। इसे नहीं समझने की वजह से अक्सर हिंदू धर्म को बड़ी संकीर्ण परिभाषा में बांध दिया जाता है। ऐसा तब होता है जब धर्म शब्द का अनुवाद रिलीजन के रूप में कर दिया जाता है। धर्म शब्द अपने आप में इतना विशिष्ट है कि इसका कोई अनुवाद किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं है।

सरसंघचालक ने मंगलवार के भाषण में भारत के मौलिक विकास मॉडल की भी बात की है। इसे लेकर भी संघ में लंबे समय से चर्चा चलती रही है। 1970 के दशक की शुरुआत से विकास के उन प्रतिमानों के बारे में व्यापक मोहभंग हुआ है जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से प्रभावी थे। पूर्व और पश्चिम के कई प्रमुख विचारक विकल्प तलाश रहे हैं। यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान वैश्विक व्यापार व्यवस्था और प्रचलित संसाधन-उपयोग की नीतियां उपनिवेशवाद के आधुनिक अवतार हैं, जिन्होंने पिछली शताब्दियों में अधिकांश दुनिया को तबाह कर दिया था।

तीसरा रास्ता

व्यवहारिक स्तर पर, साम्यवाद अब समाप्त हो चुका है, जबकि पूंजीवाद गंभीर रूप से बीमार है। वैश्विक समस्याओं और मानव जाति की चुनौतियों का स्थायी समाधान न तो पूंजीवाद दे सकता है और न ही साम्यवाद। मानव जाति को अधिक मानवीय, गैर-शोषक, समग्र और आध्यात्मिक रूप से उन्नत 'तीसरे रास्ते' की ओर जाना होगा जो मूलतः भारत के उन सभ्यतागत शाश्वत मूल्यों पर आधारित है जिसे हम हिंदू धर्म या हिंदुत्व के नाम से जानते हैं। इसलिए हिंदुत्व में ही विश्व का कल्याण निहित है, ऐसा संघ का मानना है और इसीलिए संघ बार-बार हिंदू राष्ट्र की बात करता है।

कृपया इनसे सीखें — इनके किचन में रोजाना बनता है जरूरतमंद का भी खाना

देश विभाजन के बाद जब पाकिस्तान वाले वहाँ से यहाँ आकर बसे तो न राशन था, न सोने के लिए बिस्तर। खाली पेट और खुली छत की टीस लक्ष्मणदास मोटवानी ने बेहद करीब से महसूस की। इसके बाद आपातकाल में संघ कार्यकताओं की परेशानी करीब से देखी रोटी कहाँ मिलेगी, पानी कब मिलेगा, कुछ पता नहीं था। लक्ष्मण दास उनके लिए खाना बनाकर चोरी छिपे पहुँचाते थे। तब से आज का दिन है, मोटवानी परिवार ने जरूरतमंद की फिक्र को अपना बना लिया। लक्ष्मणदास का स्वर्गवास हो गया, लेकिन उनके दिए संस्कार को विरासत के तौर पर परिवार आगे बढ़ता जा रहा है। रोजाना एक खुराक जरूरतमंद की जरूर बनती है। अब लॉकडाउन में असहायों के सामने भोजन की दिक्कत बढ़ी तो यह परिवार उसी विरासत के बूते जरूरतमंदों की मदद के लिए रोजाना जुटता है। बरेली, उत्तर प्रदेश के सिंधुनगर में अपनी रसोई में खाना बना रहीं कविता बताती हैं कि ससुर लक्ष्मणदास और सास शांति देवी ने यह संस्कार विरासत में दिया। सालों से हर रोज परिवार का खाना बनाने के दौरान ही एक खुराकजरूरतमंद की जरूर बनाई जाती है। सामान्य दिनों में काम करने वालों को दे देते हैं। इन दिनों लॉकडाउन में ज्यादा जरूरतमंदों के बारे में पता चलता है तो ज्यादा खाना बनाते हैं। कहती हैं कि संस्कार हमारी अनमोल विरासत हैं, जिनसे समाज एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। यही तानाबाना हमें एक-दूसरे की फिक्र में शामिल करता है। बोली कि मैंने अपनी सास से सीखा। अब यही सीख अपनी बेटी पूजा व सौरभ को देती हूँ। उनके हाथ ही जरूरतमंदों का खाना पैक कराती हूँ ताकि उन्हें अपनी जिम्मेदारी का एहसास रहे।

आज की महत्वपूर्ण घटनाएं

1812-युद्ध के दौरान अमेरिका फ्रिगेट यूनाइटेड स्टेट्स ने ब्रिटिश पोत मैसिडोनिया पर क़ब्ज़ा कर लिया।
1917-बोल्शेविक (कम्युनिस्टों) व्लादिमीर इलिच लेनिन ने रूस में सत्ता हथिया ली।
1920-राजस्थान के भूतपूर्व छठवें मुख्यमंत्री बरकतुल्लाह ख़ान का जन्म।
1924-भारत में ब्रिटिश अधिकारियों ने सुभाषचंद्र बोस को गिरफ्तार कर दो साल के लिए जेल भेज दिया।
1937-हिन्दी फिल्मों की प्रसिद्ध पार्श्वगायिका शारदा का जन्म।
1951-भारत में पहले आम चुनाव की शुरूआत हुई।
1962-अमेरिकी लेखक जॉन स्टीनबेक को साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया।
1964-अवादी कारखाने में पहले स्वदेशी टैंक 'विजयंत' का निर्माण किया गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-24)

गतांक से आगे...

हे निष्पाप ! जो अति भाग्यवान् पुरुष सप्तमी तुर्यगावस्था को प्राप्त कर लेते हैं, वे आत्मा में रमणशील महात्मा महत्पद (परमपद) को ग्रहण कर चुके हैं। ऐसी जीवन्मुक्त आत्मायें सुख-दु:ख के अनुभवों से सर्वथा निर्लिप्त रहती हैं। वे कर्तव्य कर्मों में संलग्न रहकर भी उनसे लिप्त नहीं होतीं।

अपने निकटस्थ परिजनों के सचेत किये जाने पर जैसे मनुष्य सोते से जाग पड़ता है, वैसे ही वे ज्ञानीजन सत्कर्मों में संलग्न रहकर सनातन आचरण की परम्परा निभाते हैं। इन सात भूमिकाओं को यदि पशु और म्लेच्छ आदि भी जान लें, तो वे भी देह रहते या देहत्याग के पश्चात् मुक्ति के अधिकारी हो जाते हैं, इसमें सन्देह की गुंजायश नहीं हृदय-ग्रन्थियों का खुल जाना ही ज्ञान है और ज्ञान प्राप्ति हो जाने पर मुक्ति सुनिश्चित है।

जैसे मृग तृष्णा में जल की भ्रान्ति होती है, इसे ही अविद्या कहा गया है, अविद्या का नाश ही मुक्ति है। परमपद के अधिकारी वही हैं, जो मोहरूपी सागर से पार हो चुके हैं। आत्मसाक्षात्कार के प्रयत्नों में संलग्न पुरुष ही इन भूमिकाओं में प्रतिष्ठित होते हैं। मन की पूर्णतया शान्ति के साधन को योग कहा गया है।

योग की इन सात भूमिकाओं को ज्ञानभूमि के अन्तर्गत ऊपर बतलाया जा चुका है। इन भूमिकाओं का लक्ष्य है- ब्रह्मपद की प्राप्ति। जहाँ तेरा मेरा और अपने परायेपन का संकीर्ण भाव मिट जाता है, उस समय न तो भावात्मक बुद्धि अवशेष रहती है और न ही भाव अभाव का चिन्तन हो पाता है; क्योंकि जागतिक वस्तुओं की सत्ता आत्मसंवेदन मात्र है, इससे अतिरिक्त कुछ नहीं। सर्वथा शान्त, आलम्बन रहित, आकाशस्वरूप, शाश्वत, शिव, दोषरहित, भासमान रहित, अनिर्वचनीय, कारणरहित, न सत्, न असत्, न मध्य, सम्पूर्णतारहित और सम्पूर्ण भी, मन-वाणी से अग्राह्य, पूर्ण से पूर्ण, सुख से सुखतरस्वरूप, संवेदन की पहुँच से परे, पूर्ण शान्त, आत्मानुभूतिरूप तथा व्यापकता यह ब्रह्म का स्वरूप है। सभी पदार्थों की सत्ता के अतिरिक्त यह चैतन्य भिन्न नहीं है और इसकी प्राप्ति का आधार एक मात्र सम्यक् अनुभूति है।

द्रष्टा और दृश्य का सम्बन्ध हो जाने पर मध्य में दृष्टि का जो स्वरूप परिलक्षित होता है, वह द्रष्टा, दृश्य और दर्शन से भिन्न साक्षात्काररूप स्थिति ही है। चित्त के एक देश से दूसरे में प्रवेश करने के मध्य जो अवस्था होती है, उस जड़तारहित चेतनरूप चिन्तन में निरन्तर तन्मय रहना चाहिए। जाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति से परे जड़- चेतन विहीन जो सनातनरूप है, उसी में हमेशा स्थित रहो। जड़ता ही हृदय की पाषाणवत् स्थिति है, % उसका परित्याग करने पर जो अमनस्क अवस्था है, उसी में सदैव लीन रहो। चित्त को दूर से ही त्यागकर जिस अवस्था में हो, उसी में स्थिर रहो। परमात्म तत्त्व से सर्वप्रथम मन की उत्पत्ति हुई, पश्चात् उसी मन से विकल्पजालरूप यह संसार उत्पन्न हुआ।

क्रमश: ...

विद्यार्थी की सेवा और समर्पण आजीवन रही बेमिसाल

श्याम सुंदर भाटिया

गणेश युगीन पत्रकारिता हिंदी पत्रकारिता का स्वर्णिम काल माना जाता है। हिंदी पत्रकारिता के पितामह गणेश शंकर विद्यार्थी के बताए या दिखाए रास्ते पर चलकर ही पत्रकारों ने देश और समाज की सेवा की अलख जगाई है। प्रताप के पहले ही अंक में उन्होंने 'प्रताप की नीति' नामक लेख में राष्ट्रीय पत्रकारिता की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसे आज भी आदर्श पत्रकारिता के घोषणा पत्र के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने लिखा- समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है। हम अपने देश और समाज की सेवा के पवित्र काम का भार अपने ऊपर लेते हैं। हम अपने भाइयों और बहनों को उनके कर्तव्य और अधिकार समझाने का यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। राजा और प्रजा में, एक जाति और दूसरी जाति में, एक संस्था और दूसरी संस्था में बैर और विरोध, अशांति और असंतोष न होने देना हम अपना परम कर्तव्य समझेंगे।

26 अक्टूबर, 1890 को अपनी ननिहाल इलाहाबाद में शिक्षक जय नारायण श्रीवास्तव के घर जन्मे हिंदी पत्रकारिता के पुरोधा विद्यार्थी जी बीसवीं सदी-1890-1931 के चुनिंदा गतिशील राष्ट्रीय व्यक्तित्वों में शुमार होते हैं। हिंदी राष्ट्रीय पत्रकारिता के भगीरथ विद्यार्थी जी की वैचारिक अग्निदीक्षा लोकमान्य तिलक के विचार-लोक में हुई तो शब्द एवं भाषा के संस्कार उन्होंने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के सानिध्य में प्राप्त किए। हिंदी पत्रकारिता के पितामह गणेश शंकर विद्यार्थी जी का पत्रकारिता के सफर का श्रीगणेश इलाहाबाद से हुआ। 'स्वराज' अखबार से उर्दू में लिखना शुरू किया, इसी बीच पंडित सुंदरलाल के सानिध्य में वह हिंदी की ओर आकर्षित हुए। एक जर्नलिस्ट के संग-संग लेखक के रूप में उनकी विधिवत शुरुआत 2 नवंबर, 1911 से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की ओर से संपादित 'सरस्वती' पत्रिका से हुई। द्विवेदी जी और 'सरस्वती' के सानिध्य में उन्हें अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्कारों को विकसित करने का अवसर मिला तो मदन मोहन मालवीय के अखबार 'अभ्युदय' के जरिए उन्होंने अपने राजनीतिक विचारों को आकार दिया। अन्तत: कानपुर में 9 नवंबर, 1913 को 'प्रताप' की नींव पड़ी। इस महायज्ञ में विद्यार्थी जी के संग-संग शिव नारायण मिश्र, नारायण प्रसाद अरोड़ा और यशोदा नंदन भी शामिल हुए।

हिंदी पत्रकारिता के प्रति विद्यार्थी जी का संकल्प, सेवा और समर्पण बेमिसाल रहा है। सत्याग्रह, जुलूस और सभाओं से लेकर दलीय चुनावी राजनीति में नेतृत्व संभाला, पर अपनी पत्रकारिता को दलीय राजनीति का मोहरा कभी नहीं बनने दिया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से डटकर लोहा लिया। लेखनी के माध्यम से जनजागरण का उद्घोष किया। विद्यार्थी जी पत्रकारिता कर्म में सदा एक मोमबत्ती की मानिंद जलते रहे। जन आंदोलन को आगे बढ़ाने के पुरस्कार स्वरूप बार-बार कारावास तक भोगा। उन्होंने अपने जीवन में पांच जेल यात्राएं की। इनमें तीन पत्रकारिता और दो राजनीतिक भाषणों के चलते हुईं। पत्रकारिता में अपने उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा- किसी की प्रशंसा या अप्रशंसा, किसी की प्रसन्नता या अप्रसन्नता, किसी की घुड़की या धमकी हमें अपने सुमार्ग से विचलित न कर सकेगी। सत्य और न्याय हमारे भीतरी पथ प्रदर्शक होंगे। सांप्रदायिक और व्यक्तिगत झगड़ों से 'प्रताप' सदा अलग रहने की कोशिश करेगा। प्रताप का जन्म किसी विशेष सभा, संस्था, व्यक्ति या मत के पालन-पोषण, रक्षण या विरोध के लिए नहीं हुआ है, किन्तु उसका मत स्वातंत्र्य विचार और उसका धर्म सत्य होगा। हम जानते हैं कि हमें इस काम में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

इजरायल के वो अहसान जो कभी नहीं भूलेगा भारत

अभिनय आकाश

मध्य पूर्व में एकअगर इतिहास पर हम नजर डालें तो पता चलेगा कि भारत और इजरायल एक-दूसरे का आजमाया हुआ साथी है। बड़ी लड़ाई चल रही है। इजरायल और चरमपंथी ग्रुप हमास के बीच युद्ध छिड़ा हुआ है। इसमें भारत के रोल को लेकर सब तरफ से सवाल पूछे जा रहे हैं। अगर इतिहास पर हम नजर डालें तो पता चलेगा कि भारत और इजरायल एक-दूसरे का आजमाया हुआ साथी है। जब जब हमारे देश पर संकट आया भारत ने इजरायल की मदद की है। हर युद्ध के मौके पर इजरायल ने भारत संग दोस्ती निभाई। ऐसे वक्त में मदद की जब बाकी दुनिया के देशों से उसे बहुत मदद नहीं मिल रही थी। इजरायल ने आगे बढ़ते हुए भारत की मदद का हाथ बढ़ाया। भारत अपने आप को 1965 में एक और जंग के मुहाने पर खड़ा पाता है। भारत और पकिस्तान के बीच छिड़े युद्ध में इजरायल एक बार फिस से हमारा मददगार साबित होता है। इस युद्ध में हमें हथियार मुहैया करवाता है। इंदिरा गांधी की सरकार ने भी 1971 में इसी तरह की मांग की थी जब भारत और पाकिस्तान के बीच तीसरा युद्ध होता है। जिसके नतीजे में पूर्वी पाकिस्तान एक स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश के रूप में सामने आता है। उस समय इजरायल हथियारों की कमी से जूझ रहा था। लेकिन तत्कालीन इजरायली पीएम गोल्डा मेयर ने ईरान को ध्यान में रखकर तैयार

किए गए हथियारों को भेजने का फैसला किया। पीएम मोदी के शासनकाल में इजरायल और भारत के रिश्ते मजबूत हुए हैं। दोनों देश बड़े व्यापारिक साझेदार हैं। भारत एशिया में इजरायल का तीसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है और विश्व स्तर पर सातवां सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। भारत इजरायल का बड़ा रक्षा उपकरण आयातक देश है। भारत का 40 फीसदी रक्षा उपकरण और हथियार इजरायल से ही आता है।

भारत और इजरायल को एक-दूसरे के यहां आधिकारिक तौर पर दूतावास खोलने में 42 साल लग गए। 1992 में प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की सरकार के दौरान दोनों के बीच अहम कूटनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई। इजरायल ने मुंबई में अपना वाणिज्य दूतावास खोला। दोनों के रिश्तें इतने घनिष्ठ नहीं थे लेकिन जरूरत के वक्त इजरायल ने भारत की हमेशा मदद की। 1968 में जब भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ का गठन रामनाथ काव के नेतृत्व में हुआ तो उन्होंने इंदिरा गांधी से कहा कि हमें इजरालय के साथ अपने संबंध बेहतर बनाने चाहिए व वहां की खुफिया एजेंसी मोसाद की मदद लेनी चाहिए। इंदिरा गांधी इसके लिए राजी हो गईं। जिसका लाभ बंग्लादेश मुक्ति संग्राम के वक्त भारत को प्राप्त हुआ।

1999 में कारगिल की लड़ाई के दौरान भारत और इजरायल के बीच सैन्य सहयोग एक नए स्तर पर पहुंच गया। इजरायल ने भारत को खुफिया जानकारी के साथ मोर्टार, निगरानी करने वाले ड्रोन और लेजर गाइडेड बम मुहैया कराए इससे भारत को ये लड़ाई जीतने में मदद मिली। 1999 के करगिल युद्ध में भी इजरायल ने भारत को एरियल ड्रोन, लेसर गाइडेड बम, गोला बारूद और अन्य हथियार बेचे। संकंट के समय इजरायल हमेशा हथियार आपूर्तिकर्ता देश के रूप में स्थापित हुआ। भारत हर साल 67 अरब से 100 अरब तक के सैन्य उत्पाद इजरायल से आयात करता है। जब पोखरण में 1998 में परमाणु परीक्षण किया गया तब इजरायल ने उसकी कोई आलोचना नहीं की। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने भी इजरायल के साथ संबंधों को तरजीह दी। पिछले कुछ सालों में दोनों देशों के बीच संबंधों में मजबूती आई है।

यासिर अराफात अपनी हवाई यात्रा को बहुत गुप्त रखते थे और मेजबान देश को पहले से नहीं बताया जाता था कि वो वहां आने वाले हैं। उनका अक्सर भारत आना होता था। वो इंदिरा गांधी को अपनी बहन मानते थे। राजीव गांधी के साथ भी उनकी बहुत घनिष्टता थी। कहा जाता है कि एक बार उन्होंने भारत में राजीव गांधी के लिए चुनाव प्रचार करने की पेशकश की थी।

ये 1918 की बात है। सितंबर का महीना प्रथम विश्व युद्ध का दौर। वर्तमान के इजरायल का प्रमुख शहर और बंदरगाह जिसकी मुक्ति के बिना इजरायल की आजादी संभव नहीं थी। इजरायल पर ऑटोमन साम्राज्य (तुर्की) का कब्ज़ा था। हायफ़ा एक रणनीतिक बंदरगाह शहर था जिसको जीतना अंग्रेजों के लिए असंभव सा था। अंग्रेजों ने जब हथियार डाल दिए तो फिर बारी आई भारतीय सैनिको की जिन्होंने इजरायल के शहर को बचाने में अहम भूमिका निभाई। भारतीय फौज की तीन घुड़सवार टुकड़ियों ने कमान संभाली जिनमें शामिल थे जोधपुर लांसर्स, मैसूर लांसर्स और हैदराबाद लांसर्स। इनका नेतृत्व जोधपुर लांसर्स के मेजर दलपत सिंह ने किया। युद्ध के दौरान हुई इस जंग-ए-आजादी में 900 से अधिक भारतीय सैनिक शहीद हुए थे। 23 सितंबर 1918 को भारत के वीरों ने एक फौजी ताकत को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। दिल्ली का तीन मूर्ति चौक इन्हीं वीर सपूतों की याद में बनवाया गया है।

हिन्द स्वराज्य

शिक्षा (भाग-5)

गतांक से आगे...

यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे इन्साफ पाना हो, तो मुझे अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना चाहिए! बैरिस्टर होने पर मैं स्वभाषा में बोल ही नहीं सकता! दूसरे आदमी को मेरे लिए तरजुमा कर देना चाहिए! यह कुछ कम दंभ है? यह गुलामी की हद नहीं तो और क्या है? इसमें मैं अंग्रेजों का दोष निकालूँ या अपना? हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग ही हैं। राष्ट्र की हाय अंग्रेजों पर नहीं पड़ेगी, बल्कि हम पर पड़ेगी। लेकिन मैंने आपसे कहा कि मेरा जवाब हाँ और ना दोनों है। हाँ कैसे सो मैंने आपको समझाया। अब ना कैसे यह बताता हूँ। हम सभ्यताके रोगमें ऐसे फँस गये हैं कि अंग्रेजी शिक्षा बिलकुल लिये बिना अपना काम चला सकें ऐसा समय अब नहीं रहा। जिसने वह शिक्षा पायी है, वह उसका अच्छा उपयोग करे। अंग्रेजों के साथ के व्यवहार में ऐसे हिन्दुस्तानियों के साथ के व्यवहार में जिनकी भाषा हम समझ न सकते हों और अंग्रेज खुद अपनी सभ्यता से कैसे परेशान हो गये हैं यह समझने के लिए अंग्रेजी का उपयोग किया जाय। जो लोग अंग्रेजी पढ़े हुए हैं उनकी संतानों को पहले तो नीति सिखानी चाहिए, उनकी मातृभाषा सिखानी चाहिए और हिन्दुस्तान की एक दूसरी भाषा सिखानी चाहिए। बालक जब पुख्ता (पक्की) उम्र के हो जायँ तब भले ही वे अंग्रेजी शिक्षा पायें, और वह भी उसे मिटाने के इरादे से, न कि उसके जरिये पैसे कमाने के इरादे से। ऐसा करते हुए भी हमें यह सोचना होगा कि अंग्रेजी में क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं सीखना चाहिए। कौन से शास्त्र पढ़ने चाहिए, यह भी हमें सोचना होगा। थोड़ा विचार करने से ही हमारी समझ में आ जायेगा कि अगर अंग्रेजी डिग्री लेना हम बन्द कर दें, तो अंग्रेज हाकिम चौंकेंगे।

क्रमश: ...

छत्तीसगढ़ का लोक उत्सव दशहरा

प्रो. अश्विनी केशरवानी

दशहरा भारत का एक प्रमुख लोकप्रिय त्योहार है। इसे देश के कोने कोने में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। वास्तव में यह त्योहार असत्य के उपर सत्य का और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। श्रीराम सत्य के प्रतीक हैं। रावण असत्य के प्रतीक हैं। विजय प्राप्त करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है और हमें शक्ति मां भवानी की पूजा-अर्चना से मिलती है। इसके लिए अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमीं तक मां दुर्गा की पूजा-अर्चना करते हैं और दसमीं को दस सिर वाले रावण के उपर विजय प्राप्त करते हैं। कदाचित् इसी कारण दशहरा को ''विजयादशमी'' कहा जाता है। वास्तव में रावण अजेय योद्धा के साथ साथ प्रकांड विद्वान भी थे। उन्होंने अपने बाहुबल से देवताओं, किन्नरों, किरातों और ब्रह्मांड के समस्त राजाओं को जीतकर अपना दास बना लिया था। मगर वे अपनी इंद्रियों कों नहीं जीत सके तभी तो वे काम, क्रोध, मद और लोभ के वशीभूत होकर कार्य करते थे। यही उन्हें असत्य के मार्ग में चलने को मजबूर करते थे। इसी के वशीभूत होकर उन्होंने माता सीता का हरण किया और श्रीराम के हाथों मारे गये। श्रीराम की विजय की खुशी में ही लोग इस दिन को ''दशहरा'' कहने लगे और प्रतिवर्ष रावण के प्रतिरूप को मारकर दशहरा मनाने लगे।

यहां यह बात विचारणीय है कि आज हम गांव गांव और शहर में इस दिन रावण की आदमकद प्रतिमा बनाकर जलाकर दशहरा मनाते हैं। इस दिन रावण की प्रतिमा को जलाकर घर लौटने पर मां अपने पति, बेटे और नाती-पोतों तथा रिश्तेदारों की आरती उतारकर दही और चांवल का तिलक लगाती है और मिष्ठान खाने के लिए पैसे देती है। कई घरों में नारियल देकर पान-सुपारी खिलाने का रिवाज है। इस दिन अपने मित्रों, बड़े बुजुर्गों, छोटे भाई-बहनों, माताओं आदि सबको ''सोनपत्ति'' देकर यथास्थिति आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। लोग अपने मित्रों से गले मिलकर रावण मारने की बधाई देते हैं। कहीं कहीं दशहरा के पहले 'रामलीला' का मंचन होता है और रामराज्य की कल्पना की जाती है। रायगढ़ में मथुरा की नाटक मंडली आकर रामलीला का मंचन करती थी। छत्तीसगढ़ में रामलीला के लिए अकलतरा और कोसा बहुत प्रसिद्ध था। इसी प्रकार रासलीला के लिए नरियरा और नाटक के लिए शिवरीनारायण बहुत प्रसिद्ध था। टी.बी. की चकाचौंध ने रामलीला, रासलीला और नाटकों के मंचन को प्रभावित ही नहीं किया बल्कि समाप्त ही कर दिया है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

दशहरा के पूर्व शक्ति की साधना की जाती है। विभिन्न स्थानों में मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापित की जाती है। आज दुर्गा की झांकियों के लिए बिलासपुर का नाम कलकत्ता के बाद आने लगा है। नवरात्रि में पूरा बिलासपुर दुर्गामय हो जाता है। राजे-रजवाड़े के समय मां दुर्गा की प्रतिमा सिापित नहीं किये जाते थे बल्कि देवी मंदिरों में जंवारा बोया जाता था और विशेष पूजा-अर्चना की जाती थी। देवी को प्रसन्न करने के लिए बलि दी जाती थी। छत्तीसगढ़ के प्राय: सभी रियासतों और जमींदारी में कोई न कोई देवी प्रतिष्ठित हैं जो उनकी 'कुलदेवी' हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि देवियों की पूजा से राजा जहां शक्ति संपन्न होता था वहीं रियाया की सुरक्षा के शक्ति संचय आवश्यक भी था। वे अपनी मान्यता के अनुसार देवी के नाम पर अपनी राजधानी का नामकरण किये हैं। चंद्रपुर की चंद्रसेनी देवी, दंतेवाड़ा की दंतेश्वरी देवी, सारंगढ़ की सारंगढ़हीन देवी और संबलपुर की समलेश्वरी देवी आदि।

छत्तीसगढ़ में प्रमुख रूप से महामाया और समलेश्वरी देवी प्रतिष्ठित हैं। वास्तव में ये दोनों देवी दो प्रमुख रियासत क्रमश: रत्नपुर और संबलपुर की कुलदेवी हैं। छत्तीसगढ़ की रियासतें और जमींदारी या तो रत्नपुर से जुड़ी थी या फिर संबलपुर रियासत से। यहां के सामंत मित्रतावश वहां की देवियों को अपनी राजधानी में स्थापित करके उन्हें अपनी कुलदेवी मान लिए। इसके अलावा यहां अनेक देवियां क्षेत्रीयता का बोध कराती हैं, जैसे- सरगुजा की सरगुजहीन दाई, चंद्रपुर की चंद्रसेनी देवी, डोंगरगढ़ की बमलेश्वरी देवी, अड़भार की अष्टभुजी देवी, कोरबा की सर्वमंगला देवी, दंतेवाड़ा की दंतेश्वरी देवी, जशपुर की कालीमाई आदि। इन देवियों की प्राण प्रतिष्ठा कई रियासतों और जमींदारी के निर्माण की गाथा से जुड़ी हैं। यहां नवरात्रि में देवियों की विशेष पूजा-अर्चना और दशहरा मनाने की विशिष्ट परंपरा रही है जो आज काल कवलित होती जा रही है। कहीं कहीं इसके अवशेष अवश्य देखे जा सकते हैं।

सक्ती राज परिवार में आज भी होती है लकड़ी के तलवार की पूजा:-

इतिहास के पन्नों को उलटने से पता चलता है कि सक्ती रियासत यहां के शासक के शौर्य के प्रदर्शन के फलस्वरूप निर्मित हुआ था। पूर्व में यह क्षेत्र संबलपुरराज के अंतर्गत था। यहां के शासक संबलपुर रियासत की सेना में महत्वपूर्ण ओहदेदार थे और अपनी शूर वीरता के लिए बहुत चर्चित थे। यह दो जुड़वा भाई हरि और गुजर की कहानी है जो लकड़ी के तलवार को अपना हथियार बनाये थे। उसी तलवार से शिकार भी करते थे। जब संबलपुर के राजा कल्याणसाय को पता चला कि उनकी विशाल सेना में दो अधिकारी ऐसे हैं जो लकड़ी की तलवार से लड़ते हैं। तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ था। वे विचार करने लगे कि कहीं हमारी सेना का यह तौहीन तो नहीं है ? उन्होंने तत्काल आदेश दिया कि इस वर्ष विजयादशमी पर्व में मां समलेश्वरी में भैंस की बलि उन्हीं जुड़वा भाईयों की तलवार से दी जायेगी। शर्त यह होगी कि भैंस का सिर लकड़ी के तलवार के एक ही वार से कटना चाहिये अन्यथा दोनों भाईयों का सिर कलम कर दिया जायेगा...?

दशहरा के दिन संबलपुर में विशाल जन समुदाय के बीच राजा कल्याणसाय ने देखा कि हरि और गुजर ने अपने लकड़ी के तलवार से एक ही वार से भैंस की सिर काट डाला, अविश्वसनीय किंतु सत्य। विशाल जन समुदाय ने करतल ध्वनि से दोनों भाईयों का स्वागत किया। राजा उनके शौर्य से प्रसन्न होकर घोषणा की कि 'तुम दोनों एक ऐसे क्षेत्र का विस्तार करो जो शक्ति का प्रतीक हो और जिसके तुम दोनों जमींदार होगे।' तब दोनों भाईयों ने एक ऐसा करतब दिखाया जो सबको पुन: आश्चर्य में डाल दिया। उन्होंने राजा बहादुर से निवेदन किया कि 'हम दोनों सूर्योदय से सूर्यास्त तक पैदल जितनी भूमि नाप सकेंगे, हम उसी भूमि के अधिकारी होंगे।' उनकी बात राजा ने मान ली। शर्त के मुताबिक हरि और गुजर दिन भर में 138 वर्ग मील का क्षेत्र पैदल चलकर तय किया और शौर्य के प्रतीक ''सक्ती रियासत'' की स्थापना की। उनके शौर्य गाथा में एक जनश्रुति और प्रचलित है जिसके अनुसार दोनों भाई एक बार निहत्थे एक आदमखोर शेर से लड़े थे। रियासत बनने के बाद सक्ती जमींदारी में प्रजा बड़ी सुखी थी। आगे चलकर यहां के जमींदार रूपनारायण सिंह को अंग्रेजों ने सन् 1892 में ''राजा बहादुर'' का सनद प्रदान किया। आज भी यहां दशहरा पर्व में देवी की पूजा-अर्चना और लकड़ी के तलवार की पूजा की जाती है।

सारंगढ़ में गढ़ भेदन की परंपरा:-

वर्तमान सारंगढ़ पूर्व में सारंगपुर कहलाता था। सारंग का शाब्दिक अर्थ है-बांस। अर्थात् यहां प्राचीन काल में बांसों का विशाल जंगल था। कहा तो यहां तक जाता है कि यहां के सैनिकों के हथियार भी बांस के हुआ करते थे। यहां के राजा के पूर्वज बालाघाट जिलान्तर्गत लांजी से पहले फूलझर आये। यहां के जमींदार उनके रिश्तेदार थे। बाद में श्री नरेन्द्रसाय को संबलपुर के राजा ने सैन्य सेवा के बदले सारंगढ़ परगना पुरस्कार में दिया था। आगे चलकर वे सारंगढ़ के जमींदार बने थे। यहां के राजा कल्याणसाय (सन् 1736 से 1777) हुये, जिन्हें मराठा शासक ने ''राजा'' की पदवी प्रदान की थी। यहां के राजा संग्रामसिंह (सन् 1830 से 1872) को अंग्रेजों ने ''फ्यूडेटरी चीफ'' बनाया था।

यहां के राजा की कुलदेवी ''सम्लाई देवी'' है, जो गिरि विलास पैलेस परिसर में आज भी प्रतिष्ठित है। प्राप्त जानकारी के अनुसार समलेश्वरी देवी की स्थापना सन् 1692 में की गयी थी। सारंगढ़ छत्तीसगढ़ का उड़ीसा प्रांत से लगा सीमांत तहसील मुख्यालय है। यहां छत्तीसगढ़ी और उड़िया परंपरा आज भी देखने को मिलती है। यहां के प्रमुख त्योहारों में रथयात्रा और दशहरा है। रथयात्रा में जहां भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा जी सवारी पूरे नगर में बड़े उल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है वहीं दशहरा में गढ़ भेदन की परंपरा यहां के मुख्य आकर्षक हैं। शिवरीनारायण रोड में नगर से 4 कि.मी. की दूरी पर खेलभाठा में गढ़ भेदन किया जाता है। यहां चिकनी मिट्टी का प्रतीकात्मक गढ़ (मिट्टी का ऊंचा टीला) बनाया जाता है और उसके चारों ओर पानी भरा होता है। गढ़ के सामने राजा, उसके सामंत और अतिथियों के बैठने के लिए स्टेज बनाया जाता था, जिसके अवशेष यहां आज भी मौजूद है। विभिन्न ग्रामों से दशहरा मनाने आये ग्रामीण जन इस गढ़ भेदन में प्रतियोगी होते थे। वे इस मिट्टी के गढ़ में चढ़ने का प्रयास करते और फिसल कर पानी में गिर जाते हैं। पानी में भीगकर पुन: गढ़ में चढ़ने के प्रयास में गढ़ में फिसलन हो जाता था। बहुत प्रयत्न के बाद ही कोई गढ़ के शिखर में पहुंच पाता था और विजय स्वरूप गढ़ की ध्वज को लाकर राजा को सौंपता था। करतल ध्वनि के बीच राजा उस विजयी प्रतियोगी को तिलक लगाकर नारियल और धोती देकर सम्मानित करते थे। फिर राजा की सवारी राजमहल में आकर दरबारेआम में बदल जाती थी जहां दशहरा मिलन होता था। ग्रामीणजन अपने राजा को इतने करीब से देखकर और उन्हें सोनपत्ती देकर, उनके चरण वंदन कर आल्हादित हो उठते थे। सहयोगी सामंत, जमींदार और गौटिया नजराना पेश कर अपने को धन्य मानते थे। अंत में मां समलेश्वरी देवी की पूजा अर्चना करके खुशी खुशी घर को लौटते थे। राजा नरेशचंद्र सिंह ने यहां के दशहरा उत्सव को अधिक आकर्षक बनाने के लिए मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्रियों को आमंत्रित किया करते थे जो गढ़ भेदन के समय स्टेज में राजा के बगल में बैठते थे। यहां के दशहरा उत्सव में भाग लेने वाले मुख्य मंत्रियों में डॉ. कैलासनाथ काटजू, श्री भगवंतराव मंडलोई, श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र, राजा गोविंदनारायण सिंह और पंडित श्यामाचरण शुक्ल प्रमुख थे। यहां भी बांस के हथियारों की पूजा की जाती है।

चंद्रपुर में नवमीं को दशहरा:-

उड़ीसा के संबलपुर रियासत के अंतर्गत चंद्रपुर एक छोटी जमींदारी थी। जब मध्यप्रदेश बना तब चंद्रपुर को बिलासपुर जिलान्तर्गत जांजगीर तहसील में सम्मिलित किया गया था जो महानदी और मांड नदी के तट पर स्थित है। यहां की अधिष्ठात्री चंद्रसेनी देवी हैं। इस मंदिर की स्थापना के बारे में एक किंवदंति प्रचलित है। जिसके

अनुसार चंद्रसेनी देवी, सरगुजा की सरगुजहीन दाई और संबलपुर की समलेश्वरी देवी की छोटी बहन है। समलेश्वरी देवी रायगढ़ और सारंगढ़ में भी विराजमान हैं। एक बार किसी बात को लेकर चंद्रसेनी देवी नाराज होकर सरगुजा को छोड़कर निकल जाती हैं। सरगुजा की सीमा को पार करके उदयपुर (वर्तमान धरमजयगढ़) होते हुए रायगढ़ आ जाती है। यहां समलेश्वरी देवी उन्हें रोकने का बहुत प्रयास करती है लेकिन चंद्रसेनी देवी यहां भी नहीं रूकती और दक्षिण दिशा में आगे बढ़ जाती है। रास्ते में वह सोचने लगती है कि अगर सारंगढ़ में समलेश्वरी दीदी पुन: रोकेगी तो मैं क्या करूंगी..? इस प्रकार सोचते हुए वह महानदी के तट में पहुंच गई और वहां विश्राम करने लगी। सफर की थकान से उन्हें गहरी नींद आ गई। एक बार संबलपुर के राजा की सवारी महानदी पार करते समय और अनजाने में राजा के पैर की ठोकर मिट्टी से दबी चंद्रसेनी देवी की लग गई जिससे उनकी निद्रा खुल गई। उन्होंने राजा को स्वप्न में निर्देश दिया कि तुमने मेरा अपमान किया है अगर तुमने महानदी के तट पर एक मंदिर निर्माण कराकर मेरी स्थापना नहीं करायी तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायेगा..? तत्काल राजा ने मूर्ति को निकलवाकर महानदी के तट पर टीले के उपर एक मंदिर बनवाकर चंद्रसेनी देवी की स्थापना विधिवत करायी। आगे चलकर उनके नाम पर चंद्रपुर नगर बसा। आज चंद्रसेनी देवी छत्तीसगढ़ और उड़ीसा की अधिष्ठात्री देवी हैं। यहां प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से नवरात्र पर्व में पूजा-अर्चना की जाती है। यहां ''जेवरहा परिवार'' को पूजा करने का अधिकार मिला है। अष्टमी के दिन यहां बलि देने की परंपरा है। यहां शुरू से ही भैंसा की बलि दी जाती है। और नवमी को विजय खुशी मनाते हुए विजयादशमीं (दशहरा) मनाया जाता है।

पूजा उत्सव सरगुजा रियासत का प्रमुख आकर्षण:-

सरगुजा रियासत में दशहरा उत्सव वास्तव में सरगुजहीन और महामाया देवी की पूजा-अर्चना का पर्व होता है। यहां दो देवियों-सरगुहीन (समलेश्वरी) और महामाया देवी की पूजा एक साथ होती है। इस प्रकार दो देवियों की पूजा एक साथ कहीं देखने को नहीं मिलता। शक्ति संचय का यह नवरात्र पर्व बड़ी श्रद्धा से यहां मनाया जाता है। अश्विन शुक्ल परवा के दिन महामाया देवी के मंदिर में कलश स्थापना का कार्य पूरा होता है। इसे ''पहली पूजा'' कहा जाता है। इसी दिन से सरगुजा रियासत के अंतर्गत आने वाले राजा, जमींदार, गौंटिया, किसान और ग्रामीण जन यहां इकठ्ठा होने लगते हैं। अष्टमी के दिन राजा की सवारी का विशाल जुलूस ''बलि पूजा'' के लिए नगर भ्रमण के बाद महामाया मंदिर पहुंचती थी। महामाया देवी को प्राचीन काल में नरबलि देने का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में मिलता है। बाद में उसे बंद कर दिया गया और पशु बलि दी जाने लगी। इस दिन को ''महामार'' कहा जाता था। फिर दशहरा को राजा की सवारी पुन: देवी दर्शन कर नगर भ्रमण करती हुई राजमहल परिसर में पहुंचकर ''मिलन समारोह'' में परिवर्तित हो जाता था। उस समय राज परिवार के सभी सदस्य, अन्य सामंत, जमींदार, ओहदेदार विराजमान होते थे। ग्रामीणजन सोनपत्ती देकर उन्हें बधाई देते थे। उस दिन सरगुजा के लिए अविस्मरणीय होता था जिसका स्मरण कर आज भी वहां के लोग रोमांचित हो उठते हैं। सरगुजा में देवी पूजा का वर्णन सुप्रसिद्ध कवि पंडित शुकलाल पांडेय ने ''छत्तीसगढ़ गौरव'' में की है:- लखना हो शक्ति उपासना तो चले सिरगुजा जाईये।।

रत्नपुर जहां नरबलि दी जाती थी:-

रत्नपुर कलपुरी राजाओं की वैभवशाली राजधानी थी। यह नगर महामाया देवी की उपस्थिति के कारण ''शक्तिपीठ'' कहलाता है। रत्नपुर का राजधानी के रूप में निर्माण महामाया देवी के आदेश-आशीष का ही प्रतिफल है। तत्कालीन साहित्य में उपलब्ध जानकारी के अनुसार रत्नपुर में महामाया देवी की मूर्ति को मराठा सैनिकों ने बंगाल अभियान से लौटते समय सरगुजा से लाकर प्रतिष्ठित किया था। राजा की सरगुजा में महामाया देवी की पूर्ति बहुत अच्छी लगी और वे उन्हें अपने साथ नागपुर ले जाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से वे उस मूर्ति को वहां से उठाना चाहे लेकिन मूर्ति टस से मस नहीं हुई। हारकर राजा देवी के सिर को ही काटकर अपने साथ ले आये लेकिन उसे रत्नपुर से आगे नहीं ले जा सके और रत्नपुर में ही स्थापित कर दिये। सरगुजा में आज भी सिरकटी महामाया देवी की मूर्ति है जिसमें प्रतिवर्ष मोम (अथवा मिट्टी) का सिर बनाया जाता है। रत्नपुर में नवरात्र बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यहां आज भी हजारों मनोकामना ज्योति कलश प्रज्वलित की जाती है। एक अन्य किंवदंति में राजा रत्नदेव शिकार करते रास्ता भटककर यहां के जंगल में आ गये और एक पेड़ की टहनी में रात गुजारी। रात्रि में उन्हें पेड़ के नीचे महामाया देवी का दरबार देखने को मिला। बाद में उन्हें स्वप्नादेश हुआ कि यहां अपनी राजधानी बनाओ। तब राजा रत्नदेव से यहां अपनी राजधानी बसायी और रत्नपुर नाम दिया। प्राचीन काल में यहां नरबलि देने की प्रथा थी जिसे राजा बहरसाय ने बंद करा दिया। लेकिन पशुबलि आज भी दी जाती है।

बस्तर में दंतेश्वरी देवी की शोभायात्रा:-

बस्तर का दशहरा अन्य स्थानों से भिन्न होता है क्योंकि यहां दशहरा में दशानन रावण का वध नहीं बल्कि बस्तर की अधिष्ठात्री दंतेश्वरी माई की विशाल शोभायात्रा निकलती है। दशहरा आमतौर पर अयोध्यापति राजा राम की रावण के उपर विजय का पर्व के रूप में मनाया जाता है लेकिन यहां ऐसा कुछ नहीं होता। वास्तव में बस्तर का ऐतिहासिक दशहरा यहां के राजवंश की गौरवगाथा का जीवन्त दस्तावेज है। ऐतिहासिक दस्तावेज से पता चलता है कि यहां का दशहरा राजधानी का आयोजन रहा है। इस राज्योत्सव का उल्लेख प्रथम काकतीय नरेश अन्नमदेव (1313 ई.) से ही मिलता है। राजा अन्नमदेव अपनी विजययात्रा के दौरान चक्रकोट (बस्तर का प्राचीन नाम) की नलवंशीय राजकुमारी चमेली बाबी पर मुग्ध हो गये। उन्होंने राजकुमारी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे राजकुमारी ने अस्वीकार कर दिया, यही नहीं बल्कि राजा अन्नमदेव के विरूद्ध सैन्य संचालन करतीं हुई वीरगति को प्राप्त हुई। इस घटना का राजा के उपर गहरा प्रभाव पड़ा...और उन्होंने चमेली बाबी की स्मृति में नारंगी नदी के जल में पुष्प प्रवाहित करने की परंपरा शुरू की। कालान्तर में यह दशहरा की एक अनिवार्य परंपरा बन गयी। आज भी इसका निर्वहन किया जाता है। राजाओं के साथ जहां उनकी राजधानियां बदलीं वही दशहरा उत्सव के स्वरूप में भी परिवर्तन आता गया।

बस्तर की अराध्य दंतेश्वरी माई आज अवश्य है लेकिन वास्तव में वह राजा की ईष्ट देवी के रूप में पूजित होती रहीं हैं। नवरात्र में बस्तर के राजा दंतेश्वरी माई के मंदिर में पुजारी के रूप में नौ दिन रहकर शक्ति साधना किया करते थे। जो देवी राजा की ईष्ट हो वह बस्तरांचल में पूजित न हो ऐसा कदापि नहीं हो सकता। यही कारण है कि आज दंतेश्वरी माई का बस्तरांचल में विशेष स्थान है। बस्तर की ग्राम देवियों में मावली देवी, हिंगलाजिन, परदेसिन, तेलिन, करनकोटिन, बंजारिन, डोंगरी माता और पाट देवी प्रमुख हैं।

बस्तर जिला मुख्यालय जगदलपुर नगर की परिक्रमा करने वाला विशाल रथ का परिचालन बस्तर दशहरा का प्रमुख आकर्षण होता है। प्राचीन काल में यह रथ 12 पहियों का हुआ करता था लेकिन आगे चलकर इसके परिचालन में असुविधा होने लगी जिससे राजा वीरनारायण के शासनकाल (1538-1553 ई.) में इसे आठ तथा चार पहिये वाले दो रथ में निकाला जाने लगा। दशहरा उत्सव में रथयात्रा की शुरूवात राजा पुरूषोत्तमदेव के शासनकाल (1407-39 ई.) में हुई। उन्होंने लोट मारते हुए जगन्नाथ पुरी की यात्रा पूरी की थी जिससे प्रसन्न होकर भगवान जगन्नाथ के आदेशानुसार वहां के पुजारी ने राजा को एक रथचक्र प्रदान कर उसे रथपति की उपाधि प्रदान की थी। उन्होंने अपने राज्य में रथयात्रा का आयोजन इसी रथचक्र प्राप्ति के बाद शुरू की थी। जगन्नाथपुरी की रथयात्रा की तर्ज में उन्होंने बस्तर में गोंचा परब और नवरात्र के बाद दशहरा की उत्सव शुरू की। दशहरा की शुरूवात अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से हो जाती है। इस दिन ब्राह्मणों को बुलाकर देवी देवताओं की पूजा कराये जाते हैं। यह सप्तशती पाठ, बगलामुखी पाठ, हनुमान चालीसा पाठ, विष्णु पाठ के रूप में पूरे नवरात्र में चलता है। सीरसार चौंक में जोगी बिठाई की रस्म होती है। हलबा जाति का आमाबाल गांव का एक व्यक्ति जोगी के रूप में बैठता है। लगभग दस दिनों तक यह व्यक्ति फलाहार करके उत्सव की निर्विघ्न समाप्ति के लिए कामना करता रहता है। नवमीं को जोगी उठाई होती है। जोगी बिठाई के दूसरे दिन से फूलरथ परिक्रमा प्रारंभ करता है। फूलों से अलंकृत होने के कारण यह फूलरथ कहलाता है। भतरा जाति के लोग इस रथ को चुराकर कुम्हड़ाकोट ले जाते हैं। यहीं राजा नवाखाई की शुरूवात करता है। 1898 ई. में इस प्रथा को बंद कर दिया गया।

फूल रथ में राजा बैठकर राजा मावलीगुड़ी से जगन्नाथ गुड़ी तक जाता था। अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से षष्ठी तक राजा कभी नीला पीताम्बर और गले में दुपट्टा डालकर और कभी पूरे शरीर में चंदन लगाकर और हाथ, गला तथा सिर में फूलों की माला डालता था लेकिन इस दौरान वे आभूषण धारण नहीं करते थे। राजा सरस्वती पूजा करते थे। प्रात:काल राजा ब्राह्मणों के पास देवपाठ सुनने के लिये बैठते थे। फिर मावली डोली अथवा दंतेश्वरी डोली रात्रि नौ बजे आती थी जिसे दंतेवाड़ा से लाया जाता था। माता की सवारी का स्वागत राजा स्वयं अपने कर्मचारियों और सेनाओं के साथ करते थे। इस अवसर पर प्रजा अपनी कला का प्रदर्शन करके पुरस्कृत होते थे। जब तक दंतेश्वरी माई जगदलपुर में रहते थे, राजा स्वयं उनकी पूजा-अर्चना करते थे। प्रतिदिन बकरा, भैंसा, मुर्गा आदि की बलि दी जाती थी। इस अवसर पर राजा अपनी तलवार की भी पूजा किया करता था। अंतिम क्रिया के रूप में दशहरा पर्व सम्पन्न होता था जिसमें दंतेश्वरी माई की विशाल शोभायात्रा निकाली जाती थी। समूचे बस्तर के ग्रामीण, जमीदार और अन्य ओहदेदार शामिल होते थे। सभी दंतेश्वरी माई की रथ को खींचकर पुण्य के भागीदार बनने को लालायित रहते थे। महिलाएं सुंदर वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर अपने अपने घरों की छतों से इस दृश्य को देखकर आनंदित होती थीं। अन्यान्य महिलाएं इस शोभायात्रा में शामिल भी होती थीं।

काछन गादी, बस्तर दशहरा की एक प्रमुख रस्म है। यह दशहरा का एक प्रारंभिक विधान है। इसके द्वारा युद्ध की देवी काछन माता को तांत्रिक अनुष्ठान के द्वारा जगाया जाता है। कांटों की सेज पर एक महार कन्या को बिठाया जाता है। यहीं पर से वह कन्या दशहरा उत्सव मनाने की घोषणा करती है। पथरागुड़ा के पास जेल परिसर से लगा काछन देवी की गुड़ी है। यहीं पर यह उत्सव होता है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार लाला जगदलपुरी के अनुसार हरिजनों की देवी काछन देवी को बस्तर के राजाओं द्वारा सम्मान देना इस बात की पुष्टि करता है कि वे इस राज्य में अपृश्य नहीं थे। इसी प्रकार आपसी सहयोग से विशाल रथ का निर्माण, उसके लिए लकड़ी काटकर संवरा जाति के लोग जंगलों से लाकर करते हैं। इससे उनकी राजा और इस उत्सव के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। दशहरा का प्रमुख आकर्षण मुरिया दरबार होता था। कदाचित मुरिया जाति की दरबार में ऊंचा स्थान था। दरबार का मुखिया राजा होता था। इस दरबार में राजा अनेक विषयों पर चर्चा करके आदेश जारी करता था और मुरिया इस आदेश को लेकर साल भर के लिए दंतेश्वरी माई से वर्ष भर राज्य में खुशहाली के लिए प्रार्थना कर नई उमंग, नई जागृति और आत्म विश्वास लिए आदिवासी जन अपने गांवों को लौटते हैं।

शिवरीनारायण में गादी पूजा और विजियादशमी:-

छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक और धार्मिक तीर्थ शिवरीनारायण में दो प्रकार का दशहरा मनाया जाता है। नगर के उत्साही नवयुवकों के द्वारा मेला ग्राउंड में जहां रावण की मूर्ति की स्थापना कर श्रीराम लक्ष्मण और हनुमान की शोभायात्रा निकालकर रावण का वध किया जाता है, वहीं मठ के महंत की बाजे-गाजे के साथ शोभायात्रा निकाली जाती है। इस शोभायात्रा में तलवारबाजी और आतिशबाजी की धूम होती है जो जनकपुर जाकर सोनपत्ती के पेड़ की पूजा-अर्चना करके मठ लौट आती है और मठ के बाहर स्थित गादी चौरा में महंत के द्वारा हवन-पूजन की जाती है। इस अवसर पर मठ के साधु संत और नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित होते हैं। हवन पूजन के उपरांत महंत गादी चौरा में विराजमान होते हैं। उस समय सभी उन्हें यथा शक्ति भेंट देते हैं। ऐसी किंवदंति है कि यह प्राचीन काल में दक्षिणापथ और जगन्नाथ पुरी जाने का मार्ग था। लोग इसी मार्ग से जगन्नाथ पुरी और दक्षिण दिशा में तीर्थ यात्रा करने जाते थे। उस समय यहां नाथ संप्रदाय के तांत्रिक रहते थे और यात्रियों को लूटा करते थे। एक बार आदि गुरू दयाराम दास तीर्थाटन के लिए ग्वालियर से रत्नपुर आए। उनकी विद्वता से रत्नपुर के राजा बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरू बनाकर अपने राज्य में रहने के लिए निवेदन किया। रत्नपुर के राजा शिवरीनारायण में तांत्रिकों के प्रभाव और लूटमार से परिचित थे। उन्होंने स्वामी दयाराम दास से तांत्रिकों से मुक्ति दिलाने का अनुरोध किया। आदि स्वामी दयाराम दास जी शिवरीनारायण गये। वहां उन्हें भी तांत्रिकों ने लूटने का प्रयास किया मगर वे सफल नहीं हुए, उनकी तांत्रिक सिद्धि स्वामी जी के उपर काम नहीं की। तांत्रिकों ने स्वामी दयाराम दास को शास्त्रार्थ करने के लिए आमंत्रित किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और फिर दोनों के बीच शास्त्रार्थ हुआ जिसमें तांत्रिकों की पराजय हुई और जमीन के भीतर एक चूहे के बिल में प्रवेश कर अपनी जान की भीख मांगने लगे। स्वामी जी ने उन्हें जमीन के भीतर ही रहने की आज्ञा दी और उनकी तांत्रिक प्रभाव की शांति के लिए प्रतिवर्ष माघ शुक्ल त्रयोदस और विजयादशमी (दशहरा) को पूजन और हवन करने का विधान बनाया। आज भी शिवरीनारायण में शबरीनारायण मंदिर परिसर में दक्षिण द्वार के पास स्थित एक गुफानुमा मंदिर में नाथ सम्प्रदाय के तांत्रिक गुरू कनफड़ा और नगफड़ा बाबा की पगड़ी धारी मूर्ति स्थित है। साथ ही बस्ती के बाहर एक नाथ गुफा भी है। शिवरीनारायण में 9वीं शताब्दी में निर्मित और नाथ सम्प्रदाय के कब्जे में बरसों से रहे मठ में वैष्णव परंपरा की नींव डाली। शिवरीनारायण के इस मठ के स्वामी दयाराम दास पहले महंत हुए। तब से आज तक 14 महंत हो चुके हैं और 15 वें महंत राजेश्री रामसुंदरदास जी वर्तमान में हैं। इस मठ के महंत रामानंदी सम्प्रदाय के हैं। जिस स्थान में दोनों के बीच शास्त्रार्थ हुआ था वहां पर एक चबुतरा और छतरी बना है। बरसों से प्रचलित इस पूजन परंपरा को ''गादी पूजा'' कहा गया। क्योंकि पूजन और हवन के बाद महंत उसके उपर विराजमान होते हैं और नागरिक गणों द्वारा गादी पर विराजित होने पर महंत को श्री फल और भेंट देकर उनका सम्मान किया जाता है। इस परंपरा के बारे में कोई लिखित दस्तावेज नहीं है मगर महंती सौंपते समय उन्हें मठ की परंपराओं के बारे में जो गुरू मंत्र दिया जाता है उनमें यह भी शामिल होता है। इस मठ में जितने भी महंत हुए सबने इस परंपरा का बखूबी निर्वाह किया है। आज भी यह परंपरा निभायी जाती है।

मिजोरम में वापसी के लिए कांग्रेस ने खेला नया दांव

अनन्या मिश्रा

मिजोरम में सभी 40 विधानसभा सीटों पर आगामी 7 नवंबर को मतदान होने हैं। वहीं 3 दिसंबर को चुनाव परिणाम घोषित किए जाएंगे। कांग्रेस इस बार मिजोरम को किसी भी हालत में फतह करना चाहती है। क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव में प्रदेश की सत्ता गंवाने के फौरन बाद ही पार्टी के पास से पूर्वोत्तर भारत का अंतिम किला भी चला गया था।

मिजोरम में सभी 40 विधानसभा सीटों पर आगामी 7 नवंबर को मतदान होने हैं। वहीं 3 दिसंबर को चुनाव परिणाम घोषित किए जाएंगे। राज्य में चुनाव तारीखों का ऐलान होने ही कभी राजनीतिक दल पूरी तैयारियों के साथ चुनावी रण में उतर चुके हैं। बता दें कि इस 40 विधानसभा सीटों वाले राज्य में किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत से

सरकार बनाने के लिए 21 सीटें चाहिए। ऐसे में बीजेपी, कांग्रेस और राज्य की पार्टी एमएनएफ पूरी जोर-आजमाइश कर रहे हैं।

हांलाकि कांग्रेस इस बार मिजोरम को किसी भी हालत में फतह करना चाहती है। क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव में प्रदेश की सत्ता गंवाने के फौरन बाद ही पार्टी के पास से पूर्वोत्तर भारत का अंतिम किला भी चला गया था।

वहीं इस बार मिजोरम में उस समय चुनाव हो रहे हैं, जब मिजोरम का पड़ोसी राज्य मणिपुर जातीय हिंसा की आग में काफी समय से जल रहा है। ऐसे में कांग्रेस इसी मुद्दे को भुनाकर सत्ता पर काबिज होना चाहती है।

हांलाकि इस मुद्दे से कांग्रेस पार्टी को कितना फायदा होगा, यह तो समय ही बताएगा। लेकिन कांग्रेस इस बार कोई भी गलती नहीं करना चाहती है। ऐसे में पूर्वोत्तर में कथित अशांति को मुद्दा बना कर कांग्रेस मिजोरम में सत्ता हासिल करना चाहती है। आपको बता दें कि मिजोरम राज्य के गठन के बाद से जहां एमएनएफ 3 बार सत्ता में रही है, तो वहीं कांग्रेस ने 4 बार राज्य की सत्ता हासिल की थी। इसी वजह से मिजोरम को कांग्रेस का अभेद्य किला माना जाता था। जिसे एमएनएफ पार्टी ने भेदने का काम किया था। साल 2008 और 2013 में कांग्रेस ने राज्य में बड़ी जीत हासिल की थी।

कमलनाथ को गुस्सा क्यों आता है?

बिक्रम उपाध्याय

तीन पीढ़ियों को नेतृत्व दे चुके कांग्रेस के वेटरन नेता कमलनाथ को आजकल गुस्सा बहुत आ रहा है। कभी वह खीज में अपने ही वरिष्ठ साथी दिग्विजय सिंह का कपड़ा फाड़ने को कहते हैं, तो कभी सपा प्रमुख को अखिलेश वखलेश कह कर झल्ला उठते हैं। हमेशा हंस कर बात करने वाले आखिर कमलनाथ इतने गुस्से में क्यों हैं। जानकार कहते हैं कि कमलनाथ इस बार अपनी जिंदगी के राजनीतिक मोर्चे पर आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं। अबकि चुके तो फिर कभी नहीं के मुहाने पर खड़े हैं। उम्र का सातवां दशक पार कर चुके हैं। 76 साल के हो चुके हैं। एक बार भले ही उन्हें मुख्यमंत्री का पद मिल गया, पर इतने कम समय के लिए कि शासन करने की प्यास बुझने के बजाय और भड़क गयी है। ऊपर से फिर एक बार कांग्रेस के भीतर और बाहर दोनों से उनको परेशान करने वाली ख़बरें आ रही हैं। शिवपुरी के एक नेता को टिकट नहीं दिए जाने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपने सहयोगी दिग्विजय सिंह के कपड़े फाड़ने के लिए कहने वाले कमल नाथ दरअसल दिग्गी राजा की गुगली से परेशान थे। अभी टिकट बंटवारे का काम बीच में ही था कि दिग्विजय सिंह ने अपने इस्तीफे का पत्र मीडिया में लहरा दिया। जाहिर है कि उससे जुड़े सारे सवाल कमलनाथ की ओर ही मोड़ दिए गए हैं। क्योंकि दिग्गी राजा ने बाहर यह संदेश दे ही दिया कि पार्टी में दरार है। मध्य प्रदेश की 230 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस और भाजपा में सीधी लड़ाई है और इस लड़ाई में कांग्रेस किसी भी कमजोड़ कड़ी को छोड़ना नहीं चाहती।

बिना फिल्में किए करोड़ों कमाती हैं फिटनेस क्वीन मलाइका अरोड़ा, एक्ट्रेस की नेटवर्थ जान चकरा चाएगा सिर

मलाइका अरोड़ा आज अपना 50वां जन्मदिन मना रही हैं. मलाइका काफी लग्जरी लाइफ जीती हैं. मलाइका अरोड़ा ने छैया छैया सॉन्ग में बॉलीवुड में कदम रखा था. ये गाना काफी हिट साबित हुआ था और इससे ही मलाइका को एक अलग पहचान मिली थी. जिसके बाद मलाइका कई आइटम सॉन्ग्स में नजर आ चुकी हैं. जो सभी हिट रहे हैं.

हालांकि, मलाइका कभी बतौर एक्ट्रेस किसी फिल्म में नजर नहीं आई हैं. लेकिन इसके बावजूद भी वे लग्जरी लाइफ जीती हैं. मलाइका भले हीं फिल्मों में नजर नहीं आती हो लेकिन फिर वे करोड़ो की मालकिन हैं.

मलाइका के पास लेविश अपार्टमेंट्स के साथ ही कई लग्जरी गाड़िया भी शामिल हैं. मलाइका मुंबई के बांदा में जिस घर में रहती हैं उसकी कीमत करीब 20 करोड़ रुपये है. वहीं, एक्ट्रेस के पास 1.38 करोड़ रुपये की BMW 7 सीरीज, 20 लाख की टोयाटो इनोवा क्रिस्टा, 96 लाख की BMWX 7 के साथ ही 2.11 करोड़ की रेंज रोवर वॉग जैसी लग्जरी कारें भी है.

मलाइका अरोड़ा फिल्मों में भले ही नजर नहीं आती हों, लेकिन वे कई मॉडलिंग शोज और रिएलिटी शोज को जज करती हैं. शो में एक एपिसोड के लिए एक्ट्रेस करीब 5 से 6 लाख रुरये चार्ज करती हैं. कई रिपोर्ट्स के मुताबिक, मलाइका ने कई स्टार्टअप बिजनेस में भी इंवेस्ट किया हुआ है, जिसमें फिटनेस ऐप सरवा योगा, ई-कॉमर्स ब्रैंड लेबल लाइफ एक्सेल और कई फैशन वर्ल्ड में इंवेस्टेंट की हुई है.

मलाइका कई बड़े ब्रांड की एंबेसडर हैं जिसके लिए उन्हें मंथली 70 लाख से 1.6 करोड़ रुपये मिलते हैं. वहीं, वे फिल्मों में अपने एक गाने के लिए एक्ट्रेस 90 लाख रुपये से 1.5 करोड़ रुपये चार्ज करती हैं. वहीं, मलाइका की कुल नेटवर्थ की बात करें तो रिपोर्ट्स के मुताबिक, 98.98 करोड़ा रुपये है.

अपने जन्मदिन पर ट्रोलर के निशाने पर मलाइका

बॉलीवुड अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा ने बीते दिन अपना जन्मदिन मनाया है। अभिनेत्री जो भी करती हैं, वह सबसे अलग करती हैं। मलाइका ने अपना जन्मदिन भी खास जगह पर बड़े ही खास अंदाज में मनाया। सोशल मीडिया पर उन्होंने इसका पोस्ट भी साझा किया है। जन्मदिन का पोस्ट साझा करते ही मलाइका ट्रोलर्स के निशाने पर आ गई हैं। दरअसल, मलाइका ने इस पोस्ट का कैप्शन ही कुछ ऐसा लिखा था कि वह ट्रोलिंग का शिकार हो गईं।

मलाइका ने खुद की उम्र बताई 48

मलाइका अरोड़ा ने जन्मदिन पर अपनी कुछ चुनिंदा तस्वीरें साझा की। इसका साथ उन्होंने एक कैप्शन भी लिखा। कैप्शन में मलाइका ने खुद को 48 वर्ष का बताया, जिसने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। क्योंकि गूगल के अनुसार, मलाइका अरोड़ा का जन्म 1973 में हुआ था। इस हिसाब से उनकी उम्र 50 साल है। सोशल मीडिया पर यूजर्स ने जैसे ही इसे देखा तो कमेंट सेक्शन में ही अभिनेत्री को नसीहत भी दे डाली।

किसी को गुमराह तो मत करो- यूजर्स

यूजर्स ने मलाइका को नसीहत देते हुए लिखा कि कम से कम जन्मदिन पर किसी को गुमराह तो मत करो। बता दें कि मलाइका अरोड़ा ने पोस्ट साझा कर लिखा, 'एक और साल चला गया और मैं 48 की हो गई हूं (अपने पसंदीदा बार्थरोब में)। मैं शांति और अपने लोगों के लिए आभारी हूं जो मेरी इस पूरी जर्नी में मेरे साथी रहे हैं। यहां बैठकर हर पल अच्छा महसूस होता है जो मुझे आत्म खोज और आंतरिक शक्ति की तरफ मार्गदर्शन करता है।'

'पर्व' मूवी में यश को कास्ट करना चाहते हैं विवेक अग्निहोत्री

विवेक अग्निहोत्री ने इंडस्ट्री को 'द ताशकंद फाइल्स' और 'द कश्मीर फाइल्स' जैसी बेहतरीन फिल्में दी हैं। हालांकि, फिल्ममेकर की हालिया रिलीज फिल्म 'द वैक्सीन वॉर' बॉक्स ऑफिस पर कमाल दिखाने में असफल नजर आई है। बावजूद इसके फिल्म को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कई सितारों के जरिए सराहा गया है। इसी कड़ी में विवेक अपनी आगामी फिल्म की घोषणा कर सुर्खियों में छा गए हैं। फिल्म निर्माता ने बीते दिन बेंगलुरु में 'पर्व' की घोषणा की। वहीं, अब इसके लीड स्टार को लेकर विवेक का दिया गया ताजा बयान हेडलाइंस का हिस्सा बन रहा है।

'पर्व' की कहानी

विवेक अग्निहोत्री की आगामी फिल्म की कहानी एस एल भैरप्पा की किताब 'पर्व' पर आधारित होगी। यह संस्कृत महाकाव्य महाभारत का पुनर्कथन है, जिसे प्रमुख पात्रों के व्यक्तिगत प्रतिबिंबों के माध्यम से वर्णित किया गया है। उपन्यास को आधुनिक क्लासिक के रूप में व्यापक रूप से सराहा गया है। जानकारी है कि फिल्म तीन भाग वाली फ्रेंचाइजी होगी, जो भारतीय सिनेमा के इतिहास में अपनी जगह पक्की कर लेगी।

यश होंगे 'पर्व' के लीड स्टार!

दर्शकों का उत्साह तब चरम पर पहुंच गया जब विवेक अग्निहोत्री ने 'पर्व' के लिए अपनी ड्रीम कास्ट का खुलासा किया। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि वह किसे कास्ट करना चाहेंगे, तो उन्होंने कहा, 'यश हमारे समय के सबसे महान अभिनेता हैं।' इस तरह विवेक ने यश को 'पर्व' में कास्ट करने की इच्छा जाहिर की है। हालांकि, बात बन पाती है या नहीं यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

तीन भाग में बनेगी 'पर्व'

'पर्व' सिर्फ एक फिल्म से कहीं अधिक है। यह एस एल भैरप्पा के कालजयी उपन्यास की एक असाधारण सिनेमाई व्याख्या है, जो धर्म की महाकाव्य कहानी को उजागर करती है। चूंकि फिल्म को तीन अलग-अलग हिस्सों में प्रस्तुत किया जाना है, इसलिए दर्शक एक गहन और मंत्रमुग्ध अनुभव की उम्मीद कर सकते हैं, जो विचारोत्तेजक और दृष्टि से आश्चर्यजनक दोनों होने का वादा करता है।

अभिनेत्री ने पोस्ट साझा कर लिखा-

उन्होंने आगे अपने पोस्ट में लिखा, 'यहां की अच्छी हवा, मंत्रमुग्ध करने देने वाला सूर्यास्त है जो नई शुरुआत का वादा करता है। यहां पर उन लोगों की गर्मजोशी है जिन्होंने मेरी लाइफ को सुंदर बनाया है। एक बार फिर अब तक की जिंदगी के लिए आभारी हूं और आगे की लाइफ के लिए काफी उम्मीद है। मुझे जन्मदिन मुबारक हो।'

'यह मेरे जीवन व फिल्म निर्माण की दिशा बदल देगी' फिल्म 'हिरण्यकश्यप' पर बोले राणा दग्गुबाती

साउथ सुपरस्टार राणा दग्गुबाती लंबे समय से हिरण्यकश्यप की हिंदू पौराणिक कथाओं को अपनाना चाहते हैं। फिल्म पर कुछ सालों से काम चल रहा है और राणा का कहना है कि वे गुणवत्ता के लिए समय ले रहे हैं। हाल ही में दिए एक साक्षात्कार में राणा ने कहा कि हिरण्यकश्यप सुनिश्चित करना होगा कि हम इसे अलग और बेहतर तरीके से बता रहे हैं। हम इसे जीरो से 80 तक के दर्शकों से कैसे जोड़ सकते हैं, जो कहानी पहले ही कर चुकी है तो उस पर काम कुछ समय से चल रहा है। मुझे लगता है कि हमने इसमें से समय की भावना को हटा दिया है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसे पूरा करने में कितना समय लगा।" यह एक ऐसी फिल्म होगी, जो लंबे समय के लिए मेरे जीवन और फिल्म निर्माण की दिशा बदल देगी। वास्तव में हम उस फिल्म के साथ यही हासिल करना चाहते हैं।

'कल्कि 2898 एडी' पर राणा की प्रतिक्रिया

वहीं, 'कल्कि 2898 एडी' के बारे में बात करते हुए राणा दग्गुबाती ने कहा, "पहली बार मुझे किसी को देखकर ईर्ष्या तब हुई, जब मैं कल्कि के सेट पर गया। बड़े होकर मेरे लिए दृश्य प्रभाव स्टार वार्स थे। यह एक ऐसी फिल्म है, जिसे देखना मुझे बहुत पसंद है। मजे की बात यह है कि नागी (नाग अश्विन) को भी वह फिल्म देखना पसंद आया और बहुत कम लोगों को यह मिल पाता है। विज्ञान कथा की तरह और यह सब बहुत मुख्यधारा नहीं है।"

उनके करियर और भारतीय सिनेमा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

अलग तरीके से बनाना चाहते हैं फिल्म

उन्होंने कहा, "यह पहली अमर चित्र कथा कहानी थी या सबसे सुस्पष्ट अमर चित्र कथा कहानी थी, जो पूरे ब्रह्मांड में घटित हुई और इसकी पौराणिक कथाओं को दोबारा बताए जाने की जरूरत है। श्वेत-श्याम युग में इसे बहुत अच्छे से कहा गया था, इसलिए हमें यह

फिल्म से राणा को काफी उम्मीदें

राणा ने आगे कहा मेरे पास इस पर काम करने वाले बहुत से लोग हैं। अब मेरे पास श्री त्रिविक्रम हैं। हर बार जब वह कोई फिल्म पूरी कर लेते हैं तो वह उस पर टुकड़ों-टुकड़ों में काम करता है। एक टीम है, जो भागवत पुराण की सभी कहानियों को एक साथ रख रही है। कहीं न कहीं मुझे लगता है कि

दशहरा के मौके पर महेश बाबू ने साझा की फिल्म 'गुंटूर कारम' से जुड़ी जानकारी

साउथ सुपरस्टार महेश बाबू और त्रिविक्रम श्रीनिवास की फिल्म 'गुंटूर कारम' का क्रेज रिलीज से पहले ही दर्शकों के बीच देखने को मिल रहा है। यह इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। यह फिल्म अगले साल संक्रांति पर रिलीज होने के लिए तैयार है। दर्शकों के बीच फिल्म का उत्साह और बढ़ाने के लिए फिल्म के निर्माताओं ने अब दशहरा के अवसर पर 'गुंटूर कारम' का नया पोस्टर जारी किया है।

महेश बाबू ने अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) हैंडल से 'गुंटूर कारम' फिल्म से उनका नया पोस्टर साझा किया। इसके साथ ही फिल्म के पहले सिंगल के जल्द आने की आधिकारिक घोषणा भी की गई। नया लुक जारी करते हुए महेश बाबू ने लिखा, "आगे एक महान वर्ष का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूं। सभी को दशहरे की शुभकामनाएं।" पोस्टर के मुताबिक, फिल्म का सिंगल आने वाले महीनों में जल्द ही रिलीज किया जाएगा।

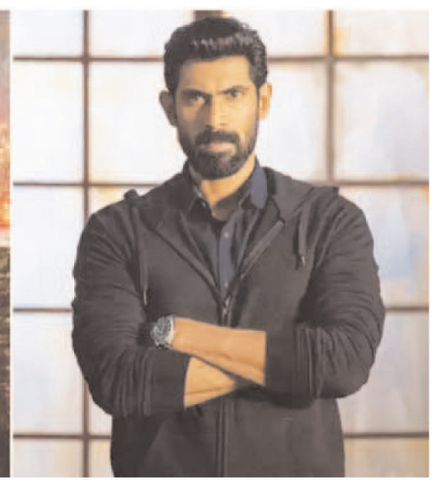

पोस्टर में अभिनेता हमेशा की तरह स्टाइलिश नजर आ रहे हैं। महेश पोस्टर में सिगरेट पीते हुए दिख रहे हैं। अभिनेता विजय को हाल ही में लियो के गाने ₹ना रेडी₹ में धूम्रपान की समस्या का सामना करना पड़ा। सिनेमाघरों में पहुंचने से पहले गाने को कई बदलावों से गुजरना पड़ा। वहीं अब कयास लगाए जा रहे हैं कि महेश को ऐसे सीन्स के लिए क्लीन चिट लेने के लिए काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

महेश बाबू के प्रशंसक 'गुंटूर कारम' से पूरी तरह आश्चर्यचकित हैं, क्योंकि यह 2010 की फिल्म 'खलेजा' के बाद महेश बाबू और त्रिविक्रम की हिट जोड़ी के सहयोग का प्रतीक है। यह फिल्म एक एक्शन ड्रामा फिल्म होने की उम्मीद है, जिसमें जयराम, श्रीलीला, मीनाक्षी चौधरी, जगपति बाबू और राम्या कृष्णन प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

'गुंटूर कारम' की रिलीज के बाद उम्मीद है कि महेश बाबू अपनी ग्लोब-ट्रॉटिंग एडवेंचर फिल्म के लिए निर्देशक और निर्माता एसएस राजामौली के साथ हाथ मिलाएंगे। फिल्म का नाम अस्थायी रूप से SSMB29 रखा गया है, जिसमें बड़ी संख्या में कलाकारों के शामिल होने की उम्मीद है और अफवाहें हैं कि दीपिका पादुकोण मुख्य भूमिका में होंगी।

रवीना टंडन ने बॉलीवुड के ऊपर चुना टॉलीवुड, हिंदी फिल्मों की असफलता पर दिया चौंकाने वाला बयान

रवीना टंडन फिल्मों में शानदार अभिनय के साथ ही अपने दमदार व्यक्तित्व के कारण भी फैंस के बीच खासा चर्चित हैं। अभिनेत्री कई अवसर पर हिंदी और साउथ फिल्मों के अंतर को समझाती नजर आई हैं। साथ ही सिनेमा में आए कुछ बदलावों को लेकर मुखर रही हैं। इसी कड़ी में अभिनेत्री ने वापस से साउथ और हिंदी फिल्म इंडस्ट्री पर चर्चा की है। साथ ही फिल्मों की सफलता और असफलताओं पर बड़ा बयान देती नजर आई हैं।

अभिनेत्री रवीना टंडन का मानना है कि साउथ फिल्म इंडस्ट्री इसलिए फला-फूला है क्योंकि वह अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति प्रतिबद्ध है। वहीं, हिंदी फिल्म इंडस्ट्री हर चीज का 'पश्चिमीकरण' करने के अपने प्रयास के कारण विफल रहा है। एक नए इंटरव्यू में, रवीना ने साउथ में कमल हासन, चिरंजीवी और नागार्जुन जैसे सितारों के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा किया।

रवीना ने पहले से ही लोकप्रिय धारणा को मजबूत किया कि साउथ फिल्म इंडस्ट्री, हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की तुलना में कहीं अधिक अनुशासित है। एक और बड़ा अंतर, जो उन्हें लगता है कि हिंदी फिल्मों के प्रदर्शन पर असर डाल रहा है, वह है अपनी जड़ों से जुड़े रहने में विफलता। रवीना ने कहा, 'साउथ इंडस्ट्री में मुझे सबसे ज्यादा मजा आया, वह यह कि वे अपनी जड़ों और संस्कृति से इतनी मजबूती से जुड़े हुए थे कि उनकी फिल्में सुपर-डुपर हिट होती थीं। वे बहुत अधिक संभ्रांतवादी फिल्में नहीं बनाते हैं।'

रवीना टंडन ने अपनी बात को जारी रखते हुए आगे कहा, 'मुझे लगता है कि यही काम करता है। हालांकि, मुंबई में वे पश्चिमी संस्कृति का पालन करते थे। उन्होंने मुंबई में उन फिल्मों की डीवीडी प्रतियां बनानी शुरू कर दीं, जो अच्छा व्यवसाय नहीं कर रही थीं। इसलिए, यह बहुत जरूरी था कि हम उससे जुड़े रहें जो हमारी जनता चाहती है। यह मैंने साउथ इंडस्ट्री से सीखा है।

रवीना टंडन ने वर्ष 1993 में 'बंगारू बुलोदु' के साथ तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में अपनी शुरुआत की, और तमिल फिल्म इंडस्ट्री में उनकी शुरुआत 1994 में 'साधु' नामक फिल्म से हुई। वह हाल ही में सुपरहिट कन्नड़ फिल्म 'केजीएफः चैप्टर 2' में नजर आई थीं। अभिनेत्री ने यह भी बताया कि कैसे साउथ में वह कुछ भी खाने के लिए स्वतंत्र थीं, क्योंकि वहां फिल्म निर्माताओं को उनके वजन बढ़ने से कोई आपत्ति नहीं थी। हालांकि, मुंबई लौटने के बाद उन्हें अपना अतिरिक्त वजन कम करना पड़ा।

रुबीना दिलैक के घर में एक नहीं दो नन्हे मेहमान आएंगे, एक्ट्रेस की खुशियां हुईं डबल

टीवी एक्ट्रेस रुबीना दिलैक अपनी प्रेग्नेंसी के चलते लाइमलाइट में बनी हुईं है। जबसे एक्ट्रेस ने फैंस को ये गुड न्यूज सुनाई है सभी उनके बेबी के इस दुनिया में आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इसी बीच अब एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर एक बड़ा ऐलान कर दिया है।

बता दें, पिछले काफी समय से रूबीना की प्रेग्नेंसी की खबरें मीडिया में चल रही हैं। हालांकि, पिछले महीने रूबीना ने आधिकारिक तौर पर अपनी प्रेग्नेंसी की घोषणा की। और अब, एक्ट्रेस ने अपनी बहन रोहिणी दिलैक की प्रेग्नेंसी के बारे में जानकारी शेयर की है। हां, दिलैक परिवार में उनकी दूसरी बेटी भी जल्द मां बनने वाली है।

बता दें रुबीना दिलैक ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी बहन रोहिणी के साथ कुछ तस्वीरें शेयर कीं। तस्वीरों में दोनों बहनें एक साथ पोज दे रही थीं। एक फोटो में होने वाली मां रोहिणी को केक काटते हुए देखा गया। इसके साथ ही, रूबीना ने खुलासा किया कि उनका परिवार बड़ा हो रहा है क्योंकि उनकी बहन रोहिणी दिलैक भी एक बच्चे की उम्मीद कर रही हैं। उन्होंने लिखा, 'हम एक्साइटेड हैं, एक परिवार के रूप में बड़े होने की हमारी खुशी दोगुनी हो गई है। रोहिणी दिलैक जल्द ही मां बनने वाली हैं।'

सभी लोग अब दोनों कपल को प्रेग्नेंसी के लिए बधाई दे रहे हैं। अब गुड विशिज देने वालों की लाइन लग चुकी है। फैंस से लेकर टीवी सेलेब्स तक सभी लोग उन्हें मुबारकबाद देते हुए दिखाई दे रहे हैं। ये वाकई दिलैक परिवार के लिए डबल खुशी का मौका है। दूसरी ओर अब फैंस रुबीना की तीसरी बहन ज्योतिका से भी प्रेग्नेंसी को लेकर सवाल करते हुए नजर आ रहे हैं।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

समाजवादी पार्टी के बाद जेडीयू ने भी मप्र में उतारे उम्मीदवार

पटना। 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा का मुकाबला करने के लिए बनाया गया इंडिया ब्लॉक मध्य प्रदेश में चुनावों के संबंध में टूटता नजर आ रहा है। मध्य प्रदेश में मतदान एक ही चरण में 17 नवंबर को होगा। समाजवादी पार्टी के बाद, नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) ने भी मध्य प्रदेश चुनाव में कांग्रेस के खिलाफ 5 उम्मीदवार उतारने का फैसला किया है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी की ओर से पहली सूची जारी कर दी गई है। मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को सभी 230 सीट के लिए मतदान होगा। जद (यू) के पांच उम्मीदवारों में चंद्रपाल यादव (पिछोर), रामकुंवर रायकवार (राजनगर), शिव नारायण सोनी (विजय राघवगढ़), तोल सिंह भूरिया (थांदला) और रामेश्वर सिंगला (पेटलावद) शामिल हैं। जैसे ही नीतीश कुमार की पार्टी ने मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवार उतारे, बीजेपी ने जेडीयू और आई.एन.डी.आई.ए. ब्लॉक पर तीखा कटाक्ष किया। इस मुद्दे पर बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष पाठक ने कहा है,

सुशील कुमार शिंद ने राजनीति से लिया संन्यास

मुंबई। पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री और कांग्रेस नेता सुशील कुमार शिंदे ने सक्रिय राजनीति से संन्यास की घोषणा की। एक कार्यक्रम के दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री ने यह घोषणा की। शिंदे ने अपनी बेटी का नाम आगे रखते हुए कहा, मेरी बेटी (परिणीति शिंदे) 2024 का चुनाव लड़ेगी। जहां भी मेरी जरूरत होगी, मैं मौजूद रहूंगा। परिणीति शिंदे सोलापुर से तीन बार विधायक रह चुकी हैं। वहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री सोलापुर सीट से तीन बार सांसद रहे। शिंदे महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री के साथ-साथ 2012 में केंद्रीय गृह मंत्री और मनमोहन सिंह सरकार में ऊर्जा मंत्री भी रह चुके हैं।1971 में शिंदे कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने। उन्होंने 1974, 1980, 1985, 1990, 1992 में महाराष्ट्र राज्य विधानसभा चुनाव जीते। अगस्त 2004-(सामान्य) उपचुनाव, सितंबर 2004 से अक्टूबर 2004-(सामान्य)। शिंदे जुलाई 1992 से मार्च 1998 के दौरान महाराष्ट्र से राज्यसभा के लिए चुने गए।

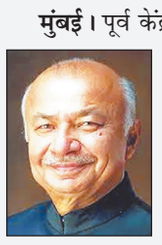

महुआ मोइत्रा पर निशिकांत दुबे ने फिर साधा निशाना

नईदिल्ली। संसद की आचार समिति के सामने पेश होने से एक दिन पहले बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने एक बार फिर टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा पर निशाना साधा है। भारतीय जनता पार्टी के सांसद निशिकांत दुबे ने बुधवार को अपने खिलाफ तृणमूल कांग्रेस सांसद की टिप्पणी का जवाब देते हुए कहा कि सवाल अडानी, डिग्री या चोरी का नहीं है, बल्कि देश को गुमराह कर भ्रष्टाचार का है। उन्होंने इसको लेकर एक एक्स पोस्ट लिखा। उन्होंने कहा कि सवाल संसद की गरिमा, भारत की सुरक्षा और कथित सांसद के औचित्य, भ्रष्टाचार और आपराधिकता का है, जबाब देना है कि दुबई में ह्वह्वष्ट मेल खुला की नहीं? पैसे के बदले प्रश्न पूछे कि नहीं? विदेश जाने आने के खर्च किसने उठाए? भाजपा सांसद ने आगे कहा कि क्या आपको लोकसभा अध्यक्ष और विदेश मंत्रालय से विदेश जाने की अनुमति मिली या नहीं?

दिग्विजय ने कमलनाथ के अखिलेश-वखिलेश वाली टिप्पणी पर व्यक्त की प्रतिक्रिया

भोपाल। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने प्रदेश कांग्रेस प्रमुख कमलनाथ द्वारा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव पर की गई अखिलेश-वखिलेश वाली टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि किसी को किसी के बारे में ऐसा कुछ नहीं कहना चाहिए। सूत्रों के अनुसार दिग्विजय सिंह ने यह टिप्पणी आगामी राज्य विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच सीटों के बंटवारे के बारे में पत्रकारों द्वारा पूछे गये सवाल के बारे में कहा। उन्होंने कहा, कमलनाथ ने अखिलेश यादव के बारे में क्या कहा मुझे नहीं पता है और न ही यह पता है कि कमलनाथ ने यह बात किस संदर्भ में की है लेकिन किसी को भी किसी के बारे में ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा, कमलनाथ ने मेरे पास समाजवादी पार्टी में टिकट वितरण पर चर्चा के लिए एक टीम भेजी थी।

सीएम एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे पर कसा करारा तंज

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे और शिवसेना गुट पर स्वार्थी होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि उद्धव ठाकरे अपने स्वार्थ के लिए हमास और लश्कर जैसे आतंकी संगठनों से भी गठबंधन कर सकते हैं। सीएम शिंदे का ये बयान उस वक्त आया जब वह मंगलवार को आजाद मैदान में दशहरा रैली में लोगों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान शिंदे ने कहा, आपने अपनी वैचारिक विरासत के साथ बेईमानी करके बाल ठाकरे की पीठ में छुरा घोंपा। मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर वे अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए हमास और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकवादी समूहों के साथ गठबंधन करते हैं। दरअसल, एकनाथ शिंदे ने यह बयान लोकसभा चुनावों के लिए विपक्ष के भारतीय गुट के हिस्से के रूप में, कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन बनाने वाले उद्धव ठाकरे की शिव सेना (यूबीटी) के संदर्भ में दिया।

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा हर तरफ है भाजपा विरोधी लहर

कांग्रेस सभी 5 राज्यों में बनाएगी सरकार: खड़गे

कलबुर्गी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बुधवार को कहा कि देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस अगले महीने होने वाले सभी पांच राज्यों के चुनाव में जीत दर्ज करके उन राज्यों में सरकार बनाएगी। कांग्रेस प्रमुख ने साथ में यह भी कहा कि भारतीय जनता पार्टी शासित मध्य प्रदेश में जबरदस्त सत्ता विरोधी लहर है और लोगों में भाजपा शासन के प्रति बहुत ज्यादा आक्रोश है।

कर्नाटक स्थित अपने गृहक्षेत्र कलबुर्गी में समाचार एजेंसी एएनआई से बात करते हुए मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि छत्तीसगढ़ और राजस्थान की मौजूदा कांग्रेस सरकारें राज्य के लोगों की भलाई के लिए बहुत अच्छा काम कर रही हैं और वहां के लोगों को कांग्रेस की सरकार से कोई परेशानी नहीं है।

कांग्रेस नेता खड़गे ने कहा, पांच राज्यों में चुनावों के लिए कांग्रेस की तैयारी अच्छी चल रही है। हमें विश्वास है कि हम सभी राज्यों में जीत हासिल करेंगे। मुख्य रूप से मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के कारण भाजपा के लिए सत्ता विरोधी लहर है। इसके साथ ही कांग्रेस अध्यक्ष ने भाजपा पर तीखा हमला करते हुए मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार का जिक्र किया और कहा कि मध्य प्रदेश की मौजूदा शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के खिलाफ लोगों में बहुत ज्यादा आक्रोश है।

उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य में भाजपा की कथित डबल इंजन की सरकार होते हुए भी मध्य प्रदेश में विकास का कोई काम नहीं हुआ है और न ही भाजपा ने अपना कोई भी चुनावी वादा पूरा किया है। खड़गे ने कहा, भाजपा द्वारा जो भी वादे किए गए, वो कभी भी पूरे नहीं किये गये। चाहे वह बेरोजगारी हो या फिर किसानों की आय दोगुनी करना हो या राज्य में निवेश का मुद्दा हो। कलबुर्गी दौरे पर पहुंचे मल्लिकार्जुन खड़गे ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार लगातार कर्नाटक सरकार की उपेक्षा कर रही है। उन्होंने कहा, %%कर्नाटक सरकार को केंद्र की ओर से कोई परियोजना नहीं दी जा रही है।%%

मालूम हो कि छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा के बीत जबरदस्त टक्कर है। वहीं तेलंगाना में सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति, कांग्रेस और भाजपा के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होने की उम्मीद की जा रही है।

मध्य प्रदेश विधानसभा में 230 सीटें हैं। साल 2018 के चुनाव में कांग्रेस ने 41.5 फीसदी वोट शेयर के साथ 114 सीटें जीतीं जबकि बीजेपी को 41.6 फीसदी वोट शेयर के साथ 109 सीटें मिली थीं।

साल 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस से बगावत के कारण कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने बहुमत खो दिया था, जिसके कारण शिवराज सिंह चौहान सत्ता में वापसी करते हुए मुख्यमंत्री बने थे। जहां तक राजस्थान का सवाल है तो वहां पर 200 सीटें हैं। साल 2018 के चुनाव में कांग्रेस ने 99 सीटें जीतकर राज्य में बहुमत के करीब थी। उसने बसपा और निर्दलीय विधायकों की मदद से सरकार बनाई थी। उस चुनाव में कांग्रेस का वोट शेयर 39.8 फीसदी था, जबकि बीजेपी ने 39.3 फीसदी वोट शेयर के साथ 73 सीटें हासिल की थीं।

साल 2018 के तेलंगाना चुनाव में सत्तारूढ़ बीआरएस ने कुल 119 सीटों में से 88 सीटें जीतीं और 47.4 फीसदी वोट शेयर के साथ सत्ता हासिल की थी। वहां पर कांग्रेस 19 सीटें और 28.7 फीसदी वोट शेयर के साथ दूसरे स्थान पर रही। छत्तीसगढ़ में साल 2018 के चुनावों में कांग्रेस ने 90 में से 68 सीटें जीती थीं। पार्टी का वोट शेयर 43.9 फीसदी था, जबकि भाजपा ने 15 सीटें जीतीं और उसका वोट शेयर 33.6 फीसदी था। मिजोरम की 40 सदस्यीय विधानसभा में मिजो नेशनल फ्रंट ने 2018 के चुनावों में विजयी होने के लिए 37.8 प्रतिशत वोट शेयर के साथ 26 सीटें हासिल कीं। वहीं कांग्रेस को पांच और बीजेपी को एक सीट मिली थी।

इस साल मिजोरम में 7 नवंबर, छत्तीसगढ़ में 7 नवंबर और 17 नवंबर, मध्य प्रदेश में 17 नवंबर, राजस्थान में 25 नवंबर और तेलंगाना में 30 नवंबर को चुनाव होंगे। सभी राज्यों में वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होगी।

कांग्रेस ने अचालन बदले चार जगह के उम्मीदवार

भोपाल। कांग्रेस ने सुमावली, पिपरिया, जावरा और बड़नगर से उम्मीदवार बदले। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्य में 17 नवंबर को एक ही चरण में मतदान होगा और वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होगी। खबरों के मुताबिक, अजब सिंह कुशवाह सुमावली से कुलदीप सिकरवार की जगह लेंगे। बड़नगर से राजेंद्र सिंह सोलंकी की जगह मुरली मोरवाल को, पिपरिया से गुरु चरण खरे की जगह वीरेंद्र बेलवंशी को और जावरा से हिम्मत श्रीमाल की जगह वीरेंद्र सिंह सोलंकी को मैदान में उतारा जाएगा। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए 85 उम्मीदवारों की अपनी दूसरी सूची की घोषणा की और पहले घोषित उम्मीदवारों में से तीन को बदल दिया। इसके साथ, कांग्रेस ने 17 नवंबर को होने वाले 230 सदस्यीय विधानसभा चुनाव के लिए एक को छोड़कर सभी उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। कांग्रेस ने रविवार को राज्य के लिए 144 उम्मीदवारों की अपनी पहली सूची जारी की थी। कांग्रेस ने दतिया विधानसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बदल कर अवधेश नायक की जगह राजेंद्र भारती को मैदान में उतारा है। वह बीजेपी प्रत्याशी और गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे। पूर्व विधायक भारती पिछला चुनाव मामूली अंतर से हार गए थे। टेलीविजन धारावाहिक में भगवान हनुमान की भूमिका निभाने वाले अभिनेता विक्रम मस्ताल को कांग्रेस ने प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ सीहोर जिले के बुधनी विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतारा है। कांग्रेस की मध्य प्रदेश इकाई के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को उनके गृह क्षेत्र छिंदवाड़ा से उम्मीदवार बनाया गया है, जहां से वह वर्तमान में विधायक हैं।

भरतपुर मामले पर सियासत तेज, भाजपा ने कांग्रेस पर उठाए सवाल

घटना वाले गांव में जाएं प्रियंका गांधी: संबित पात्रा

नईदिल्ली। राजस्थान के भरतपुर में जमीन विवाद में मामूल झगड़े के बाद एक शख्स को तड़पा-तड़पाकर मार डाला गया। आरोपियों ने ट्रैक्टर को 8 बार आगे-पीछे करते हुए एक शख्स को बेरहमी से कुचला और मौत के घाट उतार दिया। इस को लेकर अब सियासत तेज हो गई है। भाजपा ने कांग्रेस और राज्य की गहलोत सरकार पर निशाना साधा है। भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा कि राजस्थान के भरतपुर में बयाना के बहुत ही हृदयविदारक दृश्य सुबह से ही टीवी चैनल्स पर चल रहे हैं। एक ट्रैक्टर निरपत नाम के युवक के ऊपर चढ़ जाता है और उस युवक की हत्या कर दी जाती है।

भाजपा नेता ने कहा कि ये केवल एक युवक की हत्या का विषय नहीं है बल्कि ये आज पूरे राजस्थान और अन्य सभी कांग्रेस शासित राज्यों का विषय है। बताया गया है कि आज प्रियंका वाड्रा राजस्थान पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि मैं आज भाजपा के प्रवक्ता और एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के नाते प्रियंका वाड्रा जी से मांग करता हूं कि वो सभा करने से पहले आज भरतपुर में हुई घटना के स्थल पर जाए, पीड़ित परिवार से मिले और इस विभत्स हत्या के दोषियों एवं प्रशासन पर कार्रवाई करके दिखाए।

इसके साथ ही संबित पात्रा ने कहा कि आज अशोक गहलोत ने खालिस्तान के समर्थन में बयान दिया है, राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी आज पूरे हिंदुस्तान और विश्व में हमास की समर्थक बनकर सामने आई है। इसका केवल एक ही कारण है- तुष्टिकरण। उन्होंने कहा कि अगर इन्होंने हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में अपना घोषणा पत्र लागू किया होता तो आज इन्हें खालिस्तान का समर्थन न करना पड़ता। हिमाचल प्रदेश में राहुल गांधी ने घोषणा की थी कि राज्य में कांग्रेस के सत्ता में आते ही पहली कैबिनेट बैठक में 5 लाख युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ। प्रियंका गांधी ने हिमाचल में कहा था कि हम 22 लाख महिलाओं को

1,500 रुपये प्रतिमाह मुआवजा देंगे। लेकिन कुछ नहीं हुआ।

कांग्रेस और एमएनएफ के बीच लड़ाई का फायदा उठाने की कोशिश में भाजपा

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने 7 नवंबर को होने वाले मिजोरम विधानसभा चुनाव के लिए तैयारी शुरू कर दी हैं। पार्टी इस बार किसी भी कीमत पर राज्य की सत्ता अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहती है। इसलिए पार्टी ने विधानसभा चुनावों के लिए जो रणनीति तैयार की है, उसके तहत राज्य में बड़े चेहरे बड़ी जिम्मेदारी निभाएंगे। वहीं दावेदार यह साबित करने में लगे हैं कि चुनावी मैदान में उतरकर जनता के विश्वास को हासिल करेंगे। ऐसे में अगर बीजेपी बहुमत का आंकड़ा पार करती है, तो राज्य के नेताओं के प्रदर्शन और साथ खड़े विधायकों की संख्या के आधार पर बड़ी जिम्मेदारी दिए जाने का विचार किया जाएगा। भाजपा की कोर कमेटी में यह फैसला लिया गया है कि 28 सीटों पर उम्मीदवारों के नाम का ऐलान बाद में किया जाएगा।

खेल
प्रमुख समाचार

पाकिस्तान के पास सेमीफाइनल में पहुंचने का आखिरी रास्ता

नईदिल्ली। वर्ल्ड कप में पाकिस्तान का सफर डगमगा गया है। जहां उसने 5 मैच खेले हैं जिसमें उसे तीन में हार झेलनी पड़ी है। वहीं अब उसका ये अभियान खतरे में है। टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने के चांस कम हो गए हैं। हालांकि, अभी भी टीम सेमीफाइनल में पहुंच सकती है। लेकिन उसे ये अपने दम पर हासिल नहीं हो पाएगा बल्कि उसे अब इसके लिए दूसरे पर निर्भर रहना होगा। इस समीकरण से समझें कैसे पाकिस्तान टीम सेमीफाइनल में पहुंच सकती है।

वर्ल्ड कप 2023 की पॉइंट्स टेबल में पाकिस्तान की टीम इस समय पांच मैचों में 2 जीत और 4 अंकों के साथ पांचवें स्थान पर है, लेकिन ये पांचवां स्थान ज्यादा दिन टीम के पास नहीं रहने वाला है। दरअसल, पाकिस्तान की टीम को सबसे पहले ये सुनिश्चित करना होगा कि टीम बाकी के बचे चार मैचों में जीत हासिल करे। अफगानिस्तान के खिलाफ हार झेलने के बाद पाकिस्तान का मुकाबला अब साउथ अफ्रीका, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ होगा। इनमें से तीन टीमें खतरनाक हैं।

बाबर आजम की अगुवाई वाली टीम अगर बाकी के बचे 4 मैच जीतती है तो टीम के खाते में 6 जीत के साथ 12 अंक हैं। इस दौरान टीम का नेट रन रेट काफी मायने रखेगा। टीम अच्छे खासे अंतर से जीतने में सफल होती है तो अपने दम पर सेमीफाइनल में पहुंच सकती है। हालांकि, महज जीत ही सेमीफाइनल का टिकट नहीं है बल्कि अन्य टीमों के पास 14 या इससे ज्यादा अंकों तक पहुंचने का मौका है। अगर पाकिस्तान को एक और हार मिली तो वो सेमीफाइनल के दरवाजे से लौट जाएगी। उसके लिए सेमीफाइनल की राह पूरी तरह से बंद हो सकती है। आने वाले चारों मैच पाकिस्तान के लिए बेहद कठिन हैं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 522 अंक टूटा निफ्टी 19,150 के नीचे

नईदिल्ली। ग्लोबल मार्केट से मिले कमजोर रुझानों के बीच हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन यानी बुधवार को भारी बिकवाली से घरेलू शेयर बाजार लगातार पांचवें दिन लाल निशान पर बंद हुए। आज दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में भारी गिरावट दर्ज की गई। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 523 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 160 अंक की गिरावट दर्ज की गई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 522.82 अंक यानी 0.81 फीसदी की गिरावट के साथ 64,049.06 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 64,787.08 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 63,912.16 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में भी 159.60 अंक यानी 0.83 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 19,122.15 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 19,347.30 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 19,074.15 तक आया।

डब्ल्यूटीओ की दो दिवसीय बैठक में कई मुद्दों पर हुई चर्चा

नईदिल्ली। जिनेवा में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्य देशों के वरिष्ठ अधिकारियों की दो दिवसीय बैठक में विवाद निपटान सुधार, कृषि, मत्स्य पालन सब्सिडी और ई-वाणिज्य व्यापार पर सीमा शुल्क पर रोक जैसे मुद्दे उठाए गए। यह बैठक 24 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। भारत से वाणिज्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव पीयूष कुमार सहित वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक में हिस्सा लिया। बैठक के सारांश के अनुसार, वरिष्ठ अधिकारियों ने प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों द्वारा जिनेवा में विवाद निपटान (डीएस) सुधार पर जारी अनौपचारिक प्रक्रिया का पुरजोर समर्थन किया। यह सारांश डब्ल्यूटीओ के महानिदेशक न्गोजी ओकोन्जो-इवेला और बोत्सवाना से जनरल काउंसिल की वर्तमान प्रमुख अथालिया लेसिबा मोलोकोम्मे द्वारा तैयार किया गया।

बासमती चावल एक्सपोर्ट पर एमईपी घटा

नईदिल्ली। चावल किसानों के लिए बड़ी खबर आ रही है। केंद्र सरकार ने बासमती चावल एक्सपोर्ट पर मिनिमम एक्सपोर्ट प्राइस यानी एमईपी घटाने का फैसला किया है। सरकार के एमईपी घटाने के फैसले के बाद से अब बासमती चावल पर एमईपी घटकर 950 डॉलर प्रति मिट्रिक टन हो गया है। जो कि पहले 1,200 डॉलर प्रति मिट्रिक टन था। बता दें, इसी साल अगस्त में केंद्र सरकार ने बासमती चावल एक्सपोर्ट पर 1,200 डॉलर प्रति मिट्रिक टन का फ्लोर प्राइस तय किया था। चावल कारोबार की बात करें तो बासमती चावल एक्सपोर्ट पर फ्लोर प्राइस ज्यादा होने की वजह से किसानों और चावल इंडस्ट्री को नुकसान हो रहा था। एमईपी ज्यादा होने के चलते मेन सीजन में भी एक्सपोर्ट पर नकारात्मक असर देखने को मिला था। इससे किसानों को भुगतान में परेशानी का सामना करना पड़ा था।

जियो हर 10 सेकंड में कर सकता है एक 5जी सेल तैनात

नईदिल्ली। दूरसंचार प्रमुख कंपनी रिलायंस जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी ने कहा कि कंपनी ने भारत में 85 प्रतिशत 5जी नेटवर्क तैनात कर दिया गया है और वह हर 10 सेकंड में एक 5जी सेल तैनात करने की क्षमता रखती है। ब्रॉडबैंड स्पीड व क्वालिटी मापने वाली कंपनी ओकला द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, रिलायंस जियो के चेयरमैन ने कहा कि कंपनी ने दिसंबर 2023 की तय समय सीमा से पहले पूरे देश में 5जी नेटवर्क का विस्तार कर दिया है। आकाश अंबानी ने कहा, '' मुझे 'ट्रू 5जी रोल-आउट' की हमारी गति पर काफी गर्व है। आज हमने दिसंबर 2023 की अपनी तय समय सीमा से पहले पूरे देश में मजबूत ट्रू 5त्न नेटवर्क का विस्तार किया है। भारत में संपूर्ण 5त्न तैनाती का 85 प्रतिशत जियो द्वारा किया गया है। हर 10 सेकंड में एक 5जी सेल तैनात किया जा रहा है।''

युद्ध, अर्थव्यवस्था और मानवता की चुनौतियों के बीच सैन्य खर्च में बढ़ोतरी

शंकर अय्यर

पवित्र ग्रंथ बाइबिल कहती है कि अगर कोई तुम्हारे दाएं गाल पर तमाचा मारे, तो बायां गाल भी उसकी ओर कर दो।' ये शब्द कितने ही बुद्धिमानी से भरे हों, लेकिन ये मनुष्यों और राजाओं को अपनी सीमाओं के विस्तार के लिए हथियार उठाने से कभी रोक नहीं पाए। युद्धों में पैसा ही नहीं, लोगों की जिंदगियां भी खर्च हो जाती हैं। आधुनिक युद्धों की शब्दावली जिन लड़ाकू विमानों और मिसाइलों से भरी है, जरा उनके संचालन की लागत पर गौर करें। बहुचर्चित एफ-35 की बात करें, तो अमेरिकी सरकार 2,500 विमानों पर 17 खरब डॉलर खर्च करने की योजना बना रही है यानी कि प्रति विमान पर साढ़े सात करोड़ डॉलर का खर्च आएगा। जब यह उड़ रहा होगा, तब हर घंटे करीब 42 हजार डॉलर धुआं हो रहे होंगे। ज्यादा कुशल माने जाने वाले एफ-15 विमान की हर उड़ान में प्रति घंटे करीब 29 हजार डॉलर का खर्च आता है। आयरन डोम इस्त्राइल की सुरक्षा प्रणाली में कवच की तरह है। ऐसा अनुमान है कि पूरे इस्त्राइल में करीब दस आयरन डोम बैटरी हैं। हर बैटरी में 60 से 80 मिसाइलें हैं और हर मिसाइल की कीमत तकरीबन 40 हजार डॉलर है।

बीते रविवार को अमेरिकी सरकार ने अरबों डॉलर की अत्याधुनिक थाड प्रणाली भेजने की घोषणा की। बोईंग ने इस्त्राइल को 1800 जीपीएस आधारित बम किटों की शीघ्र डिलीवरी की घोषणा की, जिनमें से प्रत्येक किट की कीमत करीब 24 हजार डॉलर है। इस महीने की शुरुआत में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने पूर्वी भूमध्य सागर में 13 अरब डॉलर के विमानवाहक पोत यूएसएस गेराल्ड फोर्ड कैरियर स्ट्राइक ग्रुप की तैनाती की घोषणा की। यह ग्रुप 75 लड़ाकू जेट, रडार

और मिसाइल लॉन्चर से सुसज्जित है। एक टॉमहॉक मिसाइल की कीमत 15 लाख डॉलर और एक पैट्रियट मिसाइल की कीमत करीब 40 लाख डॉलर है।

युद्ध के हथियार वगैरह बनाने वाली कंपनियों के लिए युद्ध मुनाफे का समय होता है। यह शेयरों की कीमतों में आने वाले उतार-चढ़ाव से भी स्पष्ट होता है। सात अक्तूबर के हमलों के बाद इससे जुड़ी कंपनियों के शेयरों में उछाल देखा गया। इस क्षेत्र की शीर्ष दस कंपनियों का वर्तमान बाजार पूंजीकरण 653 अरब डॉलर है। बिजनेस रिसर्च कंपनी द्वारा जारी 2023 की वैश्विक रक्षा बाजार रिपोर्ट कहती है कि 2027 तक रक्षा बाजार का आकार बढ़कर 718 अरब डॉलर का होने की उम्मीद है।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि युद्धों की इस भारी-भरकम लागत का पैसा कहां से आता है? यह दरअसल, बहुत कुछ भू-राजनीति और घरेलू राजनीति पर निर्भर करता है। अब यूक्रेन के युद्ध को ही लें। 24 फरवरी, 2022 से अमेरिकी सरकार ने 40.4 अरब डॉलर से ज्यादा की सुरक्षा सहायता की प्रतिबद्धता जताई है, जो माल्टा और यमन जैसे देशों की संयुक्त जीडीपी के लगभग बराबर है। इस हफ्ते भी व्हाइट हाउस ने इस्त्राइल और यूक्रेन का समर्थन करने के लिए कांग्रेस से अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराने का आह्वान किया है।

पर सवाल उठता है कि आतंकवादी समूहों को धन कैसे मिल पाता है? अमेरिका और उसके सहयोगियों का मानना है कि ईरान हमास, हिजबुल्ला और हौथिस जैसे आतंकी गुटों को धन व तकनीकी मुहैया कराता है। लेकिन सवाल फिर भी बना हुआ है कि इतने प्रतिबंधों के बावजूद धन इन गुटों के पास पहुंचता कैसे है? अमेरिकी सांसद एलिजाबे वॉरेन और सौ से ज्यादा दूसरे सांसदों ने अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवान को एक पत्र लिखकर इस नई उभरती व्यवस्था की झलक दी। उनका दावा है कि अगस्त, 2021 से जून, 2023 के बीच हमास और फलस्तीनी इस्लामिक जिहाद (पीआईजे) ने क्रिप्टो में 13 करोड़ डॉलर से ज्यादा राशि जुटाने में कामयाबी हासिल की और पीआईजे ने 1.2 लाख डॉलर क्रिप्टो में हिजबुल्ला को दिए। घटनाएं बढ़ीं, तो पैसों का यह आवंटन भी बढ़ा। माना जाता है कि शीत युद्ध की समाप्ति से शांति की स्थापना हुई। लेकिन पिछले तीन दशकों में सैन्य खर्च काफी बढ़ा है।

भूपेशराज में कस्टम मिलिंग में 175 करोड़ का घोटाला: साव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सांसद अरुण साव ने कहा कि घोटालों की सरकार का एक और काला कारनामा छत्तीसगढ़ की जनता के सामने आ गया। ईडी की जांच में खुलासा हुआ है कि किसानों को कर्ज के जाल में फंसाने वाले भूपेश बघेल की कृपा से मार्कफेड के अफसरों के गिरोह ने मिलकर 175 करोड़ का चावल घोटाला कर दिया। जांच एजेंसियों की जांच में यह भंडाफोड़ हुआ है कि मार्कफेड के अफसरों ने करोड़ों की रिश्वत कमाने की साजिश रचकर यह घोटालेबाजी की। इसमें भूपेश सरकार की संलिप्तता से इंकार नहीं किया जा सकता। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि जिस अधिकारी मनोज सोनी पर भ्रष्टाचार के आरोप है राज्य सरकार ने लगातार उनका एक्सटेंशन किया है वो बने रहे इसके लिए कई आदेश निकाले है इससे यह बात पुख्ता होती है की सरकार ने कितने योजनाबद्ध तरीके से षडयंत्र पूर्वक भ्रष्टाचार किया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि ईडी जांच में पाया गया है कि खरीफ वर्ष 2021-22 तक सरकार द्वारा धान का प्रति क्विंटल 40 रुपये भुगतान किया गया।

धान की कस्टम मिलिंग के लिए दी जाने वाली रकम सरकार ने तीन गुनी बढ़ा दी। 120 रुपये प्रति क्विंटल धान का भुगतान दो किश्तों में किया गया। अफसरों ने आधी रकम मार्कफेड के एमडी मनोज सोनी के साथ मिलकर वसूल ली। घोटाले की शर्तों के तहत नकद राशि का भुगतान करने वालों का विवरण जिला विपणन अधिकारी को भेजा गया। उनके माध्यम से ब्यौरा मार्कफेड एमडी तक पहुंचा। एमडी द्वारा केवल उन्हीं के बिलों को भुगतान के लिए मंजूरी दी गई, जिन्होंने नकद राशि का भुगतान किया। विशेष भत्ता 40 रुपये से बढ़ाकर 120 रुपये क्विंटल करने के बाद प्रदेश में 500 करोड़ रुपये के भुगतान जारी किए गए, जिसमें से 175 करोड़ रुपये की रिश्वत वसूली गई। ईडी ने तलाशी में विभिन्न आपत्तिजनक दस्तावेज, डिजिटल उपकरण और 1 करोड़ की बेहिसाब नकद राशि जब्त की है। मतलब साफ है कि बाकी के 174 करोड़ रुपए घोटालाश्री की चुनावी तिजोरी में पहुंच गए। अभी तो यह ट्रेलर है। ईडी आगे की जांच कर रही है तो पूरी उम्मीद है कि वह घोटालों के सरताज तक अवश्य पहुंचेगी। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि 2100 करोड़ का शराब घोटाला, 229 करोड़ का गोबर घोटाला, 1300 करोड़ का गोठान घोटाला, 540 करोड़ का कोयला परिवहन घोटाला, रेत घोटाला, परीक्षा घोटाला, भर्ती घोटाला, तबादला घोटाला, हर जगह घोटाले ही घोटाले।

बृजमोहन और मूणत ने शुभ मुहूर्त में जमा किया अपना नामांकन

■ दोनों नेताओं ने कांग्रेस पर जमकर साधा निशाना

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के दूसरे चरण के लिए रायपुर के दो विधानसभा सीटों से भाजपा प्रत्याशियों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर नामांकन दाखिल किया. रायपुर दक्षिण से बृजमोहन अग्रवाल और पश्चिम से राजेश मूणत प्रत्याशी हैं. दोनों नेताओं ने शुभ मुहूर्त में अपना नामांकन जमा किया. इस दौरान बड़ी संख्या में समर्थक भी मौजूद रहे. बृजमोहन अग्रवाल और राजेश मूणत रायपुर भाजपा के अन्य विधानसभा सीटों के प्रत्याशियों के साथ मिलकर 30 अक्टूबर को शक्ति प्रदर्शन करते हुए नामांकन दाखिल करेंगे. वहीं नामांकन दाखिल के दौरान बृजमोहन अग्रवाल और राजेश मूणत ने कांग्रेस पर जमकर निशाना भी साधा.

पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि राजेश मूणत, हमने सभी ने मूहर्त के हिसाब से नामांकन जमा किया है और 30 तारीख को रायपुर जिले के सातों प्रत्याशी जुलूस के साथ में नामांकन दाखिल करेंगे. कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत के बयान पर बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि रबड़ी और रेवड़ी दोनों बांटने से काम नहीं चलेगा जो लोगों की मूलभूत सुविधाएं हैं. सड़क, पानी, नाली और प्रधानमंत्री आवास जैसा गरीब व्यक्ति का सपना होता है उसका एक अपना घर हो. छत्तीसगढ़ में 16 लाख ग्रामीणों और 5 लाख शहरी लोगों के आवास छीनने का पाप किसी ने किया है तो वो भूपेश बघेल और कांग्रेस पार्टी ने किया है. अगर गरीबों का आवास रबड़ी है तो यह कांग्रेस को मुबारक हो, उनको पीने के लिए पानी सड़क, अस्पताल स्कूल इसको वह रबड़ी मानते हैं. ये लोग राजनीति कर रहे हैं. वह गरीब कल्याण की राजनीति करती हैं. गरीब की कोई जाति नहीं होती. गरीब सभी जातियों में होते हैं, उनके कल्याण का काम करना बीजेपी करती है.

पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने कहा कि हिंदू समाज में हम शुभ मुहूर्त को मानते हैं, अपनी संस्कृति शुभ काम करने के पहले पूजा पाठ करके देवी-देवताओं के दर्शन करने के बाद आज नामांकन दाखिल किया. 17 को मतदान होना है प्रत्याशियों की फॉर्मेलिटी हमने पूरी की, शहर के विकास में हम जनता का सहयोग मांगने निकले हैं. रायपुर आपका अपना है शहर को 5 साल में सरकार ने छला हैं. यहां के लोगों को अलग किया है, इंफ्रास्ट्रक्चर खत्म हो चुका है ढंग से पुताई, मेंटेनेंस तक नहीं कर पा रहे, क्राइम बढ़ चुका है. गांजा, चरस, अफीम खुले आम बिक रही है. अपना रायपुर है इसे विकसित करना हमारा उद्देश्य है. पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में जितना बचे हुए कामों को पूर्ण करना, गरीब परिवारों को पट्टा के साथ पक्का मकान देना, 24 घंटे पर जल की व्यवस्था, पानी का विस्तार हर गली मोहल्ले तक पहुंचे, सुगम यातायात हो गार्डन अच्छे हो, ओपन जिम हो, एजुकेशन हब जो अधूरा है, चौपाटी अधूरा था उसे पूरा करना यही मेरा टारगेट रहेगा.

आगे मूणत ने कहा कि 5 साल में इस सरकार ने केवल फोटो लगाने का काम किया. एक भी ऐसा काम नहीं जो मुख्यमंत्री ने स्वयं भूमि पूजन किया हो ना कोई बाईपास बनाना, न फ्लाई ओवर बना, आत्मानंद स्कूल पुरानी बिल्डिंग में रंगी पुताई करके कुछ नहीं होता, अच्छे टीचर्स तक नहीं पहुंच पाए. इसलिए जुमले बाजी फोटो लगाने से नहीं होता. जनता के बीच जो काम किया, वह दिख रहे हैं इस काम को आगे बढ़ाने के लिए जनता का सहयोग मांग रहे हैं.

डॉ. रमन ने अडानी को सौंपा खदान और खनिज संपदा : सीएम बघेल

बालोद। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने बालोद में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए भाजपा और पूर्व सीएम डॉ रमन सिंह पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि डॉ रमन सिंह ने 15 साल तक छत्तीसगढ़ की जनता को झूठे दावों में भुलाये रखा और अडानी को राज्य की खनिज संपदा और खदानों को सौंप दिया। आज भी चुनाव भाजपा नहीं बल्कि डॉ रमन सिंह लड़ रहे है और डॉ रमन सिंह अडानी के इशारों पर काम कर रहे है क्योंकि उनका पूर्व ओएसडी अमन सिंह अभी अडानी की नौकरी कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने भाजपा नेताओं पर तंज कसते हुए सवाल पूछा कि आम जनता को मिलने वाली सौगातों को भाजपाई रेवड़ी कहते है तो फिर अडानी को जो दिया जा रहा है क्या वो रबड़ी है?

किसानों के बोनस पर मोदी सरकार ने लगाया अड़ंगा

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने किसानों को बोनस और 2100 रुपये समर्थन मूल्य को लेकर वादाखिलाफी करने के मुद्दे पर भाजपा और रमन सिंह को घेरा। उन्होंने कहा कि किसानों को 2500 रु के समर्थन मूल्य और बोनस पर केंद्र सरकार मनमाना रोक लगा रही है। केंद्र सरकार ने चावल नहीं खरीदा उसके बावजूद हम केंद्र सरकार के सामने झुके नहीं और धान को बाजार में बेच दिया लेकिन किसानों को घाटा नहीं होने दिया। हमने पीएम से किसानों के बोनस पर लगी रोक हटाने को पत्र लिखा है अगर केंद्र सरकार रोक हटाती है तो हमारी सरकार किसानों को बोनस भी देगी।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि हमारे नेता श्री राहुल गांधी जी ने किसानों की कर्जमाफ़ी और 2500 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी करने समेत कई घोषणाएं की थी जिस पर प्रदेश की जनता ने भरोसा जताते हुए कांग्रेस को ऐतिहासिक बहुमत देकर कांग्रेस की सरकार बनाई थी। जैसे ही हमारी सरकार का गठन हुआ हमने मात्र 2 घंटे के भीतर कर्जमाफ़ी कर दिया और किसानों को 2500 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान की समर्थन मूल्य पर खरीदी करने के लिए राजीव गांधी किसान न्याय योजना शुरू की।

40 स्टार प्रचारकों की सभा तय

रायपुर. छत्तीसगढ़ में होने वाले चुनाव के लिए बीजेपी ने आक्रामक प्रचार अभियान की रणनीति तैयार की है. 40 स्टार प्रचारकों की सभाएं लगभग तय कर दी गई है. बताया जा रहा है कि करीब 60 चुनावी सभाएं होंगी, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा से लेकर कई केंद्रीय मंत्री और बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल होंगे. पहले चरण के चुनावी मुकाबले के लिए नामांकन वापसी की प्रक्रिया खत्म हो गई है. पहले चरण का मतदान 7 नवंबर को होना है, जाहिर है कि इससे पहले भी कई महत्वपूर्ण नेताओं की चुनावी सभा आयोजित होगी.

सूत्रों के मुताबिक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की करीब 16 सभाएं आयोजित करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है. पीएमओ से मुहर लगने के बाद स्थिति स्पष्ट होगी कि मोदी की कितनी सभाएं छत्तीसगढ़ में होगी. बताया जा रहा है कि पार्टी अध्यक्ष जे पी नड्डा छत्तीसगढ़ में तीन दिनों का कैंप कर सकते हैं. नड्डा का रायपुर में रोड शो कराए जाने की तैयारी की जा रही है. साथ ही कुछ प्रमुख लोगों से मेल मुलाकात भी कराया जा सकता है. इसी तरह केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की करीब 9 चुनावी सभाएं कराई जा सकती है.

योगी आदित्यनाथ की सबसे ज्यादा डिमांड

बीजेपी के स्टार प्रचारक और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सबसे ज्यादा डिमांड की जा रही है. लगभग सभी विधानसभा के बीजेपी प्रत्याशी चाहते हैं कि योगी आदित्यनाथ उनके पक्ष में प्रचार करने आ जाएं. अब तक करीब आधा दर्जन सभाएं तय होने की खबर है, जिसमें कवर्धा की सीट भी शामिल है. इसी तरह असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा की भी डिमांड उठ रही है. केंद्रीय मंत्रियों में स्मृति ईरानी, अनुराग सिंह ठाकुर जैसे चेहरों की ज्यादा से ज्यादा सभाएं आयोजित कराने की तैयारी पर चर्चा चल रही है. प्रदेश चुनाव प्रभारी ओम माथुर और सह प्रभारी नितिन नबीन रायपुर में हैं. खबर है कि 30 अक्टूबर से स्टार प्रचारकों की मैराथन सभाएं शुरू हो जाएंगी.

टिकट वितरण के बाद एकजुटता का संदेश

■ आज सभी प्रत्याशी एक साथ करेंगे नामांकन

बिलासपुर। विधानसभा चुनाव को लेकर अब सियासी गर्माहट अपने चरम पर है। हर सीट पर प्रत्याशी तय होने के बाद मुख्य विपक्षी दल बीजेपी ने भी कमर कस ली है। बिलासपुर के प्रत्याशी अमर अग्रवाल व बिल्हा सीट के प्रत्याशी धरमलाल कौशिक ने संयुक्त रूप से आज एक प्रेसवार्ता की। प्रेसवार्ता के दौरान प्रत्याशियों ने कल संयुक्त रूप से नामांकन दाखिल करने और एक विशाल रैली आयोजित करने की बात कही।

बिल्हा सीट प्रत्याशी धरमलाल कौशिक ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि कल जिले के सभी छह विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशी एक साथ नामांकन दाखिल करेंगे और इस बीच रैली के दौरान असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्वशर्मा का संबोधन भी होगा। जानकारों की मानें तो बीजेपी एक साथ नामांकन रैली से कहीं ना कहीं एकजुटता का संदेश देना चाहती है। अपको बता दें कि जिले के बेलतरा विधानसभा क्षेत्र से सुशांत शुक्ला के रूप में आज ही बीजेपी का टिकट फाइनल हुआ है। अब सत्तारूढ़ कांग्रेस और मुख्य विपक्षी दल बीजेपी के बीच सभी सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान हो चुका है। अब दोनों ही पार्टी यह चाहेंगी कि टिकट वितरण को लेकर फैले असंतोष को एकजुटता का संदेश देना चाहती हैं।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

आने वाले 5 सालों में 15 लाख लोगों को रोजगार देगी: बैज

रायपुर। इस राज्य में एक बार फिर से कांग्रेस की सरकार बन रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि चुनाव में कांग्रेस सरकार के काम और जनकल्याणकारी योजनाएं कांग्रेस सरकार का ब्रह्मास्त्र होगी। भाजपा के पास कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए कोई मुद्दा नहीं है। भाजपा हवाहवाई और काल्पनिक मुद्दों पर प्रदेश में राजनीति करना चाह रही जिसके कारण वह जनता से और दूर होते जा रही है। 2018 के विधानसभा चुनाव में दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाने के बाद कांग्रेस के प्रति जनता का भरोसा और बढ़ते गया, 5 उपचुनाव, नगरीय निकाय चुनाव, पंचायत चुनावों में जनता ने भाजपा को नकार दिया है। भाजपा कार्यकर्ताओं में हताशा है, कांग्रेस कार्यकर्ताओं में उत्साह है। इस चुनाव में छत्तीसगढ़ के किसान, युवा, आम आदमी की और बेहतरी तथा पिछले पांच सालों में किये गये कामों को आगे बढ़ाना कांग्रेस का लक्ष्य है। कांग्रेस की सरकार बनने पर हर वर्ग को सुविधा पहुंचाने योजनाओं का विस्तारीकरण किया जायेगा तथा लोगों की उन्नति के लिये योजनायें बनाई जायेगी तथा नई योजनाओं का विस्तारीकरण भी होगा। कांग्रेस हर किसान का एक बार फिर से कर्जा माफ करेगी। प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान की खरीदी की जायेगी। 17.5 लाख आवासहीनों के लिये कांग्रेस की सरकार मकान बनायेगी।

ईडी की छापेमारी राजनैतिक माहौल दूषित करने के लिये: शुक्ला

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा ने अपने सत्ता बल का दुरुपयोग कर केंद्रीय जांच एजेंसियों को भाजपा का मोर्चा, संगठन, बना दिया है। इसीलिये भाजपा की प्रमुख अनुषांगिक संगठन ईडी मोर्चा ने अपना चुनावी काम शुरू कर दिया है। चुनाव में भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस की लोकप्रियता का राजनैतिक रूप से मुकाबला नहीं कर पा रही है तो ईडी की छापेमारी करवा रही है। आज तक छत्तीसगढ़ में

ईडी ने जितनी भी कार्यवाहियां की चाहे कथित शराब घोटाला हो या कोल घोटाला हो सब में ईडी ने केवल काल्पनिक आंकड़े जारी किया किसी भी आरोप का ईडी के पास कोई प्रमाण नहीं था सिवाय काल्पनिक आंकड़ो के। ईडी के द्वारा कुछ राइस मिलर्स और व्यापारियों पर छापा मारा गया है, ईडी द्वारा छत्तीसगढ़ में कभी कांग्रेस नेताओं पर, कभी ट्रांसपोर्टर पर, कभी अधिकारियों पर और अब राइस मिलर एवं व्यापारियों पर छापे की कार्यवाही के द्वारा छत्तीसगढ़ में भय और भ्रम का माहौल बनाने का दुष्प्रयास किया जा रहा है, ईडी की कार्यवाही हमेशा से सवालो के घेरे में रही है। सुप्रीम कोर्ट ने ईडी द्वारा छत्तीसगढ़ में दुर्भावना पूर्वक कार्यवाही पर तीखी टिप्पणी करते हुये कहा था कि- ईडी अपने कामकाज में पारदर्शी और निष्पक्ष रहें, प्रतिशोधी ना बने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ईडी के खिलाफ दी गई लगातार टिप्पणियों से यह पूरी तरह स्पष्ट है कि अपने राजनैतिक वजूद को बचाने भाजपा ईडी का दुरुपयोग कर राज्य सरकार की छवि खराब करने में लगी है।

महात्मा गांधी की तरह कार्टून भूपेश का बनाया: ठाकुर

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने भाजपा के अधिकृत ट्विटर हैंडल में पिछड़ा वर्ग को रावण बताकर वध करने वाले पोस्ट की निंदा करते हुए कहा कि भाजपा के नेता लगातार ओबीसी वर्ग के नेता के खिलाफ अमर्यादित टिप्पणी कर रहे हैं स्तरहीन राजनीति कर रहे हैं और प्रदेश के ओबीसी वर्ग को अपमानित कर रहे हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की कार्टून तस्वीर बनाकर भाजपा उस पर तीर से

हमला कर रही है क्या बीजेपी भूपेश बघेल के खिलाफ कोई गंभीर षड्यंत्र रच रही है? 1945 में भी महात्मा गांधी की इसी प्रकार से कार्टून तस्वीर बनाया गया था तस्वीर में नाथूराम गोडसे तीर धनुष लेकर हमला कर रहे थे।1948 में बापू की हत्या नाथूराम गोडसे ने किया था। रमन सरकार के दौरान झीरम घाटी नक्सली षड्यंत्र हत्याकांड हुआ था जिसमें कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की शहादत हुई थी सुरक्षा के जवानों की शहादत हुई थी भाजपा हमेशा षड्यंत्र कर राजनीति करती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सामाजिक बुराई छुआछूत को खत्म करने अभियान चलाया सभी वर्गों को उसका अधिकार देने आवाज उठाई इसके खिलाफ उस दौर में आरएसएस से जुड़े हुए लोग थे आज मुख्यमंत्री भूपेश बघेल प्रदेश के एसटी एससी ओबीसी वर्ग के हक अधिकार की आवाज उठा रहे जनसंख्या के आधार पर उन्हें कानूनी अधिकार देने की बात कर रहे हैं।

धान खरीदी और कस्टम मिलिंग पर झूठ फ़ैला रहे हैं भाजपाई: वर्मा

रायपुर। कस्टम मिलिंग को लेकर भारतीय जनता पार्टी के आरोप पर पलटवार करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि अरुण साव को रमन सरकार के दौरान किए गए धान और नान के पाप याद आ रहे हैं। दुनियां का सबसे बड़ा पीडीएस घोटाला रमन सिंह के कार्यकाल में हुआ, जिसमें 21 लाख फर्जी राशन कार्ड बनाकर गरीबों के राशन भाजपाई खा गए। चावल वाले बाबा का मुखौटा लगाकर गरीबों का राशन चोरी करते रहे,

36 हजार करोड़ की डकैती की। भाजपा के नेता किस नैतिकता से आरोप लगा रहे हैं?प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भूपेश बघेल सरकार की उपलब्धियों से विचलित होकर भाजपा नेता कस्टम मिलिंग को लेकर झूठ बोल रहे हैं। हकीकत यह है कि रमन सरकार के दौरान किसान और किसानों से खरीदे धान का अनादर किया जाता रहा। भूपेश सरकार ने तो धान खरीदी फड़ में चबूतरा बनाया, शेड की व्यवस्था की, अन्नदाता के परिश्रम से उपजाए अन्न को सड़ने से बचाने की समुचित व्यवस्था की। भ्रष्टाचार, कुशासन और वादाखिलाफ़ी भाजपा का चरित्र है। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने किसानों को अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा है। अब चुनावी लाभ के लिए अरुण साव सहित तमाम भाजपाई गलत बयानी कर रहे हैं।प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेन्द्र वर्मा ने कहा कि रमन सरकार के दौरान छत्तीसगढ़ में समर्थन मूल्य में खरीदे गये धान 2-2 साल तक खुले में पड़े सड़ते रहते थे।

कांग्रेस सभापति ने थामा भाजपा का दामन

बिलासपुर। कांग्रेस नेत्री अंबालिका साहू ने पार्टी से इस्तीफा देने के बाद भाजपा में प्रवेश ले लिया है. उन्होंने भाजपा प्रभारी ओम माथुर से दिल्ली में मुलाकात कर भाजपा की सदस्यता ली है. कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद अंबालिका साहू ने कहा कि 20 साल से पार्टी में कड़ी मेहनत करती आ रही हैं, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दी. जिसके नाराज होने के बाद उन्होंने भाजपा का दामन थामा है. बता दें कि अंबालिका साहू वर्तमान में श्रम कल्याण मंडल छग शासन की सदस्य और मुंगेली जिले से जिला पंचायत सभापति हैं. अंबालिका साहू कांग्रेस से बिल्हा विधानसभा के लिए टिकट की दावेदारी कर रही थी. वे छत्तीसगढ़ श्रम कल्याण बोर्ड की सदस्य भी हैं, लेकिन जब कांग्रेस पार्टी ने उन्हें 2023 के विधानसभा में टिकट नहीं दिया तो शनिवार को पार्टी से इस्तीफा दे दीं. इस्तीफे के बाद अंबालिका साहू ने बीजेपी ज्वाइन कर लिया है. अंबालिका साहू के बीजेपी में शामिल होते ही राजनितिक गलियारे में हड़कंप मंच गया है.

फर्स्ट टाइम वोटर मैराथन करवाएगी कांग्रेस

■ रायपुर में 100 विनर्स से मिलेंगे सीएम भूपेश, कन्हैया कुमार होंगे आयोजन में शामिल

रायपुर। रायपुर में पहली वोट करने वालों युवाओं को साधने के लिए कांग्रेस मैराथन कराने जा रही है। फर्स्ट टाइम वोटर मैराथन नाम से यह आयोजन 30 अक्टूबर को होगा। जिसमें 18 से 25 साल तक के युवा भाग ले सकेंगे। मैराथन तेलीबांधा तालाब से सुबह 7 बजे शुरू होगी और घड़ी चौक होते हुए गांधी मैदान तक जाएगी। मैराथन में मुख्यमंत्री भूपेश

बघेल, कन्हैया कुमार और छत्तीसगढ़ के स्पोर्ट्स इन्फ्लूएंसर शामिल होंगे।

मैराथन में प्रथम 100 विजेताओं से सीएम भूपेश बघेल मुलाकात करेंगे। कांग्रेस ने 2023 छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में पहली बार वोट देने वाले लोगों की संख्या लगभग 18 लाख है। कांग्रेस पार्टी का फोकस इन्हीं 18 लाख वोटर्स पर है। नव वोटर्स को पार्टी के साथ जोड़ने और कांग्रेस को वोट डालने के लिए पार्टी कई तरह के अभियान भी चला रही है।

ऐसे होगा रजिस्ट्रेशन

मैराथन में रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से किया जा सकता है। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन फॉर्म लिंक और क्यूआर कोड के जरिये किया जा सकता है और ऑफलाइन फॉर्म के जरिए भी रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है। जिसको पार्टी के कार्यकर्ता फर्स्ट टाइम वोटर्स के बीच में ले जा रहे है।

प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने बताया कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की सरकार ने 5 साल में युवाओं के लिये राजीव युवा मितान के 13 हजार 242 क्लब बनाए और 132 करोड़ की राशि दी गई। 44 हजार शासकीय पदों पर नौकरी दी गयी।

कांग्रेस ने कस्टम मिलिंग भ्रष्टाचार की जांच के लिये मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

रायपुर। ज्ञापन में कहा गया है कि वर्ष 2022 में राज्य सरकार में धान की कस्टम मिलिंग की दरें 30 रू. प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 120 रू. प्रति क्विंटल की थी। जिससे यह लाभ हुआ था कि पूर्ववर्ती भाजपा शासन काल में जहां 60-70 लाख टन धान खरीदी होने पर उसकी मिलिंग में दो-दो साल लग जाते थे। जिससे सरकार को सैकड़ो करोड़ की क्षति प्रतिवर्ष होती थी। मिलिंग चार्जेस बढ़ाने से यह फायदा हुआ की पिछले वर्ष खरीदा गया 107 लाख टन धान बारिश के पहले ही उठ गया, जिससे सरकार को लगभग 2,000 करोड़ की बचत हुई थी।

कुछ जिलों से यह शिकायत प्राप्त हो

रहा है कि मार्कफेड के जिला स्तर एवं राज्य स्तर के अधिकारियों द्वारा राइस मिलर्स से प्रति क्विंटल धान पर 20 रू की रिश्वत की राशि ली गयी है, जो कस्टम मिलिंग के धान के बिल पास कराने के एवज में ली गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि राज्य सकरार की उपलब्धियों से विचलित होकर भाजपा नेताओं ने झूठी शिकायतें की है। फिर भी यह बेहतर होगा की प्रकरण की गंभीरता पूर्वक जांच यथाशीघ्र करायी जाये ताकि भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतों की सच्चाई सामने आ सकें। यदि शिकायतें सही पायीं जाती है तो दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाये ताकि इसके बाद कोई अधिकारी भ्रष्टाचार करके सरकार की छवि खराब न कर सकें। ज्ञापन सौंपने वालों में प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला, वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा, संयुक्त महासचिव अजय साहू, प्रवक्ता नितिन भंसाली, ऋषभ चंद्राकर शामिल थे।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.